अरुण राठी

एक ख़ामोश मोहब्बत की अधूरी दास्तान

तेरे नाम की दुनिया

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Arun Rathi 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7139-279-2

Cover design: Daksh
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: September 2025

समर्पण:

इस कहानी को समर्पित करता हूँ उन सभी प्रेमियों को, जो समाज की दीवारों से टकराते हैं, पर अपनी मोहब्बत को कभी झुकने नहीं देते।

उन आँखों को, जो इश्क़ में भीगती हैं, और उन हाथों को, जो साथ रहने का सपना देखते हैं, चाहे पूरा हो या अधूरा।

लेखक की बात:

"तेरे नाम की दुनिया" सिर्फ़ एक प्रेम कहानी नहीं है। यह उन अनकहे एहसासों का दस्तावेज़ है, जो अक्सर समाज की बंदिशों में दम तोड़ देते हैं।

इस उपन्यास में वीर और गौरी का सफ़र महज़ दो पात्रों की प्रेम-यात्रा नहीं, बल्कि हर उस दिल की आवाज़ है जिसने कभी जाति, धर्म या परंपरा के नाम पर अपने इश्क़ को खो दिया।

मैं चाहता था कि यह कहानी केवल शब्दों में नहीं, बल्कि हर पाठक के दिल में धड़कन बनकर जिए। अगर एक भी पाठक की आँखें नम हो गईं या दिल में सच्चे प्यार की चिंगारी जागी तो मेरा लेखन सफल होगा।

शब्द सीमित हैं, लेकिन प्रेम असीमित। यही भाव इस उपन्यास की आत्मा है।

गौरी की सुबह किसी अलार्म की आवाज़ से नहीं होती थी। वो उठती थी उस रौशनी से जो उसकी खिड़की पर आकर धीरे से कहती थी — "उठो… आज फिर अपने आप से मिलने का दिन है।"

उसका छोटा-सा कमरा एक अलग ही दुनिया था। चारदीवारी नहीं, वो तो जैसे चार पन्ने थे किसी किताब के, जिनमें रोज़ एक नया अनुभव लिखा जाता। दीवार के पास लकड़ी की एक बुकशेल्फ थी, भरी हुई इंग्लिश नॉवेल्स से। *Jojo Moyes, John Green, Jane Austen, Cecelia Ahern…* हर किताब उसके लिए कोई चेहरा थी। हर कहानी में कोई अपना, कोई अधूरा-सा जुड़ाव।

गौरी को कविताएं समझ नहीं आती थीं। जब क्लास में कोई "अग्निपथ", "वो जो शायर था", या "तू किसी रेल सी गुजरती है"

जैसी पंक्तियाँ पढ़ता — तो गौरी थोड़ा असहज हो जाती। “शब्दों की ये जटिलता मुझे उलझा देती है,” वो कहती —

“मुझे वो कहानियाँ पसंद हैं जिनमें लोग सच में मिलते हैं, बिछड़ते हैं… और कुछ पीछे छूट जाता है।”

उसे वो लाइने याद थीं, जो किसी किताब के किसी चैप्टर के बीच छिपी होती थीं। जैसे:

“You have me. Until every last star in the galaxy dies, you have me.” — Amie Kaufman

उसके लिए यही प्रेम था — सीधा, सरल, और पूरी आत्मा से जुड़ा हुआ।

गौरी लाइब्रेरी में किताब ढूँढती नहीं थी। वो बस उस कोने की ओर बढ़ती जहाँ धूप खामोशी से घुस आती थी।

वहीं बैठकर कोई भी उपन्यास उठा लेती और बिना सोचे कि किसे पढ़ना है। क्योंकि अक्सर वो कहती थी “किताबें भी हमें चुनती हैं, जैसे लोग। सही समय पर, सही जगह पर।” हर किताब के पहले पन्ने पर उसका नाम लिखा होता था ‘गौरी’ और एक तारीख। हर किताब के आखिरी पन्ने पर, कोई छोटा-सा नोट “यह कहानी अधूरी थी। जैसे मैं हूँ।” कॉलेज की चहल-पहल, दोस्ती, ग्रुप्स, झगड़े, जोक्स, सेल्फीज़, लव अफेयर्स - इन सबके बीच गौरी किसी दूसरी दुनिया से आई लड़की लगती थी। उसका कोई “ग्रुप” नहीं था। हाँ, दोस्त थे,

परिचय थे, लेकिन वो बाँधना नहीं जानती थी। वो सबके साथ हँस सकती थी, बातें कर सकती थी, लेकिन किसी के साथ एकदम अपने आप नहीं हो सकती थी। शायद इसलिए नहीं कि उसे डर था, बल्कि इसलिए क्योंकि वो जानती थी कि ज़्यादातर लोग उसकी गहराई में नहीं उतर पाएंगे।

उसकी सहेली रूपा अक्सर कहती

"गौरी, तेरे जैसे लोग बहुत अकेले रह जाते हैं।"

गौरी मुस्करा देती, और कहती

"हो सकता है। लेकिन मैं अधूरी नहीं हूँ। मैं बस तेज़ नहीं चलती।"

गौरी के दिन छोटे-छोटे पलों से बनते थे। क्लास में खिड़की की तरफ बैठना और बाहर उड़ते परिंदों को देखना, कॉफी पीते-पीते किताब में खो जाना, कभी पेड़ के नीचे अकेले बैठकर पत्तों की सरसराहट सुनना, लाइब्रेरी से बाहर निकलते हुए पुराने पन्नों की खुशबू को गहराई से लेना और कभी… खुद से धीरे-धीरे कहना

"मैं हूँ। और आज भी मैंने अपने आप को थोड़ा और समझा।"

गौरी की रातें किसी फिल्म के सीन जैसी नहीं थीं। कोई झिलमिल लाइट्स नहीं, कोई बैकग्राउंड म्यूज़िक नहीं। बस वो होती थी, उसकी किताब होती थी, और एक पीली रौशनी वाला टेबल लैम्प। उसके लिए दिन "बचने" का समय था और रातें "जीने" का। रात में वो

किसी नॉवेल के आखिरी चैप्टर तक पहुँचती, तो बहुत धीमा पढ़ती, जैसे हर शब्द को अपने भीतर रख लेना चाहती हो।

एक बार उसने अपनी डायरी में लिखा था:

"मुझे खत्म होती कहानियाँ बहुत अच्छी लगती हैं... क्योंकि उनमें कुछ रह जाता है, जो सिर्फ़ महसूस किया जा सकता है। जैसे मेरी अपनी ख़ामोशी।"

गौरी के भीतर कई सवाल थे लेकिन वो जानती थी, इनका जवाब कोई और नहीं देगा। गौरी कभी प्यार में नहीं पड़ी थी। उसने कभी किसी को पसंद करने की कोशिश नहीं की क्योंकि कोशिश से दिल नहीं जुड़ते। लेकिन फिर भी, उसने अपने भीतर किसी के लिए जगह खाली रखी थी जैसे कोई किरायेदार जो कभी आता ही नहीं, पर फिर भी उसका कमरा साफ़ रखा जाता है। अगर आप उसे देखेंगे, तो शायद आपको कुछ खास न लगे।

एक साधारण लड़की — खुले बाल, सूती दुपट्टा, किताब हाथ में, थोड़ी खोई-सी मुस्कान। लेकिन अगर आप रुक कर उसकी आँखों में देखें तो वहाँ आपको कहानियों की भीड़ मिलेगी, जिनमें कोई भी पूरी नहीं हुई। वो लड़की कविता नहीं थी, वो रोमांटिक मेटाफर नहीं थी, वो कोई खूबसूरत दृश्य नहीं थी। वो खुद में एक उपन्यास थी।

जिसके कुछ पन्ने गीले थे, कुछ सूखे, कुछ खाली और कुछ इतने गहरे... कि उन्हें पढ़ने के लिए सिर्फ़ शब्द नहीं, दिल चाहिए था।

उस शाम, गौरी ने खिड़की के बाहर देखा। सूरज ढल रहा था, लेकिन आसमान में हल्का सा नारंगी रंग अब भी बचा था। उसने अपनी पसंदीदा किताब वापस शेल्फ में रखी, और खुद से बोली: "आज की कहानी खत्म नहीं हुई, बस उसका पहला चैप्टर पूरा हुआ है। और शायद अगला अध्याय... अब किसी और से शुरू होगा।"

रात के साढ़े दस बजे गलियाँ शांत हो जाती थीं। बाहर से आती मद्धम हवा कमरे के परदों को हल्के से हिलाती, जैसे कोई बहुत धीमे बोल रहा हो "गौरी... आज फिर थोड़ी देर अपने साथ बैठो..." वो उस एकांत में सबसे ज़्यादा खुद को महसूस करती थी। उसी समय जब सारी दुनिया नींद में होती, गौरी अपने दिल की किताब खोलती जिसमें कोई इबारत नहीं होती, बस भावनाओं की छायाएँ होती थीं। कभी-कभी वो यूँ ही बैठी रहती थी। टेबल लैम्प की रोशनी में किताब खुले छोड़कर, लेकिन पढ़ती नहीं थी। उस वक़्त उसे शब्द नहीं, सिर्फ़ "साथ" चाहिए होता था।

गौरी का प्रेम अब तक कोई इंसान नहीं था। वो बस एक "अनुभूति" थी, जो कई बार उसकी आँखों में झलकती, कभी किसी कहानी के पन्ने से फिसलती, और कभी किसी अकेले पल में साँस बनकर उसके पास बैठ जाती। वो कहती थी: "मुझे नहीं पता कि वो कौन होगा, पर मुझे इतना यक़ीन है कि वो होगा... कोई, कहीं, जो शायद अभी मेरे बारे में नहीं जानता, लेकिन एक दिन... मेरी अधूरी दुनिया को पूरा कर देगा बिना बोले, बिना मांगे।"

गौरी ने अब तक उस इंसान को कभी नहीं देखा था। उसका कोई चेहरा नहीं था, कोई आवाज़ नहीं थी। लेकिन वो अक्सर उससे बातें करती थी, अपनी डायरी में, मन में, आँखों में, और कभी-कभी आँसुओं में। गौरी की नीली डायरी उसकी सबसे करीबी दोस्त थी। हर पन्ना एक रहस्य था और हर पंक्ति किसी अधूरे सपने की छाया। एक पन्ने पर लिखा था: "अगर तुम कभी मिले तो मुझे फूल मत देना, बस वो किताब ले आना जो तुम्हें लगता है, मुझे समझा सकती है।"

दूसरे पन्ने पर: "मुझे 'आई लव यू' नहीं चाहिए... मुझे बस वो चाहिए, जो पूछे 'गौरी, आज दिन कैसा बीता?' और फिर बिना बोले सुनता रहे।"

गौरी को लगता था कि उसका प्रेम जब भी आएगा, वो बहुत शोर से नहीं आएगा, ना ही किसी फिल्मी सीन की तरह। वो बस धीरे से चलेगा और एक दिन उसकी खामोशी में बैठ जाएगा। कॉलेज की दुनिया तेज़ थी। लोग जल्दी जुड़ते, जल्दी बिछड़ते। आज किसी को 'बेस्ट फ्रेंड' कहा जाता, कल उससे बात तक नहीं होती। गौरी को ये सब बहुत तेज़ लगता था। वो कहती "हर रिश्ता इंस्टेंट कॉफी जैसा क्यों हो गया है? क्या आजकल लोगों के पास किसी के साथ धीरे-धीरे जुड़ने का समय नहीं?" उसे ऐसा प्रेम चाहिए था, जो पानी की तरह उबले नहीं, बल्कि हवा की तरह बहता रहे धीरे-धीरे, गहराई तक। रातों को जब गौरी थक जाती, वो अपनी तकिया थाम कर लेट जाती, आँखें बंद कर लेती और एक ऐसी जगह पहुँचती जहाँ कोई

उसका इंतज़ार कर रहा होता। वो एक बेंच पर होती, कोई किताब पढ़ती हुई… और कोई अनजान लड़का, धीरे से पास बैठता…

कुछ नहीं कहता… बस उसका नाम लेता “गौरी…”। गौरी की आँखें खुल जातीं। दिल थोड़ा तेज़ धड़कने लगता और वो चुपचाप मुस्करा देती। क्योंकि वो जानती थी वो सपना था… लेकिन इतना सुंदर कि उसे हकीकत होने की जल्दी नहीं थी। गौरी ने ज़िंदगी से बहुत कुछ नहीं माँगा था। न डेस्टिनेशन वेडिंग, न परियों जैसी कहानियाँ, न सोशल मीडिया पर रिलेशनशिप स्टेटस। उसे चाहिए था एक रिश्ता जो उसकी किताबों से, उसकी चाय की प्याली से, और उसकी अधूरी मुस्कानों से प्यार कर सके। वो चाहती थी कि कोई उसकी अनकही बातों में अपना घर बना ले।

उस रात, जब बाहर हल्की सी ठंडी हवा चल रही थी, गौरी अपनी डायरी के एक नए पन्ने पर लिख रही थी “कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं किसी के लिए बनी हूँ और शायद वो भी मेरे लिए बना है। बस हम अब तक मिले नहीं हैं।” उसने पेन नीचे रखा, दीपक बुझाया, आँखें मूँदीं और अपने भीतर फिर से उसी ख्वाब में चली गई। गौरी को अब तक किसी ने छुआ नहीं था, लेकिन उसने अपने भीतर किसी को थामा हुआ था किसी ऐसे को जो अब तक मिला नहीं था पर एक दिन ज़रूर मिलेगा। क्योंकि कुछ प्रेम कहानियाँ पहले दिल में होती हैं, फिर ज़िंदगी में मिलती हैं।

बाहर आसमान गहराता जा रहा था। कर्ण की नगरी की सर्द दोपहरें कुछ खास होती हैं। न ज्यादा ठंडी, न ज्यादा नरम, बस ठीक वैसी, जैसी गौरी को पसंद थीं। खिड़की के बाहर हल्की बारिश की बूँदें गीली मिट्टी की खुशबू में घुलती जा रही थीं। खिड़की से आती हवा पर्दों को धीरे-धीरे हिला रही थी और कमरे में एक हल्की ठंडक भर रही थी।

कमरे के कोने में रखे छोटे से स्टडी टेबल पर उसकी किताबें बिखरी थीं, लेकिन ध्यान कहीं और था। उसने कंबल ओढ़ रखा था और एक हाथ में अपना फोन थामे बिस्तर पर टिकी हुई थी। हाथ में कॉफी का मग भी था, लेकिन अब वो लगभग ठंडी हो चुकी थी। दिनभर कॉलेज की थकान चेहरे पर छाई हुई थी, मगर आंखों में एक खालीपन था जैसे किसी अधूरी बात की तलाश हो।

गौरी को इंस्टाग्राम स्क्रॉल करना एक तरह की आदत सी हो गई थी। एक आदत जो नशे की तरह थी। बिना मतलब, बिना दिशा, मगर रोज़ की। उसने फोन अनलॉक किया और इंस्टाग्राम खोला। वही रोज़ की कहानियाँ, दोस्तों की सेल्फियाँ, किसी की पार्टी, किसी की नई ड्रेस, और कुछ 'influencer' जिनके चेहरे पर सच्चाई से ज्यादा फिल्टर हुआ करते थे।

जैसे ही उसने नोटिफिकेशन बार पर टैप किया, एक नया फॉलो रिक्वेस्ट दिखा।

"ख़ामोशी_की_ज़ुबान"।

पढ़ते ही कुछ अजीब सा हुआ। उसकी उंगलियाँ रुक गईं। दिल की धड़कन एक पल को धीमी हो गई। नाम में कुछ था। न कोई ज़्यादा बनावट, न ज़रूरत से ज़्यादा स्टाइल, लेकिन फिर भी कुछ ऐसा जो सीधे भीतर तक उतर जाए। उस नाम ने एक ही पल में उसका ध्यान अपनी ओर खींच लिया।

उसने आईडी खोलकर देखा।

कोई खास प्रोफाइल फोटो नहीं थी। बस एक धुंधली सी तस्वीर। ना ज़्यादा पोस्ट, ना ही कोई रील। फॉलोअर्स की संख्या भी कुछ खास नहीं, सिर्फ 27। मगर बायो में लिखी वो एक लाइन ने गौरी को जैसे रोक लिया।

"कुछ लफ़्ज़ अनकहे रह गए हैं…"

उसने स्क्रीन को थोड़ा और करीब कर लिया। उन सात शब्दों में जो खामोशी थी, वह गौरी को जानी-पहचानी लगी। जैसे किसी ने उसके दिल के अंदर झाँककर उसकी ही फीलिंग्स को शब्द दिए हों। पिछली रात, जब वह अपनी डायरी में कुछ लिख रही थी, तो कुछ ऐसा ही ख्याल उसके ज़ेहन में आया था, मगर वो शब्द नहीं ढूंढ पाई थी।

"अजीब है…" वह धीमे से बुदबुदाई।

आमतौर पर वह अनजान रिक्वेस्ट्स को देखती भी नहीं थी। सोशल मीडिया की भीड़ में वह खुद को जितना कम खोने दे, उतना ही बेहतर

मानती थी। मगर आज कुछ अलग था। उस नाम में, उस प्रोफाइल में, एक खामोश सा जादू था।

वह कुछ पल तक सोचती रही। कहीं यह कोई फेक अकाउंट तो नहीं? कोई छुपा हुआ मज़ाक या ट्रोलिंग का नया तरीका? लेकिन फिर भी… दिल ने कहा, "एक बार देख लेने में क्या हर्ज़ है?"

उसने 'Accept' बटन पर हल्के से टैप किया।

फिर वो कुछ देर यूं ही स्क्रीन को देखती रही। शांत, स्थिर, सोचती हुई। बाहर बारिश अब थोड़ी तेज़ हो गई थी और खिड़की से आती ठंडी हवा ने उसे हल्का सा कंपा दिया।

गौरी उठी, खिड़की बंद की, और लौटकर फिर फोन उठाया। वह खुद को समझा रही थी कि उसने यह सब बस यूँ ही किया, बस एक नाम की वजह से, मगर दिल जानता था कि कुछ था जो उस नाम में उसे खींच रहा था।

शायद यही एक छोटी सी शुरुआत थी…

शायद एक कहानी का पहला पन्ना।

या फिर… कोई भूली हुई कहानी की अगली किस्त?

कॉफी अब पूरी तरह ठंडी हो चुकी थी, मगर उसके मन के भीतर कोई गर्माहट सी फैल रही थी। एक एहसास कि किसी अनजान मोड़ पर अब उसकी ज़िन्दगी कुछ नया मोड़ लेने वाली है।

फोन अब भी उसके हाथ में था। उसने एक आखिरी बार उस प्रोफाइल को खोला, और फिर धीमे से मुस्कुरा दी।

"अगर वो सच में कुछ कहना चाहता है, तो पहला मैसेज ज़रूर आएगा…" उसने सोचा, और फिर फोन साइड में रखकर आँखें बंद कर लीं।

मगर मन अब भी वहीं अटका था।

"ख़ामोशी_की_ज़ुबान" पर।

रात अब पूरी तरह उतर चुकी थी। आसमान में बादल छंट चुके थे, मगर चाँद की रोशनी अब भी बादलों के पीछे कहीं लुकी-छुपी खेल रही थी। खिड़की से आती ठंडी हवा अब कमरे में एक अजीब-सी खामोशी भर रही थी। न सन्नाटा, न शोर, बस एक धीमा-सा एहसास। जैसे वक़्त ने कुछ पल के लिए सांस लेना छोड़ दिया हो।

गौरी अब तक सो नहीं सकी थी। कंबल में लिपटी हुई वह करवटें बदलती रही, मगर नींद उसकी पलकों से जैसे रूठ गई थी। उसके ज़ेहन में बस एक ही नाम गूंज रहा था— "ख़ामोशी_की_ज़ुबान"।

वो नाम, जो न जाने क्यों, उसके दिल में घर कर गया था। एक अजनबी जिसने न कोई चेहरा दिखाया था, न कोई कहानी सुनाई थी, लेकिन फिर भी उसके मन के गहराई तक पहुंच गया था।

फोन अब भी तकिये के नीचे था, मगर उसका मन बार-बार बेचैन हो रहा था।

"क्या उसने कोई मैसेज किया होगा?"

"क्या वो बस यूँ ही आया था, या कोई बात कहनी है उसे?"

हर सवाल उसकी नींद को और दूर करता जा रहा था।

आखिर, उसने हार मान ली।

धीरे-धीरे हाथ बढ़ाया, जैसे खुद से भी छुपाना चाह रही हो कि वह फोन देखने जा रही है। स्क्रीन ऑन की और उसी पल उसकी सांस अटक गई।

1 New Message.

दिल की धड़कन जैसे अचानक अपनी रफ्तार भूल गई हो।

उसने कांपते हाथों से नोटिफिकेशन बार खींचा।

ख़ामोशी_की_ज़ुबान: "शब्दों से ज्यादा असर कभी-कभी खामोशी करती है... क्या तुमने कभी महसूस किया है कि कुछ लोग कहे बिना भी बहुत कुछ कह जाते हैं?"

गौरी कुछ पल तक स्क्रीन को ताकती रही।

उस एक मैसेज ने जैसे उसे अंदर तक छू लिया हो।

शब्द बहुत साधारण थे, लेकिन उनमें एक ऐसी सच्चाई थी, जो अक्सर लोग नजरअंदाज़ कर देते हैं।

उसका मन बरसों पुरानी एक रात में चला गया जब वो छत पर अकेली बैठी थी, डायरी में कुछ लिखने की कोशिश कर रही थी, लेकिन शब्द नहीं मिल रहे थे। बस दिल भारी था, और आसमान की ओर देखने से थोड़ी राहत मिलती थी।

शायद उसी खामोशी को कोई समझ गया था। उसे याद आया कि स्कूल के दिनों में जब पापा की तबीयत बहुत खराब थी और वह किसी से कुछ कह भी नहीं पाई थी। बस चुपचाप रोती रही थी… तब भी तो किसी ने नहीं पूछा था कि क्या हुआ, लेकिन एक दोस्त ने चुपचाप उसके पास बैठकर उसका हाथ थामा था।

उस दिन उसने जाना था कि खामोशियाँ भी बोलती हैं।

अब वही खामोशी फिर लौट आई थी, एक अजनबी नाम के ज़रिए।

उसने धीमे से टाइप किया:

गौरी: "कभी-कभी सबसे गहरी बातें वही होती हैं, जो हम कह नहीं पाते… बस महसूस करते हैं।"

सेंड बटन दबाने के बाद उसने स्क्रीन को देखा, जैसे कोई जवाब आने की उम्मीद में टकटकी लगाए बैठी हो।

कुछ सेकंड्स तक कोई हलचल नहीं हुई।

फिर स्क्रीन के नीचे तीन डॉट्स दिखे

Typing…

उसके दिल की धड़कन फिर तेज़ हो गई।

ख़ामोशी_की_ज़ुबान: "शायद हम दोनों उन्हीं अनकही बातों के हिस्से हैं…"

गौरी का दिल हल्का सा कांपा।

वो नहीं जानती थी कि सामने कौन है, क्या है उसकी पहचान, उसकी मंशा… लेकिन उसके शब्द… वो जैसे सीधा उसकी आत्मा से बात कर रहे थे।

उसने फोन अपने सीने से लगा लिया।

कोई देखता तो कहता "तुम पागल हो रही हो किसी अनजान प्रोफाइल के लिए," लेकिन दिल की बातें सिर्फ दिल ही समझ सकता है।

उसने आंखें बंद कर लीं। पर हर बंद पलक के पीछे वही लाइन तैर रही थी "शायद हम दोनों उन्हीं अनकही बातों के हिस्से हैं…"

वो प्रोफाइल अब महज़ एक नाम नहीं था, वो एक आइना बन चुका था जिसमें गौरी अपनी खुद की परछाईं देख रही थी। एक सुकून, जो शब्दों में नहीं, एहसास में था।

बाहर हवा अब कुछ तेज़ हो चली थी। पर अब उसे सर्दी नहीं लग रही थी।

कॉफी पूरी तरह ठंडी हो चुकी थी, लेकिन उसके मन के भीतर कोई गर्माहट घर करने लगी थी।

उसने एक बार फिर से उस प्रोफाइल को खोला।

आईडी अब भी वैसी ही थी, ना कोई खास चेहरा, ना कोई भव्यता। मगर अब वो किसी रहस्य से कम नहीं लग रहा था।

कौन है ये इंसान? क्यों उसके शब्द इतने सच लगते हैं?

उसने फोन साइड में रखा, लंबी सांस ली और खुद से कहा "अगर वो सच में कुछ कहना चाहता है, तो पहला मैसेज ज़रूर आएगा... और शायद अगला भी।"

उसने आंखें बंद कर लीं, मगर मुस्कुराहट अब भी होंठों पर थी।

उस रात वह सोई नहीं थी, लेकिन जागी भी नहीं थी।

क्योंकि जब कोई दिल की गहराइयों से दस्तक देता है, तो नींद और जाग का फासला मिट जाता है....

सुबह धीरे-धीरे कमरे में उतर रही थी। सूरज की पहली किरणें खिड़की के पर्दों से छनकर दीवारों पर हल्की-सी सुनहरी छाया बुन रही थीं। गौरी की आंखें अब भी बंद थीं, लेकिन चेहरे पर एक अजीब-सी शांति थी जैसे रात ने कुछ अधूरा पूरा कर दिया हो।

मोबाइल अब भी तकिए के पास रखा हुआ था। और आज पहली बार अलार्म की ज़रूरत नहीं पड़ी थी। आंखें खुद-ब-खुद खुल गईं।

जैसे ही गौरी ने करवट ली और फोन देखा, उसके होंठों पर एक हल्की मुस्कान तैर गई।

3:48 AM – "शायद हम दोनों उन्हीं अनकही बातों के हिस्से हैं…"

उसके बाद कोई मैसेज नहीं था। लेकिन उस एक पंक्ति की गूंज अब भी उसके भीतर चल रही थी।

उसने स्क्रीन अनलॉक की, प्रोफाइल खोली। अब भी वैसा ही। मगर आज उसे वो धुंधली सी प्रोफाइल पिक्चर भी कुछ ज्यादा साफ लगी, जैसे उसमें कोई चेहरा छिपा हो जो खुद को धीरे-धीरे दिखाना चाहता हो।

कॉफी का मग अब भी वहीं रखा था। ठंडा, मगर अब एक आदत जैसा।

गौरी उठी, और धीरे से चाय बनाई। आज कॉफी नहीं, कुछ हल्का चाहती थी। चाय की खुशबू पूरे कमरे में फैल गई।

वापस आकर वह खिड़की के पास बैठ गई। आज उसकी आंखों में वो खालीपन नहीं था। उनकी जगह एक जिज्ञासा थी। एक हल्का-सा कंपन, जो नई शुरुआत से पहले मन में उठता है।

फोन हाथ में लिया, और सोचने लगी “क्या अब मुझे कुछ कहना चाहिए? या इंतजार करना चाहिए?”

फिर उसने खुद से कहा “कभी-कभी शुरुआत करने से डरना नहीं चाहिए... खासकर तब, जब सामने वाला पहले ही दिल की दीवार पर दस्तक दे चुका हो।”

उसने टाइप किया:

गौरी: “रात की खामोशी में जो कहा, वो अब भी गूंज रहा है... क्या तुम हमेशा ऐसे ही चुपचाप महसूस करवा देते हो?”

कुछ देर तक कोई जवाब नहीं आया।

वो चाय की चुस्की लेने लगी। मगर उसकी नजरें बार-बार स्क्रीन पर जातीं।

तभी...

Typing...

और फिर...

ख़ामोशी_की_ज़ुबान: “कुछ लोग सवालों के जवाब नहीं देते... वो एहसास दे जाते हैं। शायद मैं भी वैसा ही हूँ। पर आज तुमने पूछा है, तो जवाब देना जरूरी लग रहा है।”

गौरी की आंखों में हल्की सी नमी उतर आई।

उसने महसूस किया कि यह कोई साधारण चैट नहीं है। ये कोई भावनात्मक पुल है, जो दो अनजान किनारों को जोड़ रहा है।

गौरी: "और अगर मैं पूछती रहूं... हर सुबह, हर शाम... तब?"

अब कुछ पल की खामोशी।

और फिर…

ख़ामोशी_की_ज़ुबान: "तो मैं हर बार खामोशी में जवाब देता रहूंगा... जब तक तुम्हें मेरे लफ्ज़ खुद से लगने न लगें।"

गौरी कुछ पल तक उस स्क्रीन को देखती रही। फिर उसने फोन धीरे से नीचे रखा और आकाश की ओर देखा।

सूरज अब पूरी तरह निकल आया था।

आज की सुबह सिर्फ एक नई सुबह नहीं थी, ये किसी जुड़ाव की शुरुआत थी। किसी कहानी का दूसरा पन्ना, जो पहली बार बिना लिखे भी पढ़ा जा सकता था।

उसने अपने मन में एक नाम दोहराया

"ख़ामोशी_की_ज़ुबान…"

शब्दों से नहीं, एहसासों से जुड़ने वाली कहानी की शुरुआत हो चुकी थी। और गौरी अब उस सफर की यात्री बन चुकी थी।

रात की बारिश थम चुकी थी। खिड़की से टपकती बूँदें अब सिर्फ निशान छोड़ गई थीं, और उन निशानों में गौरी की यादें ठहर सी गई थीं। पिछली कुछ रातें जैसे किसी और ही ज़माने में बीती थीं, जहाँ समय की कोई सीमा नहीं थी, और बातचीत... वो तो जैसे आत्मा की भाषा बन गई थी।

गौरी अब तक बिस्तर पर बैठी थी, हाथ में वही कॉफी का मग, मगर आज कॉफी का स्वाद कुछ अलग था। जैसे हर घूंट के साथ कोई नाम जुड़ गया हो।

वीर।

हाँ, अब वो सिर्फ एक प्रोफाइल नहीं रहा था। अब उसका नाम था, उसकी आवाज़ थी, और उसकी बातों में एक ऐसी नमी थी जो गौरी की आत्मा तक उतरती जा रही थी।

उसे याद आया कि वो दिन जब बातों ही बातों में वीर ने अपना नाम बताया था।

बहुत हल्के से, किसी गहराई भरे लम्हे में...

"मुझे लोग वीर कहते हैं, मगर तुम चाहो तो बस 'वो' कह सकती हो, क्योंकि जो दिल के करीब होता है, उसे नाम की ज़रूरत नहीं होती।"

गौरी का दिल वहीं अटक गया था।

वीर… नाम में कोई शोर नहीं था, मगर उसकी बातों में एक ऐसी चुप्पी थी जो शोर से भी ज्यादा कहती थी।

इन दिनों में उन्होंने बहुत कुछ बात की थी। मौसम से लेकर किताबों तक, पसंदीदा शेर से लेकर सबसे छुपी हुई उदासियों तक। और हर बार, गौरी को ऐसा महसूस हुआ था कि वीर उसके ज़ेहन के कोनों को छू रहा है। वह कोने, जहाँ अब तक कोई पहुँच नहीं पाया था।

वीर की एक बात उसे हर बार गहराई में ले जाती थी "गौरी, तुम जब चुप होती हो, तो तुम्हारी आंखें बोलती हैं। और जब तुम बोलती हो, तब तुम्हारी खामोशी भी सुनाई देती है।"

ऐसे जुमले अब महज़ शब्द नहीं रह गए थे। वो जैसे उसकी नींद में उतरते, और जागते ही उसकी पलकों पर जमे होते।

फोन फिर से बजा।

वीर: "तुम्हें पता है, जब तुम किसी बात पर चुप हो जाती हो, मैं अपनी स्क्रीन पर तुम्हारी सांसें महसूस करता हूँ।"

गौरी की आंखें थोड़ी नम हो गईं।

ये वो जुड़ाव था जहाँ चेहरा देखे बिना, हाथ छुए बिना, कोई भीतर तक उतर सकता था।

वो धीरे-धीरे अब खुद से सवाल करने लगी थी

"क्या ये सिर्फ बातों की दुनिया है, या कुछ और भी?"

“क्या वो भी मुझे महसूस करता है, जैसे मैं उसे?”

गौरी जानती थी कि उसने किसी को चाहने की बात अब तक किसी से नहीं की थी। मगर वीर के सामने वो खुद को छुपा नहीं पाती थी।

उसने एक बार पूछा था

गौरी: “आप क्यों इतने समझदार लगते हो, जैसे आपके हर शब्द में कोई अधूरी कहानी हो?”

वीर ने जवाब दिया था

वीर: “क्योंकि अधूरी कहानियों में ही सबसे ज्यादा सच्चाई होती है... शायद मैं भी किसी अधूरी कहानी का हिस्सा हूँ, और तुम भी।”

उस जवाब के बाद गौरी देर तक कुछ नहीं कह पाई थी।

आज, इतने दिनों की बातों के बाद, वो अपने आप से एक सच्चाई स्वीकार रही थी

अब वीर एक अनजान प्रोफाइल नहीं था।

अब वह उसकी रातों का साथी, उसकी सुबह की पहली मुस्कान, और दिन भर के ख्यालों का एक नाम बन चुका था।

कमरे की दीवार पर उस पुराने कैलेंडर में तारीखें बदलती रहीं, लेकिन गौरी की दुनिया अब वीर के शब्दों के साथ ही चलने लगी थी।

कभी-कभी वो सोचा करती "अगर ये सब यूँ ही चलता रहा, तो क्या ये कहानी कभी पूरी होगी?"

"क्या एक दिन वो सामने आएगा... चेहरा लेकर, आवाज़ के साथ... और कहेगा। गौरी, मैं वही हूँ, जिसका नाम तुमने ख्वाबों में रखा था?"

उसने फोन को सीने से लगा लिया, आँखें बंद कीं और मन ही मन बुदबुदाई "अब वो अजनबी नहीं रहा... अब वो मेरा अधूरा हिस्सा बन चुका है।

रात अपने पूरे सन्नाटे में थी। बाहर हल्की-सी हवा चल रही थी, और खिड़की से आती हवा पर्दों को जैसे किसी पुराने गीत की धुन पर थिरका रही थी। गौरी की आँखों में नींद नहीं थी। कुछ दिन पहले जो रिश्ता सिर्फ कुछ अल्फ़ाज़ों तक था, वो अब हर सांस में उतरने लगा था।

वीर से हुई बातें अब उसकी दिनचर्या का हिस्सा बन गई थीं। लेकिन आज का दिन कुछ अलग था।

वीर ने लिखा था

वीर: "क्या आज मुझे तुम्हारी आवाज़ सुनने का हक़ है?"

गौरी कुछ पल तक चुप रही थी।

वो मुस्कुरा दी, और लिखा

गौरी: "अगर आवाज़ के पीछे खामोशी अब भी हो... तो हाँ।"

वीर ने सिर्फ एक इमोजी भेजा था। कोई स्टाइलिश या ज़रूरत से ज़्यादा कोशिश करता चेहरा नहीं... बस एक शांत चांद, आधा छिपा हुआ।

कुछ मिनट बाद उसका फोन बजा।

गौरी का दिल एक पल के लिए रुक-सा गया।

स्क्रीन पर नाम नहीं था। बस वही,

"ख़ामोशी_की_ज़ुबान"।

उसने फोन उठाया।

और फिर... कुछ सेकंड का गहरा सन्नाटा।

सिर्फ सांसें। दोनों तरफ से। जैसे कोई नदी दो किनारों से एक-दूसरे को देख रही हो, मगर अभी बहाव शुरू नहीं हुआ। तभी, वीर की आवाज़ आई।

"गौरी..."

एक शब्द।

मगर उस एक शब्द में ऐसी गहराई थी जैसे कोई सदी बीत गई हो। वो आवाज़ भारी थी। गहरी, धीमी, और भीतर तक उतरने वाली। जैसे

किसी पुराने वायलिन की धुन, जो एक बार छेड़ दी जाए, तो रूह में गूंज़ती रहती है।

गौरी कुछ नहीं बोली।

उसे सिर्फ सुनना था।

वीर फिर बोला “मुझे डर था कि तुम्हें मेरी आवाज़ कहीं अजनबी न लगे... लेकिन अब लग रहा है, जैसे तुम इस आवाज़ को पहले से जानती हो।”

गौरी की आँखें नम हो गईं।

वो धीमे से बोली “मैंने आपको महसूस किया था... बहुत पहले से। शायद आवाज़ अब सिर्फ एक नाम पर मोहर है।”

वीर ने कुछ पल तक कुछ नहीं कहा। फिर उसकी भारी आवाज़ में हल्की सी थरथराहट आई “गौरी... तुमने मुझे सुना है, देखा नहीं। पर मुझे ऐसा क्यों लगता है कि तुम मेरी हर कमी को पहले से जानती हो?”

गौरी ने पहली बार इतना शांत होकर कहा “क्योंकि मैं खुद भी एक अधूरी सी कहानी हूँ, और आधे लोग ही अधूरों को पूरा समझ पाते हैं।”

उसके बाद देर तक दोनों कुछ नहीं बोले।

केवल सांसें। केवल मौन।

वो मौन, जो किसी और दुनिया का हिस्सा होता है। जहाँ कोई सवाल नहीं होता, केवल एक एहसास बहता है।

वीर की आवाज़ बीच-बीच में फिर गूंजती रही। कभी कोई किस्सा, कभी कोई याद, कभी कोई शेर:

"मैं आवाज़ हूँ किसी पुराने ख़त की,

तू आँखें है एक अधूरे वक़्त की…"

गौरी को अब यह तय करने की ज़रूरत नहीं रही कि वो वीर से क्या महसूस करती है।

अब उसे बस उसकी आवाज़ सुनते रहना था। हर रोज़, हर रात।

फोन रखते वक्त वीर ने बस इतना कहा "गौरी… अब तुम मेरे हर दिन की शुरुआत हो, और हर रात की आखिरी आवाज़।"

गौरी ने धीमे से जवाब दिया "और आप… मेरी खामोशी की जुबान।"

फोन कट गया।

मगर बातचीत अब भी जारी थी… दिलों के बीच, साँसों के नीचे।

गौरी अपने कमरे में बिस्तर पर बैठी है। लाइट बंद है, बस फोन की स्क्रीन का उजाला उसके चेहरे पर पड़ रहा है। स्क्रीन पर खुला है – *Instagram:* ख़ामोशी_की_ज़ुबान’*s profile.*

गौरी की आँखें वीर की फॉलोइंग लिस्ट में अटकी हुई हैं।

गौरी(मन में): *“93… 94…* और ये *95*वीं*?* ये कौन है पूजा चौधरी*?* ये तो कल तक नहीं थी*…”*

वो फौरन उस लड़की की प्रोफाइल खोलती है। तस्वीरें, रील्स, ब्रांड शूट्स, स्टोरी में gym से selfie… और सबसे नीचे दिल चीर देने वाली बात

Liked by ख़ामोशी_की_ज़ुबान

उसका चेहरा कस कर सख्त हो जाता है। उंगलियाँ तेजी से फोन पर चलने लगती हैं और वीर को मैसेज करती है।

गौरी: “अच्छा *taste* है वीर आपका, आजकल मॉडल्स को फॉलो करना शुरू कर दिया है*?”*

वीर (typing… pause… typing…): “अरे, क्या हो गया तुझे*?* बस फ्रेंड रिक्वेस्ट आई थी, तो कर लिया फॉलो। इतना सीरियस मत हो।*”*

गौरी: ‘‘हाँ, मैं ही पागल हूँ जो हर रात आपकी फॉलोइंग गिनती हूँ… कौन सी लड़की नई जुड़ी, कितनी पोस्ट पे आपने दिल लगाया।*”*

वीर: *"गौरी प्लीज़... तूने कभी मुझसे पूछा क्या, कि मैं क्यों फॉलो करता हूँ? तुझे पता है मैं सबसे ज़्यादा किसकी प्रोफाइल देखता हूँ?"*

गोरी: *"शायद उसी पूजा की, जिसके gym वाले पोज़ पे आपने दो बार दिल भेजा था?"*

वीर अब जवाब नहीं देता। गौरी की आँखों में आँसू तैरने लगते हैं। कुछ पल बाद उसका फोन बजता है।

Veer Calling…

कॉल शुरू होती है। शुरुआत में कुछ सेकंड सन्नाटा रहता है। दोनों बस एक-दूसरे की साँसों को सुन रहे हैं।

वीर (धीरे से): "गौरी… तू रो रही है?"

गौरी (आवाज़ में काँप): "मैं क्यों रोऊँगी? मैं तो बस वही देख रही थी जो सब देख सकते हैं… आपकी नई पसंद।"

वीर: "तू जानती है मेरी पसंद क्या है… और कौन है। तू क्यों ऐसी बातें कर रही है जो तुझे भी तोड़ रही हैं और मुझे भी?"

गौरी (गुस्से से): "क्योंकि आप मुझे किसी नाम से नहीं बुलाते वीर… आप मुझे 'exclusive' नहीं बनाते। आप मुझे प्यार करते है या बस DM में बात करने वाली एक और लड़की हूँ मैं भी?"

वीर: "गौरी…"

गौरी (बीच में काटते हुए): “आपके लिए follow करना एक बटन है, मेरे लिए किसी और के करीब आपको देखना एक ज़हर है। आप किसी और लड़की की पोस्ट पर मुस्कुराते हो, तो मेरी रातें जागती हैं।”

वीर खामोश हो जाता है। दूसरी ओर से सिर्फ़ गौरी की सुबकती साँसें सुनाई देती हैं।

वीर (धीरे और भावुक स्वर में): “गौरी… तेरे बिना कुछ भी अच्छा नहीं लगता। वो follow बस एक आदत थी, अब नहीं होगी। मैं तुझसे कुछ नहीं छिपाना चाहता।”

गौरी: “तो साबित करो… उस लड़की को unfollow करो। और नहीं, सिर्फ उसे नहीं, उस आदत को भी, जो आपको मुझसे दूर ले जाती है।”

वीर कुछ देर चुप रहता है। फिर एक हल्की सी क्लिक की आवाज़ आती है। गौरी के फोन पर एक notification: “ख़ामोशी_की_ज़ुबान unfollowed पूजा चौधरी.”

वीर: “अब कहो, ये दिल तेरा है या नहीं?”

गौरी (धीरे से मुस्कुराकर): “ये दिल मेरा है… लेकिन इसकी जान आप हो। बस किसी और को देखेगा तो ये धड़कना छोड़ देगा।”

वीर: “तो कसम मेरी… अब मेरी नजरें भी तुझसे वफ़ा करेंगी।”

दोनों के बीच सन्नाटा फैल जाता है, मगर अब ये सन्नाटा सुकून का है। एक ऐसा मौन जिसमें जलन, प्यार और सच्चाई एक-दूसरे से लिपट कर सो गए हैं।

वीर: "तू मेरी दुनिया है गौरी... और अब से मेरी फॉलोइंग सिर्फ़ तुझसे होगी, हर जन्म, हर प्लेटफॉर्म पर।"

शाम ढल रही थी। गौरी के कमरे की खिड़की से सुनहरी धूप का आख़िरी टुकड़ा पर्दों से झाँक रहा था। सामने रखे फोन पर बार-बार उसकी उंगलियाँ स्क्रॉल कर रही थीं, मगर मन कुछ और सोच रहा था। वीर की आज दिनभर कोई लंबी बात नहीं हुई थी। बस छोटे-छोटे मैसेज:

वीर: "आज थोड़ा बिज़ी हूँ ऑफिस में..."

फिर एक घंटे बाद

"थोड़ा थका हुआ हूँ, लेकिन शाम को बात करेंगे ज़रूर..."

गौरी मुस्कुरा दी थी। अब तो आदत सी हो गई थी वीर की बातों की।

शाम के करीब साढ़े चार बजे फोन की स्क्रीन एक पल को चमकी

वीर Video Calling…

गौरी का दिल धक से रह गया।

वीडियो कॉल?

उसने एक पल के लिए खुद को शीशे में देखा, बाल ठीक किए, होंठों पर हल्की-सी मुस्कान लाई… फिर गहरी सांस लेकर कॉल उठा लिया।

स्क्रीन धीरे-धीरे खुली।

और फिर, वो सामने था।

वीर।

सफेद शर्ट पहने, ऑफिस में बैठा। बैकग्राउंड में हल्की रोशनी और दीवार पर लगी एक घड़ी टिक-टिक कर रही थी। उसके चेहरे पर थकान के हल्के निशान थे, लेकिन आँखों में वही गहराई, जैसे किसी किताब के सबसे पुराने पन्ने में छिपी इबारत।

गौरी कुछ बोल नहीं पाई।

वीर ने हल्की मुस्कान के साथ कहा "तो… यही हो तुम।"

उसकी आवाज़ में अब कोई पर्दा नहीं था, कोई बनावटीपन नहीं। बस एक सच्ची सी स्वीकृति।

गौरी ने धीमे से सिर झुकाया और मुस्कुराई "और आप… ठीक वैसे ही निकले, जैसे लिखते हो।"

वीर हँस पड़ा। एक हल्की सी, थकी हुई लेकिन सच्ची हँसी।

"मतलब थके हुए?"

“नहीं… मतलब, असली।” गौरी ने जवाब दिया।

वीर ने अपनी कोहनी टेबल पर टिकाई और बोला “मैंने कभी सोचा नहीं था कि तुम इतनी शांत लगोगी। लिखते समय तुम गहराई में जाती हो, पर सामने आकर… जैसे कोई गीत हो जो सिर्फ दिल में सुना जाए।”

गौरी की पलकों ने जवाब दिया।

स्क्रीन पर दोनों कुछ पल तक बस एक-दूसरे को देखते रहे। किसी ने जल्दी नहीं की बोलने की। जैसे यह पहली मुलाक़ात नहीं, कोई अधूरी मुलाक़ात का दूसरा हिस्सा हो।

वीर ने फिर कहा: “माफ़ करना… ऑफिस से सीधे कॉल कर रहा हूँ। ये चेहरा थोड़ा मैनेजमेंट वाला लग रहा होगा।”

“नहीं…” गौरी बोली, “इसमें भी एक अलग वीर है… थोड़ा थका हुआ, लेकिन फिर भी सच्चा।”

वीर उसकी बात पर ठहर गया। फिर उसकी आँखों में कुछ डूबने सा लगा।

“गौरी, तुम्हें देखकर ऐसा लगता है जैसे किसी पुराने खत को खोल रहा हूँ… जिसकी स्याही थोड़ी सी फीकी हो गई हो, लेकिन हर शब्द अब भी दिल पर लिखा है।”

गौरी की आँखें कुछ पल को नम हो आईं।

उसने धीरे से कहा "और आपको देखकर लगता है, जैसे कोई लंबी चुप्पी पहली बार सुनाई दी हो।"

वीर ने मुस्कुराकर पूछा "क्या मैं ठीक से दिख रहा हूँ?"

गौरी ने सिर हिलाकर कहा "हां, इतने दिन जिन ख्यालों में देखा था, उनसे थोड़ा बेहतर।"

वीर थोड़ा झेंप गया। उसने अपनी घड़ी की तरफ देखा और बोला "बस दस मिनट का ब्रेक है... लेकिन आज ये दस मिनट मेरी पूरी थकान ले गए।"

गौरी धीरे से मुस्कुराई "और मेरी शाम बना दी।"

वीर ने आंखें बंद कीं जैसे उस पल को महसूस कर रहा हो।

"मैं जल्द ही तुमसे मिलने की ख्वाहिश लेकर फिर आउंगा... पर तब तक, स्क्रीन के इस पार ही सही... तुम हो, यही बहुत है।"

कॉल कट होने से पहले दोनों ने बस एक-दूसरे को देखा... बिना कुछ कहे।

कभी-कभी मौन ही सबसे लंबी बातचीत होती है।

अब हर रोज़ की तरह कॉल लगी होती। स्क्रीन दो हिस्सों में बँटी होती। एक तरफ गौरी, दूसरी तरफ वीर। लेकिन आवाज़ बस एक ही तरफ से आती।

गौरी की।

वो बोलती जाती थी बिना रुके, बिना थके। कभी कॉलेज की बातें, कभी अपनी दोस्तों की, कभी माँ की बनाई चाय की शिकायतें, और कभी वो सब कुछ जो दिनभर के सन्नाटे में उसने खुद से कहा होता।

"आपको पता है वीर, आज हमारी क्लास में सर ने कहा कि ज़िंदगी के फैसले दिमाग से नहीं, दिल से लेने चाहिए। मैं सोच रही थी… क्या मैंने जो आपसे जुड़ने का फैसला लिया, वो दिल से लिया था?"

उसकी आँखें फोन की स्क्रीन पर टिकी होतीं, लेकिन उधर से बस एक मुस्कान मिलती। वीर की वही धीमी मुस्कान, जिसमें हज़ार बातें छिपी होतीं।

वो शायद कुछ कहना चाहता, मगर कहता नहीं।

कभी-कभी वो जवाब देता भी, तो सिर्फ़ शायरी में।

"कुछ लोग बोलकर दिल का हाल कहते हैं,

मैं चुप रहकर सब कह देता हूँ…"

गौरी चिढ़ भी जाती "आपके पास हमेशा शायरी ही क्यों होती है? कभी सीधे कुछ क्यों नहीं कहते?"

वीर कैमरे की तरफ देखता और हल्के से मुस्कुरा देता। फिर उसकी गूंजती हुई, भारी आवाज़ आती "क्योंकि जो सीधे कह दूँ, वो फिर कविता कैसे रह जाएगी?"

गौरी चुप हो जाती, फिर खुद ही हँस पड़ती।

“अच्छा है, वरना अगर आप भी बोलने लगते तो शायद मेरी बातें कोई सुनता ही नहीं।”

और फिर वो बोलती रहती।

कभी ज़ोर से हँसती, कभी यूँ ही सवाल पूछती “आपको सच में मेरी बातें बोरिंग नहीं लगतीं?”

वीर सिर्फ़ एक लाईन कहता “तुम बोलती रहो… तुम्हारी आवाज़ मेरी सबसे प्यारी आदत बन गई है।”

गौरी की मुस्कान गहराती जाती।

अब वो समझने लगी थी कि वीर ज़्यादा नहीं बोलेगा। शायद कभी भी नहीं।

लेकिन उसके एक-एक शब्द में, एक-एक शेर में, इतनी गहराई होती कि वो सारा दिन उसी में डूबे रह सकती थी।

कभी-कभी जब वो एकदम चुप हो जाती, तो वीर कहता “बोलो ना आज… तुम्हारी आवाज़ नहीं सुनूं तो दिल घबरा जाता है।”

और वो फिर हँसते हुए कहती “तो फिर सुनो, आज मैं आपको बचपन की एक कहानी सुनाती हूँ…”

वीर अपनी कुर्सी पर पीछे झुककर आँखें बंद कर लेता, और गौरी की आवाज़ कमरे में फैल जाती जैसे किसी सूने घर में घंटियों की गूंज।

शब्द उसके थे, लेकिन खामोशी वीर की अपनी भाषा थी।

और अब गौरी को उससे मोहब्बत हो गई थी, उसकी चुप्पी से भी, उसकी शायरी से भी।

उस रात भी कॉल लगा था।

वीर अपनी ऑफिस की बालकनी में था।

गौरी अपने कमरे की खिड़की के पास, सिर तकिया पर टिकाए।

स्क्रीन दो हिस्सों में बँटी थी, लेकिन दिल आज पहली बार दो बिल्कुल अलग दिशाओं में जा रहे थे।

गौरी बोल रही थी, हमेशा की तरह।

पर आज उसकी आवाज़ में वो हल्कापन नहीं था।

आज कुछ रुक-रुक कर निकल रहा था।

"वीर… क्या मैं आपसे एक बात पूछ सकती हूँ?"

वीर ने हल्का सा सिर हिलाया।

"आपको मेरी बातें पसंद हैं?"

“बहुत,” वीर ने कहा।

“मेरी शक्ल?”

“प्यारी है,” वीर मुस्कुराया।

“और मेरी आदतें?”

वीर कुछ देर चुप रहा, फिर धीरे से बोला “उनसे अब खुद को अलग नहीं कर पाता।”

गौरी की आँखें भर आईं।

लेकिन वो फिर भी मुस्कुराई।

“तो फिर मुझसे शादी क्यों नहीं कर सकते?”

वीर की मुस्कान एक पल में फीकी हो गई। उसकी आँखें गहराने लगीं। बालकनी के पीछे का अँधेरा उसके चेहरे पर छा गया।

कुछ देर तक सिर्फ़ चुप्पी रही।

फिर वो भारी, धीमी आवाज़ आई “क्योंकि मैं इस दुनिया में तुम्हारे लिए बना ही नहीं हूँ, गौरी…”

गौरी चौंकी।

“क्या मतलब?”

वीर अब कैमरे की तरफ नहीं देख रहा था। वो सामने किसी अंधे कोने में ताक रहा था।

“मैं जिस जिंदगी में हूँ... उसमें तुम्हारे लिए जगह नहीं है।

जिस रिश्तों के बोझ में जी रहा हूँ... उसमें तुम्हारी सांस भी घुट जाएगी।”

गौरी की आँखों से आंसू गिर पड़े।

“आप मुझसे प्यार करते हो न?”

वीर ने पहली बार सीधे उसकी आंखों में देखा, और सिर्फ़ एक पंक्ति कही “अगर मोहब्बत किसी का हाथ थाम लेने से पूरी होती... तो शायद मैं तुझे अपना कहता।”

गौरी सिसक पड़ी।

“तो फिर मैं क्या करूं वीर? कैसे भूलूं आपको?”

वीर अब शांत था। एकदम स्थिर। उसकी आँखों में भी नमी थी, लेकिन चेहरे पर वही पुरानी खामोशी।

“शायद... मेरी खामोशी ही तेरे लिए सबसे अच्छा जवाब है।”

गौरी उस रात पूरी तरह टूट गई।

वो जिसे अब तक अपने हर दिन का हिस्सा बना चुकी थी,

वो जिसे उसने अपनी कल्पनाओं में दूल्हा तक बना लिया था। वो अब उसकी ज़िन्दगी से दूर जाने की बात कर रहा था… बिना ग़ुस्से, बिना चीख, सिर्फ़ एक नम सी शांति के साथ।

वीर ने कॉल नहीं काटा।

वो बस चुप रहा।

गौरी दूसरी तरफ बस रोती रही।

और सोचती रही "क्या सच्चा प्यार इतना कमज़ोर होता है… या फिर इंसान ही?"

उस रात बहुत कुछ बदल गया था।

वीर की वो एक लाइन "अगर मोहब्बत किसी का हाथ थाम लेने से पूरी होती…"

गौरी के दिल में काँटे की तरह चुभती रही। वो सारी रात नहीं सोई। सुबह होते ही उसने खुद से एक वादा किया। उसे वीर से शादी नहीं चाहिए थी। उसे बस… वो चाहिए था। उसकी आवाज़, उसकी मौजूदगी, उसकी खामोशियाँ… और उसका साथ जितना भी समय दे सके।

उसने वीर को कॉल किया।

वीर पहले थोड़ा झिझका। शायद सोच रहा था कि अब बात करने का कोई मतलब नहीं बचा। मगर कॉल उठाया।

गौरी एक पल चुप रही, फिर बोली "सुनो वीर... मैं आपसे शादी नहीं मांगती। कोई नाम, कोई रिश्ता नहीं चाहिए। मुझे बस आपका साथ चाहिए।"

वीर चौंक गया। कुछ देर तक कुछ नहीं बोला।

गौरी ने गहरी सांस ली और कहा "अगर आपके पास सिर्फ़ कुछ दिन हैं... कुछ पल हैं... तो मैं वो सब आपके साथ जीना चाहती हूँ।

कभी नाम लेकर नहीं पुकारूँगी...

कभी दुनिया से आपका हक नहीं माँगूँगी...

बस, जब भी आप अकेले हो, मैं आपके साथ रहना चाहती हूँ।"

वीर की आँखें भर आईं।

"तुम जानती हो न, ये रास्ता आसान नहीं होगा?"

"मैं आसान रास्तों के लिए नहीं बनी हूँ, वीर," गौरी बोली।

"मैं आपके लिए बनी हूँ। और ये जानकर ही जी लूंगी कि मेरा हर आज... आपके साथ बीतेगा।"

वीर की आवाज़ कांप गई।

वो पहली बार शब्दों से नहीं, ख़ामोशी से टूटा।

फिर उसकी वही भारी आवाज़ आई “तो फिर सुन लो मेरी आखिरी शायरी…”

“ना नाम चाहिए, ना रिश्ते का हक,

तू साथ हो… बस इतनी सी फ़रियाद है।

तेरे साए में जिएँगे हर लम्हा,

क्योंकि मोहब्बत तो बस तेरे साथ की बात है।”

गौरी रो पड़ी, लेकिन उस रोने में अब दर्द नहीं था, एक सुकून था, एक स्वीकार।

वीर ने कैमरा घुमाया। आज पहली बार उसने अपने ऑफिस की टेबल की जगह, अपनी खुली हथेली दिखाई।

“चलो फिर… इस सफर को बिना नाम के जीते हैं।

जब तक साँसे हैं… तुझसे जुड़कर साँस लेंगे।”

गौरी ने अपनी उंगलियाँ स्क्रीन पर रख दीं।

कोई दस्तख़त नहीं हुआ था।

कोई गवाह नहीं था।

सिर्फ़ दो दिल थे… जो बिना किसी समाजिक पहचान के,

आज से एक हो चुके थे।

अब हर रात उनका मिलना तय हो गया था।

वीडियो कॉल ही उनका कमरा था, वही दीवारें, वही रोशनी, और उसी में वो दोनों एक-दूसरे के हिस्से बन चुके थे। गौरी बिस्तर पर लेटी होती, सिर तकिए पर और आंखों में इंतज़ार। वीर अपने ऑफिस की बालकनी में बैठा होता। हल्की रोशनी, थका हुआ चेहरा, लेकिन जैसे ही कॉल उठाता… उसकी थकान उड़ जाती।

"आपको कॉल करने में इतना टाइम लग गया?"

गौरी मुंह फुलाकर पूछती।

वीर हँसता नहीं, बस मुस्कुराता।

"मुझे देख लिया न, अब मूड ठीक हो जाएगा।"

"आपको क्या लगता है? मैं आपको देखने के लिए बैठती हूँ? मैं तो बस… टाइम पास कर रही थी।"

वो झूठी नाराज़गी जताती।

वीर शांति से जवाब देता "अगर तू टाइम पास कर रही होती… तो हर रात मेरी वही पुरानी शायरी सुनने को न कहती।"

गौरी थोड़ी देर चुप रहती, फिर खुद ही हँस देती।

"हां, ठीक है, अब सुनाओ कोई नई शायरी…"

वीर आँखें बंद करता और कहता

“हर रोज़ एक ही चेहरा देखूं,

हर शाम एक ही बात सुनूं,

तो भी लगे कि नया सा कुछ है,

क्योंकि तू सामने होती है,

और तू कभी पुरानी नहीं लगती…”

गौरी का दिल पिघल जाता। मगर हर दिन गुलाबी नहीं था। कभी-कभी छोटी-छोटी बातों पर तकरार हो जाती।

एक रात

गौरी: “आपने मेरी भेजी हुई तस्वीर पर कुछ बोला ही नहीं!”

वीर: “मैंने देख ली थी… ठीक थी।”

गौरी: “बस ठीक? अच्छा… अब मैं भेजूंगी ही नहीं। देख लेना।”

वीर चुप हो जाता।

गौरी स्क्रीन से दूर देखती रही, गाल फुलाए हुए।

फिर वीर ने धीरे से कहा “मैंने ‘ठीक’ इसलिए कहा… क्योंकि उस तस्वीर में कुछ भी कहने लायक नहीं था… वो सिर्फ़ देखने और खो जाने लायक थी।”

गौरी की आँखें नम हो गईं।

गौरी: “झूठ बोल रहे हो।”

वीर: “अगर झूठ कहकर तुझे हँसी आ जाए… तो मैं हर रोज़ झूठ बोलने को तैयार हूँ।”

और फिर रात भर चलती बातें…

कभी आँखें भारी होने लगतीं, फिर भी कॉल काटने का मन नहीं करता।

“काटूं कॉल?”

“नहीं…” गौरी कहती।

“क्यों?”

“क्योंकि जब तक ये कॉल चालू है… मैं जानती हूँ कि आप यहीं हो।”

अब उनका रिश्ता शायद शादी का नाम नहीं लिए बैठा था…

मगर मोहब्बत का हर रंग उसमें मौजूद था। नाराज़गी, मनाना, मुस्कान, चुप्पियाँ, शायरी, और हर रोज़ की वो एक छोटी सी लाइन

“कल फिर मिलेंगे न?”

गौरी की परीक्षा थी, शहर के एक बड़े कॉलेज में। मन में पढ़ाई की चिंता कम और किसी अनदेखे इंतज़ार की बेचैनी ज़्यादा थी। वहीं वीर, जिसने गौरी से बस कुछ पल की बातचीत की थी, अब खुद को रोक नहीं पा रहा था।

उसने 200 किलोमीटर का लंबा सफ़र तय करने का निश्चय कर लिया। बिना किसी पूर्व सूचना, बिना किसी गारंटी कि वो मिलेगी भी या नहीं। लेकिन कुछ मुलाक़ातें इत्तेफाक़ नहीं होतीं, वो तक़दीर की सबसे खूबसूरत चाल होती हैं।

सुबह-सुबह वीर ने बाइक निकाली। वो सर्द सुबह में चलती हुई हवा मौसम को और शीतल बना रही थी। आँखों में उसका चेहरा लिए चलता गया और पूरे रास्ते बस यही सोचता रहा "क्या वो मुझे देखकर खुश होगी? क्या मेरी मौजूदगी उसका दिन बना देगी?"

बस अड्डे की धूल भरी ज़मीन पर सूरज की किरणें फैल चुकी थीं। नीले रंग की पुरानी सरकारी बस अपनी जगह पर खड़ी थी। उसके इंजन की मद्धम गूंज जैसे किसी दिल की धड़कन हो, जो इंतज़ार में हो... किसी के आने के।

गौरी बस में बैठी थी। पहली सीट की खिड़की से बाहर बार-बार झाँक रही थी। एक हाथ से फ़ोन संभाले, दूसरे से बैग पकड़े, उसकी उँगलियाँ बेचैनी में थरथरा रही थीं। आँखों में हल्की चिंता, और होंठों पर वो मासूम मुस्कान, जैसे दिल कह रहा हो, "वो आएगा... जरूर आएगा।"

पास की सीटों पर बैठी महिलाएँ अपने सामान में व्यस्त थीं। किसी को उसकी बेचैनी समझ नहीं आ रही थी, लेकिन वो जानती थी कि यह कोई मामूली इंतज़ार नहीं था। यह वो पल था, जहाँ पहली बार वो उसे देखेगी, उस लड़के को, जिससे अब तक सिर्फ़ शब्दों में मुलाक़ात हुई थी। न चूड़ी की खनक थी, न इत्र की खुशबू लेकिन गौरी की आँखों में उस दिन कुछ और ही चमक थी।

और तभी...

गौरी को वीर दूर से दिखा।एक साधारण सा लड़का, हल्का थका हुआ चेहरा। आँखें उसके चेहरे को ढूँढ रही थीं, जैसे किसी अनदेखे सपने को पहली बार हकीकत में देख रहे हों।

गौरी ने खिड़की से सिर निकाला। उसके चेहरे पर हल्की सी चमक आ गई।

"आप... आ गए?" आवाज़ धीमी थी, लेकिन उसमें हज़ारों भाव थे।

वीर कुछ क्षण स्तब्ध खड़ा रहा। जैसे किसी शेर की पंक्ति अचानक ज़िंदा हो गई हो

"जिससे कभी बातों में जान आई थी, वो आज सामने है।"

"जल्दी आओ, बस चलने ही वाली है..." गौरी ने मुस्कुरा कर कहा।

वो मुस्कान, वो पहली झलक, वीर के दिल पर कुछ ऐसा असर कर गई कि वक़्त वहीं थम गया। हवा जैसे उसके आसपास ठहर गई, शोर

पीछे छूट गया और बस उस एक पल में, सारा संसार बस गौरी के चेहरे में सिमट आया। वो पहली नज़र वीर कभी नहीं भूल सकता है।

वो पहली नज़र, जैसे सावन का झोंका,

मन में बसी कोई मीठी-सी रोका।

न बोले वो कुछ, न मैंने कहा,

पर दिल ने कुछ ऐसा जरूर लिखा।

चुपके से आई, निगाहों में छाई,

जैसे कोई रूह थी, सांसों में समाई।

न वक्त का होश था, न मंज़िल का ध्यान,

बस उसका चेहरा बना अरमानों की जान।

हवा थम गई थी, घड़ी रुक गई थी,

धड़कन मेरे सीने में बस झुक गई थी।

वो मुस्काई यूँ, जैसे फूल खिले हों,

मेरे सूने जीवन में रंग भर दिए हों।

अब जब भी आँखे बंद करता हूँ मैं,

उस पल की तस्वीर बन जाता हूँ मैं।

वो पहली नज़र, अब भी साथ चलती है,

हर दिन, हर साँस, हर रात पलती है।

वीर ने धीरे-धीरे कदम बढ़ाए। उसका दिल जैसे हर क़दम पर सवाल कर रहा था "क्या यही है वो लड़की, जिसकी बातों में सुकून मिलता था? क्या सचमुच वो आज सामने है?"

सीढ़ियाँ चढ़ते हुए उसके हाथ काँप रहे थे। वीर अब बस के दरवाज़े पर आ खड़ा हुआ था। उसकी आँखों में अपनापन था, लेकिन साथ ही एक संकोच भी। जैसे दो लोग पहली बार उस पुल पर मिल रहे हों, जो किताबों और बातों से बन कर तैयार हुआ था।

वो सामने आया। दोनों की नज़रें मिलीं। और वहीं... सब कुछ रुक गया।

कुछ पल ऐसे थे, जहाँ कोई शब्द नहीं थे लेकिन हर पल में हज़ार जज़्बात थे।

गौरी ने हल्के से कहा "चलो, यहाँ बैठो... मेरे पास।"

वीर बस हल्का-सा मुस्कराया, और बग़ल वाली सीट पर बैठ गया। दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा, बिना किसी बनावट के, बिना किसी डर के। वो पहली मुलाक़ात, जिसमें सब कुछ अनकहा ही कहा जा रहा था।

बस ने इंजन स्टार्ट किया। आवाज़ थोड़ी तेज़ हुई, लेकिन उनके बीच की ख़ामोशी और भी गहरी हो गई। बाहर की दुनिया चल रही थी, लेकिन उनके बीच वक़्त थम चुका था।

बस चल पड़ी, लेकिन उनके दिलों ने वहीं से एक नई यात्रा शुरू की थी। दोनों ने वो तीस मिनट बस में एक साथ बिताए। वो सफ़र जिसे गौरी ने अपनी ज़िंदगी की सबसे कीमती याद बना लिया।वो सफ़र सिर्फ़ एक सफ़र नहीं था, बल्कि वो सफ़र खुदमे एक जीवन काल था जो उन दोनों ने मात्र कुछ देर में ही जी लिया था।

वीर: "तुम्हें पढ़ाई के अलावा क्या पसंद है?"

गौरी: "खामोशी में भी बात करना...

जैसे अभी हम कर रहे हैं।

और आपको देखना...

जैसे हर बार कुछ नया मिल जाता हो।"

"वो तीस मिनट, बस की खिड़की के पास, वो दोनों चुप थे, पर बातें थीं ख़ास। उसने कुछ ना कहा, पर सब कह दिया, उस छोटी सी यात्रा ने रिश्ता गढ़ दिया।"

अब वक्त था जाने का और जाना भी अनिवार्य था। जाने से पहले गौरी ने वीर को सीने से लगाया और बस उस से लिपटी रही, मानो कि अब समय यही रुक जाये और बस यूही जीवन गुज़र जाए। गौरी

को आस पास के लोगो और समाज का भी ख्याल नहीं रहा। कुछ वक्त बाद गौरी ने वीर को छोड़ा। अब वक्त हो गया था जाने का और गौरी परीक्षा हॉल में चली गई। जाते वक्त गोरी की आँखें भर आई। जैसे जैसे दोनों के बीच दूरी बढ़ रही थी वैसे वैसे एक दूसरे को और देखने की इच्छा उठने लगी पर खुदपर काबू पाकर गौरी अंदर चली गई और वीर वापस लौट गया। पर उन तीस मिनटों ने जो एहसास छोड़ा, वो उनकी ज़िंदगी भर की पूंजी बन गई।

गौरी की परीक्षा खत्म हो चुकी थी, लेकिन वीर की यादें अब हर लम्हा उसके साथ चलने लगी थीं। दिन भर कॉलेज की भागदौड़ में उलझी रहती, लेकिन जैसे ही रात का सन्नाटा छाता, वीर की वो बातें, वो मुस्कान, और वो तीस मिनट की मुलाक़ात दिल को झकझोर देती।

उधर वीर भी शांत नहीं था। वो हर दिन उसकी प्रोफाइल देखता, उसकी तस्वीरों को निहारता, लेकिन कोई बात नहीं करता। शायद दिल में डर था कि अगर बात ज़्यादा बढ़ी, तो ये रिश्ता कहीं टूट ना जाए।

एक दिन अचानक वीर ने संदेश भेजा:

वीर: "अगर कभी फिर मिलो, तो क्या दोबारा वो तीस मिनट वापस ला सकते हैं?"

गौरी: "हर पल में बस वही तीस मिनट दोहराना चाहती हूँ।"

इस जवाब ने वीर को झकझोर दिया। उसने तय कर लिया कि एक बार फिर मिलना ज़रूरी है।

इस बार दोनों ने मिलने की जगह thoughtfully चुनी थी, कुरुक्षेत्र का गीता महोत्सव। वो जगह जहाँ इतिहास की मिट्टी में धर्म और प्रेम दोनों के अक्स समाए हुए थे। ये कोई साधारण मुलाक़ात नहीं थी, अब वे उस दौर में पहुँच चुके थे जहाँ उनके पास वक्त कम नहीं, बस एक-दूसरे के लिए समर्पण ज्यादा था।

सुबह की ठंडी हवा में हल्की धूप जब ज़मीन पर पड़ी, तो गौरी की मुस्कान में वो गर्माहट थी जो वीर के दिल को सीधे छू गई। उसका चेहरा धूप में जैसे गुलाब की पंखुड़ी-सा दमक रहा था। वीर को यूँ लगता मानो समय वहीं थम गया हो। जैसे सर्दियों की धूप और गौरी का चेहरा एक ही चित्र में कैद हो चुके हों।

गौरी के हाथों में एक छोटा थैला था। उसकी चाल में वो चंचलता थी जो अब भी बचपन की सी थी। वो अचानक दौड़ती हुई आई और बोली,

“देखो वीर, वो पापड़ याद हैं आपको, जो हम बचपन में खाते थे?”

गौरी ने बैठकर अपने हाथों से वीर को पापड़ खिलाना शुरू किया। वीर ने मज़ाक में कहा,

“इतना प्यार से खिला रही है कि अब ये पापड़ दुनिया का सबसे स्वादिष्ट व्यंजन लग रहा है।”

गौरी हँस दी। फिर दोनों ने गीता महोत्सव की भीड़ में हाथ थामे लोक सांस्कृतिक नृत्य देखे। झज्जर की घूमर, सिरसा की सांग, और भिवानी की रागणियाँ। वीर हर एक गीत में डूबता गया, लेकिन उसका असली ध्यान गौरी पर था। उसकी आँखें, उसकी बातें, और हर उस क्षण पर जब वो हँसती थी।

जब भीड़ से कुछ दूर होकर वे हरे मैदान में पहुँचे तो दोनों वहीं बैठ गए। कुछ देर बाद खुला आसमान देख कर लेट गए। सिर के नीचे हाथ रखे, एक दूसरे की ओर देखना और फिर चुप हो जाना। उनकी मौन भाषा सबसे गहरी संवाद बन चुकी थी।

वीर ने पूछा, “गौरी, अगर ये समय यहीं थम जाए तो?”

गौरी ने पलकों को गिरा लिया, “काश, ये मुमकिन होता…”

धूप अब थोड़ी और ढल चुकी थी। ठंडी हवाएं अब थोड़ी तेज़ थीं। आसपास के लोग धीरे-धीरे कम हो रहे थे लेकिन ये दो आत्माएँ जैसे किसी और ही दुनिया में थीं। हर बीता पल उनके बीच के फासले मिटा रहा था।

शाम होने को आई, मंदिर की घंटियाँ गूँजने लगीं। वो आरती की गूंज थी जो कहीं अंदर तक जाकर दोनों को याद दिला रही थी कि समय निकल गया है।

गौरी धीरे से बोली, “अब चलना चाहिए ना?”

वीर चुप रहा, बस गर्दन झुका दी।

जाते-जाते गौरी ने अपना बैग खोला और एक छोटी सी चीज़ निकाली जो उसके प्यार कड़ो और प्यार में उसके बचपने को भली भांति प्रस्तुत कर रहा था।

वीर ने तुरंत मना किया, "गौरी, ये तू अपने पास रख। मैं ऐसे तोहफे नहीं लेता…"

गौरी का चेहरा गिर गया। वीर ने उसका हाथ थाम लिया, "गौरी, मैं नहीं चाहता कुछ ऐसा अपने साथ ले जाऊँ जो मुझे हर पल तुम्हारी कमी का एहसास दिलाए…"

गौरी ने चुपचाप वो तोहफ़ा अपने बैग में वापस डाल दिया। उसकी आँखें नम थीं, पर वो वीर के सामने कुछ नहीं कहना चाहती थी।

अब बस का समय हो गया था। बस आई और गौरी ने धीरे से चलना शुरू किया। वो खिड़की वाली सीट पर बैठी, और बाहर झाँकते हुए वीर की ओर देखा। उसकी आँखों में अब ठहरी हुई नमी थी। ऐसी नमी जिसे कोई भी देख ले तो समझ जाए कि दिल में तूफ़ान चल रहा है।

वीर बस के पीछे पीछे कुछ कदम चला, फिर रुक गया।

जैसे जैसे बस दूर जाती गई, उसकी धड़कनें भी धीमी पड़ती गईं। और जब बस आँखों से ओझल हुई, तो वीर ने एक लंबी साँस ली…

शायद ये सिर्फ हवा नहीं थी, बल्कि एक टुकड़ा गौरी का एहसास भी था जो उसमें समाया हुआ था।

"कभी वक़्त से डर लगा, कभी रिश्तों से,

कभी ख्वाबों से डर लगा, कभी हकीकतों से

पर सबसे ज़्यादा डर तब लगा

जब आपसे बिछड़ने का ख्याल आया।"

बस धूल उड़ाते हुए आगे बढ़ चुकी थी। खिड़की से बाहर झाँकती गौरी की आँखें अब भी वीर को खोज रही थीं। जैसे उसकी आँखों के किनारों पर ठहरी हुई नमी अब टूटकर बहना चाहती थी, मगर भीड़ में बैठी उस लड़की ने अपने आँसुओं को पलकों की जेल में क़ैद कर रखा था।

भीतर बहुत कुछ हिल रहा था। दिल पूछ रहा था "क्यों नहीं लिया उसने मेरा तोहफ़ा? क्या मेरे हाथों की चुनी चीज़ भी उसके दिल तक नहीं पहुँच पाई?"

बस की सीट से सिर टिकाकर गौरी ने आँखें मूँद लीं, लेकिन स्मृतियाँ आँखों से ज्यादा जाग रही थीं। उसके कानों में वीर की हँसी, उसकी बातों की मासूमियत और वो चुप्पियाँ गूंज रही थीं जो दोनों के बीच एक नया रिश्ता बुन रही थीं।

उधर वीर वहीं उस चौराहे पर खड़ा था जहाँ से गौरी की बस गुज़री थी। उसका मन भीग चुका था, जैसे वो बस एक लड़की को नहीं, अपने बचपन, अपने सपनों और अपनी आत्मा के टुकड़े को विदा कर रहा हो। वो वहीं खड़ा रहा, जब तक बस आँखों से ओझल नहीं हो गई।

उसका मन किसी खोए हुए मेले की तरह खाली लग रहा था। उसने एक सूखे पत्ते को उठाया, हवा में फेंका और बुदबुदाया, "गौरी, तू चीज़ नहीं थी देने की, तू एहसास थी रखने की…"

वो मैदान के उस हिस्से में वापस गया जहाँ दोनों ने साथ में लेटकर आसमान देखा था। वहाँ अब बस वीर था… और यादें। उसने वहीं बैठकर थोड़ी देर के लिए गौरी की उपस्थिति को महसूस किया। जैसे अब भी उसकी हँसी गूँज रही हो, जैसे वो अभी दौड़ती हुई आएगी और कहेगी, "देखो, आपके लिए कुछ लाई हूँ।"

वो जानता था, गौरी जो लाई थी, वो बस एक तोहफ़ा नहीं था। वो उसका बचपन था, उसकी नज़ाकत थी, उसका समर्पण था। पर वीर डरता था। डरता था किसी ऐसे वादे से जो वो निभा नहीं सकता। उसे लगता था कि ये तोहफ़ा अगर उसने ले लिया तो फिर वो इस दुनिया के बनाए उसूलों से हार जाएगा… और शायद गौरी को भी कहीं न कहीं खुद से दूर कर देगा।

गौरी की बस अब एक छोटे क़स्बे के पास से गुज़र रही थी। वो खिड़की से बाहर खेतों को देखती रही, लेकिन अब हर रंग फीका

लग रहा था। वो तोहफ़ा उसके बैग में था, पर दिल के बहुत पास। उसने बैग खोलकर उन्हें बाहर निकाला, हथेली पर रखकर देखा।

उसने मन ही मन कहा, “मैं जानती हूँ आप क्यों नहीं ले गए वीर… पर क्या आप जानते है कि मैं ये क्यों लाई थी?”

बस एक झटका खाकर आगे बढ़ी, और गौरी की हथेली से तोहफ़ा गिरने को हुआ। उसने उसे कसकर पकड़ लिया, जैसे उसकी मुट्ठी में वीर की यादें हों। “नहीं, इस बार कुछ नहीं गिरने दूँगी… ना ये तोहफ़ा, ना ये एहसास।”

रात धीरे-धीरे उतर रही थी। कुरुक्षेत्र की सड़कों पर वीर अकेला लौट रहा था। हर रास्ता, हर नुक्कड़, हर वो मोड़ जिस पर आज वो दोनों चले थे। अब वीर के लिए एक मंदिर जैसा बन चुका था, जहाँ हर कोना गौरी की उपस्थिति से पवित्र हो चुका था।

उसने अपने हाथ की उंगलियाँ खोलीं, जैसे वहाँ कुछ महसूस करना चाहता हो। शायद उसे अब भी गौरी की वो छुअन महसूस हो रही थी जब उसने पापड़ हाथ से खिला कर कहा था, “ये सिर्फ स्वाद नहीं है, ये बचपन की याद है।”

वीर ने आसमान की ओर देखा, वहीं खुले आकाश की ओर जहाँ दोनों साथ लेटे थे। आज वही आकाश था, लेकिन वीर अकेला था।

उसने बुदबुदाया, “तू तो चली गई गौरी… पर आज ये आसमान भी तेरे बिना अधूरा है।”

सुबह की किरणें खिड़की से भीतर झांक रही थीं, पर गौरी की आँखें अब भी नींद से दूर थीं। वह रात भर करवटें बदलती रही थी। कभी तकिए को बाँहों में ले लेती, तो कभी उठकर खिड़की से बाहर देखती। चाँदनी की जगह अब धूप थी, पर वीर की कमी अब भी उतनी ही गहराई से उसके साथ थी।

उसने पास रखे बैग से वो तोहफ़ा निकाला। हथेलियों पर रखकर देर तक देखती रही।

उसने बुदबुदाकर कहा, "कितना अजीब है ना वीर… आपसे मिलना अब किसी ख़ूबसूरत दर्द जैसा लगता है।"

नीचे से माँ की आवाज़ आई, "गौरी, उठ गई? नाश्ता बना रही हूँ।"

गौरी ने धीमे से जवाब दिया, "हाँ माँ… बस थोड़ी देर में आती हूँ।"

वो चाहती थी माँ से छुपा ले वो दर्द जो शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता था।

उधर वीर भी रातभर जागा रहा। सुबह होते ही उसने अपने कमरे की खिड़की खोली। उसने धीरे से खिड़की की छड़ियाँ थामीं और गहरी साँस ली।

माँ कमरे में आई और बोली, "वीर, तू आज कुछ खोया-खोया सा लग रहा है।"

वीर ने हल्की मुस्कान दी, "कुछ नहीं माँ, बस थक गया हूँ शायद।"

माँ चली गई, लेकिन वीर अब अपने मन से लड़ रहा था उसने खुद से कहा, "तेरा हूँ, फिर भी तुझसे दूर हूँ... यही सबसे बड़ा विरोधाभास है शायद हमारे प्रेम का।"

दिन चढ़ने लगा। गौरी ने किताबें उठाई, पर हर शब्द अब वीर का चेहरा बन गया था। एक कविता की पंक्तियाँ उसे बार-बार याद आ रही थीं:

"जिनसे मिलकर ज़िंदगी से इश्क़ हो जाए,

वो लोग अक्सर मुक़द्दर में नहीं होते..."

उसे याद आया गीता महोत्सव का वो मैदान, वो हरियाली, वो धूप जिसमें उसका चेहरा वीर के लिए उजला हो गया था। वो घास पर लेटे हुए पल, जहाँ एक शब्द भी बिना कहे बहुत कुछ कह गया था।

गौरी की सहेली सीमा का फोन आया,

"गौरी, गीता महोत्सव कैसा रहा? वीर से मिली?"

गौरी चुप रही कुछ पल, फिर बोली,

"मिला... और बिछड़ भी गई एक बार फिर।"

शाम होने को आई। गौरी छत पर खड़ी थी। दूर एक बादल सूरज को ढक रहा था, पर उसकी किरणें अब भी झांक रही थीं।

गौरी ने सूरज से कहा, “अगर तू ढल सकता है हर शाम, फिर भी हर सुबह लौट आता है… तो क्या मेरा प्रेम भी कभी लौटेगा पूरी तरह से?”

नीचे माँ ने आवाज़ दी, “गौरी, चाय रख दी है मैंने।”

गौरी ने आसमान की ओर देखा और एक चुप मुस्कान दी, जैसे कहीं भीतर वीर की उपस्थिति अब भी ज़िंदा हो।

शाम का वक्त था। आसमान बादलों से घिरा हुआ था और हल्की-हल्की बूँदाबाँदी हो रही थी। वीर अपनी बाइक से लौट रहा था, और हर बार की तरह आज भी दिन की थकान उसकी आँखों में उतर आई थी। काम का बोझ, ज़िंदगी की भागदौड़, और उस पर गौरी की यादें—सब मिलकर जैसे एक अनकहे बोझ की तरह उसके कंधों पर लदे हुए थे।

जैसे ही वो अपने कमरे की ओर बढ़ा, एक अजीब-सी हलचल उसके भीतर हुई। उसके दरवाज़े के बाहर कुछ रखा हुआ था। एक रंगीन, सुंदर-सा डिब्बा। धड़कनें थोड़ी तेज़ हुईं। वो डिब्बा देखकर उसका चेहरा कुछ पल के लिए ठिठक गया।

डिब्बे के ऊपर रंग-बिरंगीं आकृति बनीं हुई थी, चमकीलें सितारों से फूल बने हुए चमक रहें थे जो कि बहुत सुंदर लग रहे थे और बीच में सजे-संवरे अक्षरों में लिखा था

“वीर के लिए, गौरी की तरफ़ से!”

वीर की साँसें कुछ पल के लिए थम-सी गईं। उसने धीरे से झुककर वो डिब्बा उठाया, जैसे कोई अनमोल चीज़ हाथ लग गई हो। उसकी उंगलियाँ काँप रही थीं। गौरी का नाम देखकर उसकी आँखों में कुछ गीला-सा उतर आया।

कमरे में आकर उसने दरवाज़ा बंद किया, बत्ती जलाई, और उस डिब्बे को बहुत प्यार से मेज़ पर रखा। कुछ देर तक वो उसे बस देखता

रहा। फिर धीरे से, जैसे कोई बेशकीमती किताब खोलता हो, उसने डिब्बा खोला।

सबसे अंदर थी एक सफेद और ग्रे रंग की चेक शर्ट। बिल्कुल सादा, लेकिन कपड़े की कोमलता ने वीर को हैरान कर दिया। उसे वो शाम याद आ गई जब एक बार गौरी ने मज़ाक में कहा था "आपके पास ढंग की एक भी टी-शर्ट नहीं है। अगली बार मैं ही भेजूँगी!"

उस वक़्त दोनों हँसे थे। पर आज जब वो शर्ट सचमुच उसके सामने थी, तो वीर की आँखें गीली हो गईं। गौरी की पसंद उसकी सीने से लग चुकी थी।

शर्ट के साथ कुछ डार्क चॉकलेट्स रखी थीं। और अब, उन चॉकलेट्स के साथ एक छोटी-सी पर्ची रखी थी

"खुद तो खाते रहते हो, पर आज मेरी तरफ़ से!

मुहँ मीठा करना, पर मेरी याद के साथ।"

वीर हँस पड़ा। वो हँसी भीतर से निकली थी। भीगी, सच्ची, और किसी की परवाह में डूबी हुई।

लेकिन असली तोहफ़ा अभी बाकी था।

डिब्बे के एक कोने में एक हाथ से बना कार्ड रखा था। उसे खोलते ही वीर की साँसें रुक गईं। तस्वीर में एक लंबी गर्दन वाला प्यारा-सा जिराफ़ और एक छोटा, मासूम-सा खरगोश था। दोनों एक ही छाते

के नीचे खड़े थे। चारों ओर बारिश थी, बूँदें गिर रही थीं, लेकिन छाते के नीचे सब कुछ सुरक्षित, कोमल और सुकूनभरा था। और नीचे एक लाइन लिखी थी

“It’s your mistake, you made me fall in love with you. Now shut up and handle me.”

वीर ने उस कार्ड को ज़रा देर तक देखा, फिर उसके होठों पर एक अजीब-सी मुस्कान आई। उसने वो नोट अपने दिल से लगाया और फुसफुसाया

“तू भी ना… बात कहने का तरीक़ा जानती है।”

नोट के पीछे गोरी ने और भी लिखा था: “ये छाता सिर्फ़ बारिश से नहीं बचाता… ये वो जगह है जहाँ हम दोनों एक-दूसरे की सच्चाई के नीचे खड़े हैं। आप लंबे हो, मैं छोटी, पर जब आप झुकते है और मैं उचकती हूँ, तो हम बराबर हो जाते हैं। अब आप ही बताओ, इससे ज़्यादा और क्या चाहिए हमें?”

उसने सब कुछ सहेजकर अपने पास रखा। टी-शर्ट पहनी, खुद को आईने में देखा और बुदबुदाया

“अब समझ में आया, किसी को सिर्फ़ पसंद करना और किसी को जी लेना कितना अलग होता है।”

कुछ देर बाद वीर ने काँपते हाथों से फोन उठाया और गौरी को कॉल किया।

गौरी: “मुझे पता था आप कॉल करोग़े!”

वीर: “तूने लिखा था ‘Shut up and handle me’, अब तू ही बता कहाँ से शुरू करूँ?”

गौरी: (हँसते हुए) “शुरुआत मत करो… बस समझ लो कि अब मैं आपकी ज़िम्मेदारी हूँ।”

वीर: “तो फिर ये भी जान ले मैं ज़िम्मेदारी नहीं निभाता, उसे जीता हूँ।”

दोनों कुछ देर तक चुप रहे। सिर्फ़ साँसों की आवाज़, दिल की धड़कनें, और उनके बीच वो दूरी… जो अब सिर्फ़ भौगोलिक रह गई थी।

उस रात वीर ने उस फोटो को अपने सिरहाने रखा और डिब्बे को अपने तकिए के पास रख लिया। बत्ती बुझाई, लेकिन आँखें नहीं मूंदी।

कभी-कभी किसी का एक छोटा-सा सरप्राइज़, किसी का भेजा एक कार्ड, या एक टी-शर्ट आपकी पूरी दुनिया को बदल देता है।

वीर अब अकेला नहीं था। उस डिब्बे में गौरी थी, पूरी की पूरी।

वीर की ज़िंदगी अब पहले जैसी नहीं रही थी। रोज़ का ऑफिस, थकान, और फिर उस छोटे से गिफ्ट बॉक्स की यादें। वो सफ़ेद-ग्रे चेक शर्ट, वो जिराफ़ और खरगोश वाला कार्ड, गौरी की लिखी हर एक लाइन, जैसे उसकी दुनिया का हिस्सा बन गई थीं। वो सुबह उठकर सबसे पहले वही कार्ड देखता, शर्ट पहनता तो लगता जैसे वो उसके करीब है। पर अब, मन में एक बेचैनी थी। एक कसक-सी, कि कुछ लौटाया जाए। नहीं… क़ीमत नहीं, कोई एहसान भी नहीं… बस एक एहसास, एक जवाब, जो कहे "हाँ, मैं भी महसूस करता हूँ, उतना ही, शायद उससे ज़्यादा।"

वीर ने उस शाम जल्दी ऑफिस से छुट्टी ली। ठंडी हवा चल रही थी, आसमान में बादल बिखरे हुए थे। बिल्कुल उस दिन जैसे जब गौरी का गिफ्ट आया था। वो सीधे अपने कमरे में पहुँचा, लैपटॉप खोला और ऑनलाइन शॉपिंग साइट्स खंगालनी शुरू कर दीं।

कभी पेंडेंट्स देखता, कभी डायरी, कभी स्कार्फ… पर कुछ भी "उसका" नहीं लग रहा था। अचानक उसकी नज़र झुमकों पर पड़ी। सिल्वर ऑक्सिडाइज़्ड, जिसमें छोटी-छोटी घंटियाँ बँधी थीं।

वीर के चेहरे पर एक हल्की मुस्कान फैल गई।

"यही हैं… बिल्कुल वैसे ही जैसे तूने एक बार पहने थे। उस फोटो में… जब तू हँस रही थी और मैंने कहा था, इन झुमकों की आवाज़ से ज़्यादा प्यारा कुछ नहीं सुना।'"

वीर ने झुमकों को ऑर्डर कर दिया। फिर एक छोटा-सा कार्ड चुना। सादा, लेकिन भीतर भावनाओं से भरा हुआ। उसने खुद लिखा:

“तुझे झुमकें पसंद है,

और मुझे झूमकों में तू।”

उसने कार्ड को गुलाबी रिबन से बाँधा, और झुमकों को छोटे से बॉक्स में रख दिया। पैकेज के ऊपर लिखा

“गौरी के लिए, वीर की तरफ़ से।”

उधर, गौरी के दिन भी कुछ बदल गए थे। पहले जहां किताबों और परिवार की ज़िम्मेदारियों के बीच उलझी रहती थी, अब हर शाम उसे वीर का चेहरा याद आता। उसका अंदाज़, उसकी बातें, और वो लाइन “मैं ज़िम्मेदारी नहीं निभाता… उसे जीता हूँ।”

एक शाम जब वो अपने कमरे में बैठी थी, माँ की आवाज़ आई “गौरी! बाहर तेरे लिए कोई डिब्बा आया है!”

गौरी की धड़कन एक पल को रुक गई। उसने जल्दी से बाहर जाकर वो बॉक्स उठाया। जैसे ही उसकी नज़र उस लिखावट पर पड़ी “वीर की तरफ़ से” उसका दिल धड़क उठा।

कमरे में आकर उसने दरवाज़ा बंद किया। बहुत धीरे-धीरे उसने रिबन खोला, जैसे किसी भावुक रेशे को सुलझा रही हो। डिब्बा खोलते ही

झुमके उसकी आँखों के सामने थे। चमकते हुए, सादगी में डूबे हुए। उसने उन्हें हाथ में लिया, और फिर वो कार्ड पढ़ा।

हर एक शब्द जैसे वीर की आवाज़ में सुनाई दिया। उसके गालों पर एक हल्की सी मुस्कान उभरी और आँखों में नमी उतर आई।

"आपके भेजे हुए एहसास..." उसने फुसफुसाया, "मेरे कानों में नहीं... सीधे दिल में उतर गए हैं।"

उसने झुमके कानों में पहन लिए, आईने में खुद को देखा, और मुस्कुराई "अब ये सिर्फ़ ज़ेवर नहीं रहे... अब ये आप है।"

गौरी ने झट से फोन उठाया और वीर को कॉल किया।

वीर: "हेलो?"

गौरी: "इतनी कोमल चीज़ें मत भेजा करो... दिल पिघल जाता है।"

वीर: "और क्या करूँ... तुझे छू नहीं सकता, बस भेज सकता हूँ।"

गौरी: "इन झुमकों में आप बजते हो... हर खनक में आपका नाम गूंजता है।"

वीर चुप रहा, फिर धीरे से बोला "तू जब इन्हें पहनती है, तो लगता है जैसे मैं तेरे करीब हूँ।"

और उस दिन, उन झुमकों में दो दिलों की कसमें बँध गईं। खनकते एहसासों में प्यार की वो परिभाषा गूँजने लगी, जो न ज़ुबां से कही जा सकती है, न चुप्पी में समेटी जा सकती है, वो बस जी जाती है।

कमरे की लाइट बंद है, सिरहाने एक छोटा लैम्प जल रहा है। गौरी अपने बिस्तर पर बैठी है, हाथ में फोन, और आँखें वीर के प्रोफ़ाइल पर अटकी हुईं।

गौरी की आँखों में नींद नहीं, सिर्फ़ वीर की यादें हैं।

गौरी (मन ही मन): "कितना अजीब है ना... वो जब *online* होते है तो दिल राहत पाता है, और जब *offline* होते है, तो जैसे साँसें भी अधूरी लगती हैं।"

"आज तीन घंटे हो गए... उसने एक बार भी मैसेज नहीं किया। न स्टोरी डाली, न कोई रील लाइक की। क्या हुआ होगा?"

वो वीर की प्रोफाइल फिर से खोलती है। कोई activity नहीं। न कोई नया फॉलो, न पोस्ट।

गौरी फिर से फोन का call log खोलती है

"Veer – last call: Yesterday, 7:46 PM"

"Duration: 13 minutes 22 seconds"

उस कॉल के बाद वीर ने कोई मैसेज नहीं किया।

गौरी नोटपैड में कुछ लिखती है, जो वो कभी वीर को भेज नहीं पाती।

Unsent Note:

"आपके बिना हर चीज़ अधूरी है, वीर। किताबें नहीं पढ़ी जातीं, गाने नहीं सुने जाते। बाहर जाने का मन नहीं करता। सब कुछ बेवजह लगता है, यहाँ तक कि खुद से बात करना भी।"

"आप जब कॉल करते है तो मेरा दिल धड़कना सीखता है, और जब दिनभर आप गायब होते है... तो मैं भी खुद से दूर हो जाती हूँ।"

"क्यों ना आप मेरी ज़िंदगी का हिस्सा बन जाए, ऐसा हिस्सा जो कभी लॉग आउट ना हो?"

गौरी का मन बेचैन है। वो उठती है, कमरे में टहलती है। बारिश की आवाज़ अब धीमी हो चुकी है, लेकिन उसकी बेचैनी तेज़ होती जा रही है।

गौरी (धीरे से बुदबुदाती है):

"आप कहते है कि मैं आपके लिए खास हूँ... तो फिर आप ऐसे गायब कैसे हो सकते है? क्या मैं आपकी ज़िंदगी में सिर्फ़ चैट बॉक्स हूँ? बस एक प्रोफ़ाइल? एक टाइम-पास?"

वो खुद से ही सवाल करती जाती है। आँखें भीग चुकी हैं। एक बार फिर फोन उठाती है, वीर को कॉल करने के लिए। उंगली कॉल बटन तक पहुँचती है... मगर रुक जाती है।

गौरी (कड़वाहट से): “नहीं… आज नहीं। आज मैं खुद को देखूंगी। आपके बिना। देखती हूँ, कितनी देर टिकती हूँ…”

वो फोन रख देती है, मगर 30 सेकंड बाद फिर उठाती है। फिर से वीर की प्रोफ़ाइल, फिर से उसकी last seen।

कोई अपडेट नहीं।

गौरी अब आईने के सामने खड़ी है और खुद को देखती है। बाल बिखरे हैं, आँखों में थकान, लेकिन चेहरा वीर का इंतज़ार कर रहा है।

गौरी (आईने में खुद से): *“तू इतनी मजबूर कब से हो गई, गौरी? एक लड़के के ऑनलाइन आने से तेरे चेहरे पर रौशनी और उसके गायब होने से अंधेरा क्यों?”*

“या फिर... ये प्यार है?”

कुछ देर बाद फोन वाइब्रेट करता है। एक नन्हा notification:

“वीर: सो गया था यार, बहुत थका हुआ था… तू ठीक है ना?”

गौरी के होठों पर हल्की सी मुस्कान लौट आती है, लेकिन आँखों में अब भी नमी है। वो typing शुरू करती है… फिर रुक जाती है। उसे समझ आ गया है उसकी दुनिया वीर से जुड़ी है, लेकिन खुद को संभालना अब उसकी ज़रूरत बन गई है।

वीर का कॉल आता है। गौरी कुछ देर तक स्क्रीन देखती रहती है, फिर कॉल उठा लेती है। दोनों तरफ चुप्पी।

वीर (धीरे से):

“गौरी… तू नाराज़ है ना मुझसे?”

गौरी (थकी हुई आवाज़ में): “नाराज़? नहीं, मैं तो अब आदत डाल रही हूँ वीर… आपको मिस करने की, आपका इंतज़ार करने की… और फिर खुद से लड़ने की।”

वीर: “ऐसा मत कह यार… मैं कभी-कभी सच में व्यस्त होता हूँ। तुझसे बात ना करना मेरे लिए भी आसान नहीं होता।”

गौरी: “पर मैं तो आपके लिए कभी व्यस्त नहीं होती, ना? आप कहीं भी हो, मेरा मन तो बस आपके आस-पास घूमता है।”

(रुकती है, फिर गहरी साँस लेती है)

“वीर, आज मैं कुछ कहना चाहती हूँ… सब कुछ… जो मेरे अंदर सड़ता जा रहा है। सुन सकोगे?”

वीर: “सुनूंगा। और पूरी तरह सुनूंगा।”

गौरी: “मैं आपसे प्यार करती हूँ वीर… पर शायद आपसे ज़्यादा, मैं तुझे खोने से डरती हूँ। जब आप किसी और लड़की की स्टोरी पर reply करते हो, या किसी को फॉलो करते हो… तो मेरे अंदर कुछ

टूटता है। एक डर, एक खालीपन, जैसे आपका दिल अब मेरा नहीं रहा।”

(उसकी आवाज़ काँपने लगती है)

“मैं आपसे इस दुनिया में सबसे ज़्यादा जुड़ी हूँ, और जब आप दूर चला जाता है… तो मैं अपने आप से भी कट जाती हूँ।”

वीर (धीरे से): “गौरी… तू कभी मुझसे दूर नहीं हो सकती।”

गौरी (आँसू रोकते हुए): “पर आपको ये बात कहां दिखती है? आप मेरा status देखते भी हो या नहीं? आप मेरी शक्ल देखकर मुस्कुराते हो या बस आदतन reply करते हो?”

“आप मेरी insecurity नहीं समझते वीर… मैं वो लड़की नहीं बनना चाहती जो आपको रोज़ चेक करे, पर खुद आपसे अनदेखी रहे।”

वीर कुछ देर खामोश रहता है। उसकी साँसें तेज़ हैं, जैसे दिल पर कुछ भारी बैठा हो।

वीर: “तू सही कहती है… मैंने तुझे वो भरोसा नहीं दिया, जिसकी तू हकदार है। मैंने तुझे ये महसूस नहीं कराया कि तू मेरी पहली और आखिरी पसंद है। पर आज, अभी, मैं एक बात साफ़ करना चाहता हूँ, तू सिर्फ़ मेरी लिस्ट में एक नाम नहीं है, गौरी… तू मेरी सुबह की सोच, रात की तसल्ली, और हर दिन की राहत है।”

गौरी (धीरे से): "तो फिर साबित करो... मत छोड़ो मुझे अधूरा-सा महसूस करने के लिए। मैं बस आपसे यकीन माँगती हूँ... ऐसा यकीन जो ना प्रोफाइल में दिखे, ना स्टोरी में... बस आपके लहजे में हो।"

दोनों तरफ चुप्पी। लेकिन ये चुप्पी बोझिल नहीं, अब हल्की होती जा रही है। फिर वीर की आवाज़ आती है।

वीर: "मैं वादा करता हूँ, गौरी... अब से तू मेरी हर बात का पहला जवाब होगी। तू बस ये यकीन रख... कि मेरे दिल में तेरे सिवा कोई और टिकने लायक नहीं। और जो भी डर है तेरा, अब वो मेरा है।"

गौरी (सिसकते हुए मुस्कुरा जाती है): "और जो प्यार है मेरा... अब वो सिर्फ़ आपका है।"

कॉल के दोनों सिरों पर नींद आ चुकी है, लेकिन दिलों में सुकून पहली बार महसूस हो रहा है।

दोनों ही जब एक-दूसरे की आँखों में आँखें डालकर मुस्कुराते थे, तो वक़्त ठहर जाता था। वे क्षण, जब ना समय की परवाह थी, ना दुनिया की, जैसे कोई दूसरी ही दुनिया थी, सिर्फ़ वीर और गौरी की। उन लम्हों में कोई जात-पात, कोई रिवाज़, कोई बंदिश नहीं थी। उनके बीच बस प्रेम था। निश्छल, निरूपाय, और अद्भुत प्रेम।

गौरी जब अपनी चूड़ी की खनक के साथ वीर के पास आती, तो वीर की दुनिया संवर जाती। और जब वीर की आँखों में वह दृढ़ता झलकती, तो गौरी को लगता कि उसके जीवन की दिशा तय हो गई

है। पर वो कहते हैं न, प्रेम जितना पवित्र होता है, उतनी ही कड़ी परीक्षा भी लेता है।

वीर जानता था कि वह एक जाट खानदान से आता है, जहाँ शौर्य, इज़्ज़त, और समाज का डर ख़ून में बहता है। और गौरी? एक ब्राह्मण परिवार की इकलौती बेटी, जिसका हर क़दम दादा जी की मर्यादाओं में बंधा है।

उस रात वीर बहुत देर तक जागता रहा। चाँदनी खिड़की से छन कर उसके चेहरे पर पड़ रही थी, और हर किरण एक सवाल बन कर उसकी आत्मा में उतर रही थी।

"क्या मैं गौरी को इस आग में झोंक रहा हूँ?"

"क्या मेरा प्रेम उसकी ज़िंदगी का सबसे बड़ा बोझ बन जाएगा?"

उसने ख़ुद से कई बार कहा "नहीं, मैं लड़ूँगा… समाज से, परंपराओं से, उसके दादा जी से… सब से।"

पर जब उसने गौरी की आँखों में उस मासूम भरोसे को देखा, जो बिना कहे सब कह जाता था, तो वह डगमगाया। उसे डर लगने लगा कि कहीं उसके इस अडिग प्रेम की वजह से गौरी को खो न दे।

अगले कुछ दिनों में वीर का व्यवहार बदल गया। वह मुस्कुराता, पर उसकी आँखों में कोई भारीपन था, जो गौरी को बेचैन कर देता।

"क्या बात है वीर, आप कुछ छुपा रहे हो?" गौरी ने एक दिन पूछा।

वीर ने बस इतना कहा "कुछ नहीं, बस सोच रहा हूँ कि वक़्त सब ठीक कर देगा।"

पर वक़्त ने कभी किसी प्रेमी का साथ नहीं दिया, और वीर भी यह बात जानता था।

एक दिन वीर बिना बताए ग़ायब हो गया। ना कोई ख़बर, ना कोई संदेश। गौरी ने जैसे अपनी साँसें थाम ली थीं। हर दिन उसका चेहरा खिड़की की तरफ़ रहता, हर आहट पर दौड़ती कि शायद वीर लौट आया हो।

पर वीर कहीं और था। एक ऐसे अँधेरे कमरे में, जहाँ सिर्फ़ उसकी यादें थीं और वह ख़ामोशी, जो चीख़ चीख़ कर कह रही थी "तू कायर नहीं है वीर, पर तू मजबूर है।"

वीर ने गौरी को छोड़ना नहीं चाहा था, पर समाज का वो ताना-बाना, रिश्तों की वो जकड़न, और सबसे ज़्यादा गौरी को खो देने का डर। इन सब ने उसे उस मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया जहाँ से पीछे जाना संभव नहीं था, और आगे जाना गुनाह लगता था।

गौरी के बिना उसकी दुनिया अधूरी थी, पर उसके साथ उसकी दुनिया टूटने का डर और बड़ा था।

उधर गौरी का जिसे इस तूफ़ान की रत्ती भर भी ख़बर नहीं थी, रो-रोकर बुरा हाल था। वीर से तालुक्क एकदम से टूट गया था। बिना किसी खोज खबर से यू अचानक गायब हो जाना उसके लिए उतना ही कठिन था जितना फूल बिना भवरे का तड़पते हुए बिना भोजन के यहाँ से वहाँ भटकना।

कमरे की खिड़की से धूप छन-छनकर भीतर आ रही थी, पर गौरी की आँखों के सामने अंधेरा ही अंधेरा था। वो खिड़की, जहाँ वो घंटों बैठकर वीर की राह तकती थी, आज उसके लिए एक ज़िंदा याद बन गई थी। वहाँ से आने वाली हवा भी वीर की खुशबू लाती थी, पर अब वही खुशबू एक कसक बन चुकी थी। वीर चला गया था, बिना कुछ कहे, बिना कुछ सुनाए।

शुरुआत कुछ दिनों की खामोशी से हुई थी। वीर का अचानक ग़ायब हो जाना कोई साधारण बात नहीं थी। उसका हर दिन एक संदेश, एक कॉल, एक मुलाक़ात से जुड़ा होता था। पर अब वो सब खत्म हो चुका था।

पहले-पहल गौरी को यक़ीन ही नहीं हुआ। उसने सोचा, हो सकता है व्यस्त होगा, कोई काम आ पड़ा हो। पर दिन बीते, हफ़्ते गुज़रे, और अब उसे महसूस होने लगा कि यह चुप्पी वीर की मजबूरी नहीं, शायद कोई सोच-समझ कर लिया गया फ़ैसला है। लेकिन क्यों? किसलिए?

गौरी के दिल में हलचल थी। एक दिन उसने हिम्मत कर फोन मिलाया—"इस समय कॉल रिसीव नहीं किया जा सकता।" बस यही जवाब हर बार मिलता। फिर उसने संदेश भेजने शुरू किए, एक-एक करके, कभी शिकायतें, कभी दर्द, कभी प्यार भरे लफ़्ज़। पर उधर से सन्नाटा था, पत्थर जैसे मौन।

गौरी के लिए सबसे कठिन वो रातें थीं, जब सारी दुनिया सो जाती थी, और उसकी आँखों में नींद की जगह आँसू उतर आते थे। अँधेरे कमरे में उसका सिरहाना गीला रहता, और दीवारों पर वीर की यादें परछाईं बनकर मंडराती थीं।

वो अपने कमरे में बैठे-बैठे एक दिन ज़ोर से फूट पड़ी। "क्यों गए? मुझे छोड़कर क्यों चला गए?" उसकी आवाज़ टूटी हुई थी, पर सवालों से भरी।

उधर वीर…

वो भी चैन से नहीं था। उसके दिल में भी तूफ़ान था। समाज की बंदिशें, रिश्तों का बोझ, माँ-बाप की उम्मीदें, और सबसे बड़ी बात - गौरी की सुरक्षा। उसे पता था, उनके इस रिश्ते की कोई मंज़िल नहीं। उनके जात-पात के बीच की खाई इतनी गहरी थी कि वो उसे पार नहीं कर सकता था।

वीर सोचता, "अगर मैं यूँ ही जुड़ा रहा, तो उसे भी मेरी ही तरह तड़पना पड़ेगा। बेहतर है, मैं ही दूर हो जाऊँ। भले ही वो मुझे समझे,

या ना समझे। पर मैं जानता हूँ, ये कड़वा फ़ैसला ही हमारे लिए कम दर्दनाक है।”

लेकिन क्या वाक़ई?

हर दिन वीर खुद से यही सवाल करता था।

गौरी के कमरे में अब कोई चहल-पहल नहीं रही थी। वो जो पहले हर सुबह पूजा के बाद माँ से मुस्कुराकर मिलती थी, अब बमुश्किल कमरे से बाहर निकलती। उसके चेहरे की रंगत जैसे किसी ने छीन ली हो। बाल बिखरे रहते, आँखें सूजी हुईं, और होंठों पर नमी की जगह खामोशी उतर आई थी।

उसके दिन वीर की यादों में कटते और रातें आँसुओं में। फ़ोन में छुपी वो तस्वीर जिसमें वीर और गौरी किसी मेले में मुस्कुराते खड़े थे, अब उसकी सबसे बड़ी सज़ा बन गई थी। नज़र पड़ते ही वो तस्वीर आँखों से बहते पानी में धुँधली हो जाती।

एक शाम, गौरी की माँ उसके कमरे में आई। हाथ में हल्का दूध और माथे पर चिंता की लकीरें लिए।

“गौरी, बेटा… कुछ खाया तूने?”

गौरी चुप रही। उसकी आँखें गीली थीं और तकिया उसके आँसुओं से गीला।

माँ ने धीरे से उसके पास बैठते हुए कहा, “कुछ तो बता मुझे… तू ऐसे गुमसुम क्यों है?”

गौरी के अंदर का बाँध जैसे टूट गया। उसने धीरे से अपना सिर माँ की गोद में रख दिया। माँ ने प्यार से उसके बालों में उंगलियाँ फेरनी शुरू कीं।

गौरी ने सिसकियों के बीच कहा: “माँ… वो चला गया,” गौरी की आवाज़ काँप रही थी।

“कौन बेटा?” माँ ने पूछा।

गौरी ने हिम्मत इक्कट्ठी करके कहा: “वीर… बिना कुछ कहे… गायब हो गया।”

माँ का हाथ ठिठक गया। उसने धीरे से कहा, “क्या हुआ? लड़ाई हुई तुम दोनों में?”

गौरी ने आँसुओं के बीच सिर हिलाया “नहीं माँ… कुछ भी नहीं हुआ। सब कुछ ठीक था। एकदम ठीक। फिर भी वो अचानक… मैं जानती हूँ माँ, उसने मजबूरी में किया है… पर वो मजबूरी क्या थी, ये नहीं समझी।”

गौरी की माँ ने उसके आँसू पोंछते हुए पूछा “तू उससे बहुत प्यार करती है?”

गौरी ने बिना बोले सिर हिलाया। वो कुछ बोलती, उससे पहले उसकी सिसकी गूंज गई कमरे में।

माँ अब सब कुछ समझने लगी थी। बेटियाँ अपने दर्द यूँ ही नहीं खोलतीं, जब खोलती हैं तो समझना पड़ता है कि बात कितनी गहरी है।

उसने गहरी साँस लेते हुए कहा,

"बेटा, अगर उसने छोड़ा है, तो शायद उसने सोचा होगा कि ये रिश्ता आगे नहीं चल पाएगा। तू भी जानती है, वो दूसरा समाज है...। अच्छा हुआ चला गया, जाटों के तुझे भेजता कौन।"

गौरी ने तुरंत रोते हुए कहा,

"माँ, क्या प्यार भी समाज की इजाज़त से होता है? अगर हम एक-दूसरे के बिना जी नहीं सकते, तो क्या सिर्फ़ जात का नाम हमारी ज़िंदगी तय करेगा?"

माँ चुप रही। उसके पास जवाब नहीं था। उसकी आँखें भर आईं। वो जानती थी कि उसकी बेटी पहली बार इस तरह टूटी है और टूटे हुए दिल के लिए दुनिया का कोई भी तर्क मरहम नहीं बन सकता।

गौरी ने माँ की गोद में पड़े-पड़े कहा,

"माँ, मैं रोज़ उसे याद करती हूँ। मैं जानती हूँ वो भी मुझे भूल नहीं सकता। पर फिर भी वो दूर चला गया। मुझे बस ये नहीं समझ आता

कि क्यों? उसने एक बार भी बताया क्यों नहीं? बस यूँ ही दूर हो गया।”

माँ ने धीरे से उसका सिर सहलाया और बोली: “शायद बेटा, उसने तुम्हें बचाने के लिए ये फैसला लिया हो। कभी-कभी जो लोग सबसे ज़्यादा प्यार करते हैं, वही सबसे ज़्यादा दूरियाँ बनाते हैं, ताकि हम ज़ख़्मों से बचे रहें। पर ये तो ज़िंदगी ही बताएगी कि उसका फ़ैसला सही था या नहीं…”

गौरी की आँखें फिर भर आईं।

“पर माँ, मैं हर रोज़ सोचती हूँ… क्या वो कभी लौटेगा? क्या कभी फिर से वो मेरे नाम की दुनिया में कदम रखेगा?”

माँ ने कुछ नहीं कहा। बस उसका हाथ थामे रखा, जैसे कह रही हो, “मैं जानती हूँ, बेटा… ये इंतज़ार तुझसे कितना कुछ ले रहा है।”

घर के उस कोने में

जहाँ आपकी हँसी रखी थी

अब सिर्फ़ सन्नाटा रहता है।

खिड़की से आती हवा

हर बार वही प्रश्न दोहराती है "क्या वो लौटेगा?"

मैं हर दिन दीवारों से पूछती हूँ,

क्या उन्हें अब भी तुम्हारी आहट सुनाई देती है?

वे चुप रहती हैं, जैसे आप।

इंतज़ार की ये दीवारें

अब घड़ी की सुइयों से भी पुरानी लगती हैं।

हर पल आपका नाम लेती हैं बिना शब्दों के।

मैंने कई बार कोशिश की

कि आपको भुला सकूँ,

पर हर बार आपके नाम की गूंज

किसी पुरानी कविता-सी लौट आती है।

शायद इंतज़ार भी एक इबादत होता है,

जो पूरी तो नहीं होती,

पर अधूरी ही सही कुछ तो कह जाती है।

जुदाई जब सच्चे प्यार से टकराती है, तो खामोशियों में भी आवाज़ गूंजती है...

गौरी की उंगलियाँ आज भी फोन की स्क्रीन पर रुक-रुक कर स्क्रॉल कर रही थीं। वीर का कोई संदेश नहीं, कोई कॉल नहीं। उसका दिल कह रहा था कि सब ठीक है।

कमरे की खामोशी अब भारी लगने लगी थी।

बारिश की बूँदें बाहर खिड़की से टकरा रही थीं, जैसे वो भी उसे जगा-जगाकर कह रही हों “वो नहीं आया आज भी…”

गौरी की आंखों में अब झुंझलाहट नहीं थी…

बस एक ठहराव था। कांच जैसा साफ़, मगर बेहद नाज़ुक।

रात भर उसने वीर की पुरानी भेजी शायरियाँ फिर से पढ़ीं।

कभी हँसी आई, कभी आँखें भीग गईं। कभी दिल ने कहा “बस छोड़ दे…” पर अगले ही पल उस भारी आवाज़ की कमी उसे फिर खींच लाती “हर बात पे जवाब नहीं चाहिए, कुछ लोग सिर्फ़ एहसास के लिए होते हैं…”

गौरी ने तकिए के नीचे से डायरी निकाली।

एक कागज़ पर धीरे-धीरे लिखा *“मैं जानती हूँ, आप चुप हो…”* फिर कागज़ मोड़ा, उसका स्कैन किया, और एक ऑर्डर प्लेस किया, एक डार्क चॉकलेट ट्रफल केक, बेल्जियन चॉकलेट्स और वही स्कैन किया हुआ नोट।

उसने सोच रखा था “अगर वो नहीं बोल रहा, तो कोई बात नहीं। मैं अपनी मोहब्बत को भेज दूँगी… मिठास बनाकर।”

वीर ऑफिस में बैठा था। चेहरा बुझा हुआ, आँखों में नींद की जगह बेचैनी थी। अचानक एक कॉल आता है। जिसमे पता लगता है कि

किसी ने कुछ भेजा है। पर क्या और किसने इसका कोई अंदाज़ा नहीं था।

उसने किसी उम्मीद से बॉक्स खोला नहीं था। वो तो बस दिन के झंझटों में उलझा था।

मगर जैसे ही पैकेट की महक आई। चॉकलेट और एक जानी-पहचानी सी खुशबू...

उसका दिल कांप गया।

केक के ऊपर एक छोटी सी स्लिप लगी थी "हैप्पी बर्थडे।"

और उसके नीचे वो स्कैन किया गया हाथ का लिखा नोट वीर कुछ पल तक उसे देखता रहा। न कुछ बोला, न कोई एक्सप्रेशन। फिर उसने धीमे से वह नोट उठाया, उंगलियाँ काँप रहीं थीं।

गौरी ने लिखा था "मैं जानती हूँ आप चुप हो, पर मैं अब भी वहीं हूँ, जहाँ हमारी आखिरी मुस्कान रुकी थी।

केक में मिठास कम है, पर उसमें मेरा इंतज़ार घुला है।

और इन चॉकलेट्स में वो बातें... जो आप कह नहीं पाए, लेकिन मैं सुनना नहीं भूली। जल्द आना... क्योंकि मैं अब भी हर रात वही शायरी दोहराती हूँ, जिसे आपने अधूरा छोड़ा था।"

—आपकी गौरी

वीर वहीं अपनी कुर्सी पर बैठ गया। उसने केक की पैकिंग खोली, एक टुकड़ा खामोशी से मुँह में रखा... और आँखें बंद कर लीं।

उस मिठास में गौरी की आहट थी। उस चॉकलेट की कड़वाहट में उसकी तड़प। और उस चुप्पी में... वीर खुद घुल गया था।

उनके बीच आज भी कोई सामाजिक रिश्ता नहीं था...

कोई वादा, कोई नाम, कोई तस्वीर नहीं।

फिर भी...

एक लड़की ने केक और चॉकलेट में अपना दिल भेजा,

और एक लड़का... उस मिठास में खुद को खो बैठा।

उसने वो पैकेट भेजा था बस एक उम्मीद में कि वीर कुछ कहेगा, कुछ बोलेगा, लौट आएगा... शायद एक हल्की सी "thank you" भी, या फिर वही पुरानी कोई शायरी... एक लफ़्ज़ भी होता, तो बहुत था।

मगर वीर ने... कुछ नहीं कहा।

न कॉल, न मैसेज, न स्टोरी, न रील।

बस एक गहरी, भारी ख़ामोशी।

गौरी हर रात उस एक कॉल को उम्मीद से देखती थी। हर बार लगता, "शायद आज..." पर हर बार स्क्रीन पर वो ही चुप्पी होती, और

दीवार पर वीर की भेजी पुरानी शायरी की वह तस्वीर टंगी रहती "कभी-कभी चुप रह जाना, सबसे ऊंचा चीखना होता है..."

अब वही लाइन उसे चुभने लगी थी।

उस रात गौरी छत पर बैठी थी। सर्दी थोड़ी तेज़ थी, आसमान में बादल तैर रहे थे, और चाँद अधूरा था, ठीक उसके मन की तरह। उसने फोन उठाया, इंस्टाग्राम खोला। वीर की प्रोफाइल अब भी वैसी ही थी।

कोई नई पोस्ट नहीं। बायो में वही लाइन "कुछ लफ़्ज़ अनकहे रह गए हैं..." गौरी ने स्क्रीन को लंबा देखा... फिर फोन बंद कर दिया।

उसकी आँखें भर आईं।

"मैंने सोचा था, मिठास भेजूँगी तो वो पिघल जाएगा..."

"पर शायद कुछ दिल इतने जमे हुए होते हैं कि उनसे आँखें भी नहीं बहतीं..."

वो धीरे-धीरे उठी, और छत के एक कोने में बैठ गई। उसके पास वो डायरी थी, जिसमें वो वीर के लिए हर वो बात लिखती थी जो वह कह नहीं पाती थी।

उसने आज लिखा "मैंने केक में वो सारी बातें भर दी थीं

जो आपसे कह नहीं पाई थी। आपने खाया भी होगा, मगर जवाब नहीं आया। शायद आप वो शख़्स हो जिससे मोहब्बत करना तो मुमकिन है, मगर उसे समझा पाना नहीं…”

रात के किसी पहर, जब आसमान और भी गहरा हो गया,

गौरी ने वीर का चैट बॉक्स खोलकर बस एक लाइन लिखी “उसके बाद अगर खामोशी ही है, तो शायद अब मुझे भी खामोश रहना चाहिए…”

लेकिन उसने भेजा नहीं। बस इतना किया “Seen” देखा… और फोन रख दिया।

अब बातें नहीं थीं, पर जज़्बात अब भी वहीं थे क्योंकि जब मोहब्बत सच्ची होती है, तो जुदाई में भी उसका नाम सांसों में गूंजता रहता है…

दिन ढलते गए, महीने बीत ते गए। पर गौरी की यादें यूं की यूं ही उसके साथ जुड़ी थी। रात को वीर नीम के पेड़ के नीचे खाट पर नींद के इंतज़ार में चाँद को देखते हुए बस गौरी के ख्यालों को सिरहाना बनाए हुए लेटा रहा। गौरी की कुछ स्मृतियाँ जुगनूं बन वीर के आस पास उतर आई जो हर जगते जुगनू के साथ वीर को गौरी में समेटे जा रही थी। ये जगमगाते हुए तारे भी वीर को बहुत सी बातें कह रहे थे जो ये दोनों कर नहीं पाए थे और अपने बस दिलों में रखे हुए थे।

वीर समझ चुका था कि गौरी के बिना वीर का कोई संसार नहीं है और गौरी जिसने वीर के लिए कोई मंदिर नहीं छोड़ा था। उसकी आस्था और प्रेम वीर को हिम्मत दिलाकर वापस उसके पास ले आए थे। वीर में हिम्मत थी समाज के इन ढकोसलों से लड़ने के लिए।

"जिसे छोड़ आए थे हम मजबूरी में कभी, आज फिर उसी मोड़ पर मिलने की चाह है। न सवाल रहेगा, न जवाब दे पाएंगे , बस एक बार, हाथ थाम लेंगे ताउम्र के लिए।"

वीर का वापस आना गौरी के लिए मुर्दे में साँसे फूँक कर उसमे प्राण वापस डालने के समान था। गौरी जो बस एक आस के साथ बस ज़िंदा थी वो ख़ुश रहने लगी फिर से वीर के साथ। गौरी जो बस वीर को ही अपने प्राण मान चुकी थी और वीर के साथ जीवन पर्यन्त तक रहना चाहती थी। गौरी के ये सारे भाव वीर भली भांति जानता था तो उसने गौरी की तस्वीर अपनी माँ के समक्ष रखी। वीर जानता था ये उसके परिवार के लिए आसान नहीं होगा समाज के ख़िलाफ़ जाना पर उसने फिर भी गौरी के लिए ये कदम उठाया। माँ को ठीक लगा की वीर ने पसंद की है तो पर जब उन्हें पता लगा की ये जाटों के घर में एक ब्राह्मण लड़की का घर वासा समाज को मंजूर नहीं होगा। पर उन्होंने बेटे की खुशी के लिए तो हाँ कर दी थी पर पारिवारिक और सामाजिक जीवन में उठने वाले तुफ़ान का भी पूर्ण ज्ञान था।

रात गहरी थी, लेकिन खामोश नहीं। जैसे आसमान भी किसी मीठे राज़ से मुस्कुरा रहा हो। खिड़की से आती चाँदनी कमरे के हर कोने में बिखरी थी, पर उस समय गौरी के दिल में जो उजाला था, वो चाँदनी से कहीं ज़्यादा साफ़ और रोशन था।

मोबाइल की स्क्रीन पर सिर्फ कुछ शब्द चमक रहे थे “मैंने माँ से बात कर ली है... मैंने उन्हें तुम्हारे बारे में सब बताया। मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ, गौरी ... पूरी दुनिया के सामने, पूरे गर्व से। माँ चुप रहीं कुछ देर, फिर बस इतना कहा “अगर तुम खुश हो तो मैं भी खुश हूँ।”

पढ़ते ही जैसे समय थम गया। उंगलियाँ वहीं रुक गईं, आँखें उस स्क्रीन पर जमी रहीं... और दिल, वो तो जैसे हवा में तैरने लगा।

एक अजीब सी सिहरन उसकी पीठ से होकर गुज़री। ऐसा लग रहा था जैसे कोई अधूरी तलाश पूरी हो गई हो, जैसे किसी अनसुनी दुआ ने आज जाकर खुदा के दर से मंज़ूरी पाई हो।

उसकी आँखों में आँसू आ गए, पर वो आँसू दर्द के नहीं थे, वो उन लम्हों के थे जो उसने चुपचाप जी लिए थे, उन सपनों के जो उसने अपनी पलकों के नीचे छुपा रखे थे, और उस यकीन के जो वो बार-बार खुद से हारने के बावजूद कभी मरा नहीं था।

गौरी सोचने लगी "क्या कोई मुझे इतना चाहता है कि उसने अपनी माँ से मेरी बात कर ली? क्या कोई मुझे इस कदर अपनाना चाहता है कि वो मुझे अपने नाम से जोड़ने की बात कर रहा है? क्या मेरी जगह अब सिर्फ किसी के दिल में नहीं, उसके घर में भी बन रही है?"

वो उठी, कमरे में टहलने लगी। एक पल को मुस्कुराई, फिर रुक कर आईने में खुद को देखा। पहली बार उसे लगा कि वो सिर्फ एक लड़की नहीं रही, वो किसी की ज़िंदगी की वजह बन चुकी है।

उसने बाबा की तस्वीर के सामने जाकर दीप जलाया। उसकी आवाज़ काँप रही थी, पर मन ठहरा हुआ था।

"बाबा ... आज पहली बार मुझे लगा कि मैं सिर्फ तुम्हारी नहीं, किसी और की भी हूँ। और वो कोई है जो मेरे लिए दुनिया से लड़ेगा, जो मेरी परछाई को भी अपनाएगा।"

कमरे की दीवारों में अब सन्नाटा नहीं था, अब वहाँ उस ख़ुशी की गूँज थी जो शब्दों से नहीं, दिल से निकलती है।

वो फिर पलंग पर बैठी, मोबाइल दोबारा खोला, वीर का मैसेज फिर से पढ़ा, जैसे कोई कविता हो जिसे बार-बार पढ़ने का मन करे। उसने आँखें बंद कीं और उस एक पल में खुद को उसके पास महसूस किया, उसके शब्दों की गर्मी को अपने गालों पर महसूस किया।

वो रात अब सिर्फ एक रात नहीं थी, वो उसकी ज़िंदगी की सबसे खूबसूरत शाम बन गई थी। एक नई सुबह के पहले गीत जैसी। एक ऐसी शुरुआत, जिसे सोचते ही आँखें भर आएँ और दिल कहे

"शुक्र है... मोहब्बत ज़िंदा है।"

जब उसने माँ से मेरा नाम लिया,

सपनों ने आँखों में जाम लिया।

जिस दिल में सिर्फ़ सिसकियाँ थीं,

उसने पहली बार सुकून थाम लिया।

ख़ामोश लबों ने दुआ माँगी थी,

वक़्त ने जैसे वो बात जान ली थी।

उसने कहा"मैं तुझसे शादी चाहता हूँ",

और माँ ने भी ख़ुशी पहचान ली थी।

ना शहनाई थी, ना सजी महफ़िल,

पर उस पल दिल में थी एक हलचल।

एक चुप मुस्कान थी होंठों पे,

और आँखों में बस थी एक हल्की सी जलजल।

दीवारों से टकरा के लौटे थे अरमान,

आज उन्हें मंज़िल का रास्ता मिल गया।

वो जो नाम सिर्फ़ दिल में था अब तक,

किसी माँ की दुआओं में भी खिल गया।

जब उसने माँ से मेरा नाम लिया,

उसने मेरे ख्वाबों को अंजाम दिया।

ये सिर्फ़ इश्क़ नहीं, एक सौगंध थी,

जिसे उसने मेरे लिए तमाम किया।

गौरी ने भी अपने घर बताने का निर्णय कर लिया। गौरी का मन जैसे दो किनारों के बीच झूल रहा था। एक तरफ़ प्रेम, तो दूसरी तरफ़ माँ की चिंता। क्या माँ समझेंगी? क्या वो नाराज़ होंगी? या शायद... चुप रह जाएँगी?

लेकिन आज उसका दिल पहली बार बहुत स्पष्ट था। उसने तय कर लिया कि अब और छुपाना नहीं। अब मैं भी माँ से कहूँगी।

उसने आईने में खुद को देखा। वो लड़की जो अब तक डरती रही, आज उसकी आँखों में कुछ अलग था "हौसला"। होंठ थोड़े सूखे थे, लेकिन शब्द अब भीतर से फूटने लगे थे।

शाम का धुंधलका, माँ तुलसी के चौरे के पास बैठी है। गौरी धीरे-धीरे पास आती है।

गौरी(धीमे स्वर में): माँ... एक बात कहनी है तुमसे... कुछ ज़रूरी है।

माँ (बिना देखे तुलसी में जल चढ़ाते हुए): कहो बिटिया, क्या बात है?

गौरी (हिचकिचाते हुए): वो... वो लौट आया है माँ। वही... जो कभी गया था बिना कुछ कहे।

माँ (पलट कर देखती है, आँखों में सवाल): कौन लौट आया है?

गौरी(धीरे से): वही माँ... वीर।

माँ (कठोर स्वर में): उसका नाम मत लो मेरे सामने।

गौरी (आँखों में आँसू): माँ, वो बदल गया है। अब डरता नहीं समाज से। कहता है, सबके सामने खड़ा रहेगा... सिर्फ़ मेरे लिए।

माँ (कटाक्ष से): तो अब तुम्हें भी वही प्यार याद आने लगा? तब तो रोता हुआ बिना कुछ बताये वह तुम्हें छोड़कर भाग गया था... और अब जब सब कुछ थोड़ा सँभला है, तो फिर से वो?

गौरी (गिड़गिड़ाते हुए): माँ, वो मजबूर था। उसकी जात अलग थी... उसका परिवार... सब कुछ उलझा था। लेकिन अब... अब वो सब कुछ छोड़कर आया है। बस मेरे लिए।

माँ (गुस्से में): और क्या तुमने समाज को देखा है? जिस जात की लड़की होती है, अगर वो अपनी मरज़ी से शादी करे, तो घरवालों को कैसे जलाया जाता है, तुम जानती हो?

गौरी (काँपती आवाज़ में): जानती हूँ माँ। लेकिन मैं अब डरना नहीं चाहती। मैं अब उसी से शादी करना चाहती हूँ।

माँ (आँखें डबडबाती हैं, लेकिन चेहरा कठोर बना रहता है): मैं तुम्हारी माँ हूँ, दुश्मन नहीं। पर बेटी, जात की लकीर को मिटाना आसान नहीं होता। समाज उस लड़के को नहीं, तुम्हें मिटा देगा। और मैं... मैं तुम्हारी चिता नहीं देख सकती।

गौरी (धीरे से माँ का हाथ पकड़ती है): तो क्या माँ, हम हमेशा डरते ही रहेंगे?

माँ (धीरे से हाथ छुड़ाती है): डरते नहीं, समझदारी से जीते हैं और मेरी समझ कहती है, ये रिश्ता तुम्हारे लिए नहीं है।

गौरी (गहरे दर्द में): तो तुम्हारा फैसला आख़िरी है?

माँ (धीरे से सिर झुकाकर): हाँ। और मेरा मन कहता है, ये चोट भले आज लगे... पर एक दिन तुम इसका मतलब समझोगी।

गौरी वहीं खड़ी है, माँ के शब्द हवा में तैरते हुए उसकी साँसों से टकरा रहे हैं। उसके चेहरे पर आँसू बह रहे हैं, पर आँखों में पहली बार एक अजीब-सी जिद है

गौरी (अपने आप से बुदबुदाती है): तो यही है माँ का जवाब... डर, समझदारी, समाज... पर माँ, इस बार मैं ख़ुद को खोकर किसी की 'समझदारी' नहीं बन सकती।

(वह तुलसी के पास जाकर बैठ जाती है, जहाँ अभी माँ जल चढ़ा रही थी। हाथों में चूड़ियाँ काँप रही हैं, लेकिन उसका स्वर अब स्थिर है)

गौरी (आसमान की ओर देखकर): बाबा ... आप तो हमेशा कहते थे, "सच्चा प्यार डरता नहीं"। तो आज अगर मैं डर गई, तो क्या सच में मैं आपकी बेटी कहलाऊँगी?

(वह खड़ी होती है, और भीतर जाती माँ की ओर देखती है)

गौरी (आवाज़ ऊँची करके, लेकिन शांत लहजे में): माँ!

(माँ ठिठककर रुकती है, पर पीछे नहीं मुड़ती)

गौरी (आँखों में आँसू, लेकिन स्वर में दृढ़ता): अगर मैं चुप रही, तो हमेशा पछताऊँगी। शायद आपको मेरी बात आज गलत लगे, पर माँ... जिसे मैंने अपनी हर साँस में जिया है, अगर आज उसे छोड़ दिया... तो फिर हर रिश्ता, हर परंपरा, मेरे लिए बस एक जेल बन जाएगी।

(माँ अब भी चुप है, लेकिन उसकी पीठ कुछ काँपी है)

गौरी (धीरे से, भावुक होकर): आपकी परवरिश ने मुझे झुकना सिखाया था, माँ। लेकिन आप ही ने ये भी सिखाया था कि जहाँ बात आत्मा की हो... वहाँ चुप रह जाना पाप होता है।

(वह कुछ क्षण चुप रहती है, फिर धीमे कदमों से घर के बाहर की ओर बढ़ती है)

गौरी (आख़िरी बार मुड़कर माँ की ओर देखकर): मैं भाग नहीं रही माँ... मैं बस अपने हिस्से की लड़ाई लड़ने जा रही हूँ।

गौरी अँधेरे कमरे की ओर बढ़ती है, आँसू उसके चेहरे पर हैं, लेकिन चाल में पहली बार आत्मविश्वास है।

कमरे में सन्नाटा है, बस दीवार घड़ी की टिक-टिक और गौरी की साँसों की गूँज है। वह चुपचाप बैठी है, अंदर कुछ टूटा हुआ है और कुछ बन रहा है।)

गौरी (मन में सोचती है): क्या मैं सच में ग़लत हूँ? माँ कहती है, ये रिश्ता समाज नहीं मानेगा... पर समाज कब किसी के लिए रुका है?

गौरी(मन में): आप वापस क्यों आए वीर? जब आपका जाना मुझे तोड़ गया था, तो अब लौटकर मेरी टूटी हुई साँसों में उम्मीद क्यों भर दी?

(वह उठकर आईने के सामने खड़ी होती है – खुद से आँखें मिलाने की कोशिश करती है)

गौरी (आँखों में खुद से सवाल करते हुए): अगर मैं उसे चुनती हूँ, तो क्या मैं माँ की नाफ़रमानी कर रही हूँ? या मैं वो लड़की बन रही हूँ, जो पहली बार अपने लिए खड़ी हो रही है?

(बाहर से किसी बारात के ढोल की हल्की आवाज़ आ रही है जैसे समाज उसके कानों में अपने नियमों की गूंज कर रहा हो)

गौरी (खुद को समझाते हुए): हर बार ये ढोल किसी और की ज़िंदगी तय करते हैं, किसी और के नाम की चूड़ियाँ पहनाते हैं... पर इस बार मैं अपना नाम खुद चुनना चाहती हूँ।

(वह धीरे से अपनी चूड़ियों को देखती है – फिर कंगन उतारकर मेज़ पर रख देती है, जैसे किसी बोझ को हटा रही हो)

गौरी (धीमे स्वर में): मैं डरती हूँ माँ... पर मैं झुकना नहीं चाहती। वीर मेरा डर नहीं, मेरी ताक़त है।

(वह फिर से चारपाई पर बैठ जाती है, एक कोना पकड़कर रोती है पर वो रोना हार का नहीं, भीतर के तूफ़ान का हल्का होना है।)

गौरी (फुसफुसाकर): अगर ये लड़ाई है... तो मैं तैयार हूँ... अपने प्यार के लिए... खुद के लिए...

कमरे की दीवारें उसकी सोच से थरथरा रही हैं, पर पहली बार गौरी के मन में एक स्पष्ट रौशनी है जैसे अंधेरे में चुपचाप उगता हुआ सूरज।

पिछले दो दिन से वीर की चुप्पी गौरी को बेचैन किए जा रही थी। न कोई शायरी, न कोई आवाज़, न ही वो भारी सी आवाज़ जिसमें वह सिर्फ "हम्म" कहता था, लेकिन गौरी को लगता था जैसे सौ बातें कह दी हों।

शुरुआत तो छोटी सी थी।

गौरी ने बस मज़ाक में कहा था "आप चुपचाप रहते हो, जैसे किसी पहाड़ी पर ध्यान लगा रहे हो।" वीर ने बस "हम्म…" कहा और फिर अचानक चुप हो गया। गौरी ने वो चुप्पी महसूस की थी। जानती थी कि वीर दिल से सुनता है, और कभी-कभी मज़ाक भी दिल पर ले लेता है।

अब दो दिन हो चुके थे। कोई कॉल नहीं, कोई टेक्स्ट नहीं। उसकी प्रोफ़ाइल तक पर वीर ने कोई शायरी नहीं डाली थी। वो वीर, जो चुप रहकर भी बहुत कुछ कह जाता था। अब सच में ख़ामोश हो गया था।

गौरी कमरे में चुप बैठी थी, फोन बार-बार देख रही थी।

हर बार जब नोटिफिकेशन की ट्यून बजती, वो जैसे दौड़कर देखती "शायद वीर..." पर फिर वही, कोई meme ग्रुप, कोई random status। तभी एक ख्याल आया "वो चॉकलेट केक... जिसे उसने पहली बार वीडियो कॉल पर देखकर कहा था, मुँह में पानी आ गया।" गौरी को जैसे अपनी गलती पर पछतावा भी हुआ और एक उम्मीद भी जागी।

उसने फौरन फोन उठाया, Zomato खोला, वीर के पते पर एक rich chocolate truffle cake ऑर्डर किया।

साथ में एक छोटा सा मैसेज टाइप किया:

"अगर चुप रहना आपका तरीका है,

तो ये मेरी मिठास भरी माफ़ी है।

आ जाओ ना वापस...

आपकी बातों की बहुत भूख लगी है।"

इतना लिखने के बाद वो पेमेंट पेज पर पहुँची... फिर न जाने क्या सोचकर जल्दी में "Cash on Delivery" सिलेक्ट कर लिया। शायद ध्यान नहीं रहा था।

वीर ऑफिस में बैठा था। एक कॉल आता है कि उसका कुछ समान आया है बाहर। बाहर जाकर देखा तो एक डिलीवरी बॉय हाथ में सुंदर सा केक लिए खड़ा था।

"सर, आपका ऑर्डर है। COD है... 650 रुपये।"

वीर ने एक पल उसे देखा, फिर पैकेट पर नजर पड़ी

Sender: Gauri

एक हल्की सी मुस्कान होंठों पर आकर छिप गई।

वीर ने पूछा, "Payment method?"

"Cash on delivery, sir."

वीर ने माथा पीट लिया "वाह रे मोहब्बत... मिठास भी भेजी, और बिल भी मेरे नाम कर दिया।"

उसने पैसे दिए, केक लिया। अंदर आते ही उसने पैकेट खोला। वही केक, वही पुरानी पसंद। साथ में वो छोटा सा नोट भी था। "आपकी बातों की बहुत भूख लगी है..."

वीर ने कुछ देर तक स्क्रीन को देखा।

फिर टाइप किया: "प्यार तो अच्छा भेजा है, पर बिल मेरे नाम क्यों कर दिया?" गौरी उधर फोन पर थी, जैसे ही मैसेज देखा, जोर से हँस पड़ी। वो हँसी जो दिल से निकलती है, ग़लती की शर्म के साथ मासूमियत से भरी।उसने तुरंत टाइप किया "अरे यार! जल्दी में बस Send कर दिया... Payment रह गया!" पर देखो ना, दिल से भेजा था... और आपने ले भी लिया..."

वीर ने फिर लिखा "मतलब अब हर बार दिल भी मैं खोलूं, जेब भी मैं?"

गौरी ने हँसते हुए एक स्क्रीनशॉट भेजा Paytm QR कोड का।

“अब से सारा पेमेंट एडवांस में होगा, Boss!”

वीर ने एक सेल्फी भेजी, केक का एक टुकड़ा खाते हुए।

“चलो, मीठा अच्छा था… पर अगली बार मिठास के साथ थोड़ा अक्ल भी भेज देना।”

गौरी की आँखों से हँसी के साथ कुछ आँसू भी निकल आए।

कभी-कभी रिश्तों में ग़लती इतनी प्यारी होती है कि वो दूरियाँ कम कर देती है… और सिर्फ मुस्कुराहट छोड़ जाती है।

ये सिलसिला मनाने का यूही चलता रहा पर मान नहीं रहें गौरी के घरवालें। इसी बीच गौरी का जन्मदिवस आ गया। जन्मदिवस पर गौरी से मुलाक़ात तो बनती ही थी। गौरी के जन्मदिन वाले दिन वीर तैयार था अपने मित्रगणों को लेकर एक सफ़र करते हुए गौरी के आग़ोश में जाने के लिए। बस वो सुकून के पल ढूँढने के लिए जो सिर्फ़ गौरी के स्पर्श से मिल सकते है। गौरी को भी बेसब्री से इंतज़ार है कि कब वीर आकर उसे अपने दिल से लगाकर ये कहे कि रोया मत कर, मैं हूँ ना हमेशा तेरे साथ में। वक़्त जो कभी किसी के लिए नहीं रुकता, वो आज गुज़र ही नहीं पा रहा था।

वीर ने अपने दोस्तों से कहा, "तैयार हो जाओ, आज हम हर हाल में गौरी का जन्मदिन मनाने जाएंगे।" उसकी आवाज़ में एक अजीब सी उम्मीद थी, जैसे पूरी दुनिया को ललकार रहा हो। वे सब सुबह के सात बजे निकलने के लिए तैयार थे। वीर ने कार का इंजन स्टार्ट किया और रास्ते की ओर बढ़े।

वीर की कार की गूंजती आवाज़ के साथ उसकी धड़कनें भी तेज़ हो रही थीं। उस दिन का सूरज भी जैसे धीरे-धीरे उग रहा था, हर किलोमीटर के साथ वीर का दिल और तेज़ धड़क रहा था। उसके दोस्तों ने बिन चिढ़ाए उसका साथ दिया, क्योंकि सब जानते थे कि इस दिन के लिए वीर ने जितना सोचा था, उतना ही दिल से तैयार था।

“क्यों रे वीर, क्या ये 200 किलोमीटर दूर जाकर भी गौरी को सरप्राइज़ देगा?” एक दोस्त ने मजाक करते हुए पूछा। वीर मुस्कराया, और कहा, "कुछ तो खास करना है यार, गौरी तो जानती है कि मैं क्या कर सकता हूं।"

हवा की ताजगी और रास्ते के खुलने के साथ वीर की गाड़ी की रफ्तार बढ़ी, जैसे उसके अंदर एक नई उमंग दौड़ने लगी थी। हरे-भरे खेत, चलते हुए लोग, और गांवों के छोटे-छोटे दृश्य जैसे अपनी ही कहानी बयां कर रहे थे। यह रास्ता किसी कविता की तरह था, जिसमें हर मोड़ पर कुछ नया था, जैसे वीर का दिल कभी डर, कभी खुशी, और कभी ग़म के बीच झूलता हो।

“याद है तेरे पुराने गाने, जो तू गौरी के लिए गाता था?” दोस्त ने पूछा। वीर हंसा, और कहा, “अब तो बस एक ही गाना है, गौरी के बिना दुनिया सुनसान लगती है।”

हर एक पल के साथ वीर का ध्यान केवल गौरी पर था। वह सोच रहा था कि जब गौरी उसे देखेगी, तो उसकी आंखों में वही चमक होगी जो हमेशा उसे प्रेरित करती थी। कार की खिड़की से बाहर देखकर, उसने सोचा, ‘200 किलोमीटर की दूरी, कुछ नहीं है अगर वो मिल जाए।’

उसका दिल ये मान चुका था कि प्यार में दूरी कोई मायने नहीं रखती। ये सफर बस उसे और गौरी को जोड़ने का रास्ता था, और हर एक किलोमीटर के साथ वीर की उम्मीदें और बढ़ती जा रही थीं।

वीर ने अपनी कार धीमी गति से रेस्टोरेंट की पार्किंग में घुमाई। वह गाड़ी खड़ी करते हुए हर एक पल महसूस कर रहा था। सड़क पर ट्रैफिक था, लेकिन जैसे ही उसने रेस्टोरेंट की पार्किंग के सामने कार रोकी, उसे ऐसा लगा जैसे उसकी धड़कन थम सी गई हो। उसके दिल में एक हलचल थी। यह पहला मौका था जब वह गौरी से मिल रहा था, और वो भी उसके जन्मदिन पर, वह भी 200 किलोमीटर का रास्ता तय करके।

वीर ने गाड़ी का इंजन बंद किया और घड़ी की ओर देखा दस बजने वाले थे। अब उसे बस गौरी का इंतजार था, जो अभी रास्ते में थी।

उसने दरवाजे से बाहर झाँका, रेस्टोरेंट के गेट को देखा, और फिर एक लंबी गहरी साँस ली। दिल में एक अजीब सी बेचैनी थी। क्या वह सही समय पर पहुँच पाएगी? क्या उसने कभी सोचा था कि वह यहाँ आकर उसे इतना खास महसूस कराएगा?

वीर(मन में): *"अगर उसने मुझे देखा तो क्या वह खुद को सच में खुश महसूस करेगी?"*

उसने अपने बालों को हल्का सा संवारते हुए कार का दरवाज़ा खोला और बाहर खड़ा हो गया। उसके मन में सिर्फ एक ही ख्याल था "क्या वह आ रही होगी? क्या वह अब तक तैयार हो पाई होगी?"

गौरी अपनी आँखों में उस खास दिन की उम्मीद और दिल में वीर के आने का इंतजार करती हुई रेस्टोरेंट की ओर बढ़ रही थी। इस दिन के

लिए उसने कई दिन पहले से खुद को तैयार किया था। सफ़ेद ड्रेस और चोटी में बंधे बाल, आँखों में थोड़ा सा काजल और होठों पर हौसला, जैसे पूरी ज़िन्दगी उसके सामने थी। उसकी मुस्कान में हल्की सी घबराहट थी, लेकिन दिल में एक धड़कन, जो उसे वीर के पास पहुँचने का एहसास दिला रही थी।

गौरी (मन में): *"क्या सच में वह आएगा? 200 किलोमीटर की दूरी! उसने कहा था कि वह आएगा, तो क्या वह सच में यहाँ होगा?"*

रास्ते में कार का ट्रैफिक थोड़ा ज्यादा था, लेकिन गौरी का दिल जैसे हर पल तेज़ी से धड़क रहा था। वह जितनी जल्दी हो सके रेस्टोरेंट पहुँचने के लिए कार चला रही थी, लेकिन सड़क पर गाड़ी की धीमी रफ्तार से उसकी बेचैनी बढ़ रही थी।

वीर ने रेस्टोरेंट के गेट को एक बार फिर से देखा। अब घड़ी में दस बजकर पच्चीस मिनट हो चुके थे। उसने गहरी सांस ली और फिर से पार्किंग की ओर ध्यान दिया। उसकी निगाहें बार-बार गेट की ओर जा रही थीं, जैसे उसकी सारी उम्मीदें वहीं से जुड़ी थीं।

वीर (मन में): *"मैंने इतना इंतजार किया... अब मुझे वो पल चाहिए। जब वह मेरी आँखों में देखे और कहे, 'तुम सच में आए थे।'"*

उसने अपनी जैकेट ठीक की, बालों को और संवारने की कोशिश की। धीरे से अपने मोबाइल की स्क्रीन को टटोलते हुए, वह गौरी से एक बार फिर संपर्क करने के बारे में सोचने लगा, लेकिन फिर खुद

को रोक लिया। वह जानता था कि अब उसे सिर्फ़ इंतजार करना था। कुछ देर और — और फिर वह सामने होगी। वह पल, जिसका वह सपना देख रहा था, बस आने ही वाला था।

अब पार्किंग में एक खामोशी थी, लेकिन वीर के दिल में हलचल थी। और फिर, अचानक उसकी नजरें सड़क के मोड़ पर पड़ीं। गौरी आती हुई दिखी। उसकी आँखों में चमक आई।

गौरी की गाड़ी पार्किंग में आई,उसकी आँखों में एक हल्की मुस्कान उभरी। वह गाड़ी से बाहर निकली, और उसकी आँखों में वही इंतजार, वही सुकून था जो वीर के दिल में था। वह धीरे-धीरे उसके पास बढ़ी।

वीर (आगे बढ़ते हुए): "गौरी ... तुम सच में आ गई?"

गौरी ने सिर झुकाया और फिर धीरे से मुस्कुराते हुए, अपनी आँखों में आंसू लिए हुए, कहा "आप भी... आप सच में आए हो।"

दोनों एक-दूसरे के सामने खड़े थे। वीर ने उसे थोड़ा और करीब किया, और दोनों ने एक दूसरे को देखा जैसे पूरा जहां रुक गया हो। सिर्फ़ उनका प्यार और वह खास पल था।

वीर: "तुम्हारे बिना सब कुछ अधूरा था, और आज, जब तुम मेरे सामने हो, तो लगता है कि ज़िन्दगी पूरी हो गई है।"

गौरी (धीरे से, मुस्कुराते हुए): "मैंने कभी नहीं सोचा था कि आप मुझे इतने दूर से आकर मिलोगे। लेकिन आज आप यहाँ हो, और मुझे ऐसा लग रहा है कि हर लम्हा खूबसूरत है।"

दोनों एक-दूसरे के करीब आ गए, और रेस्टोरेंट के बाहर की हल्की सी बत्तियाँ जैसे उनके मिलन की रोशनी को और बढ़ा रही थीं। यह सिर्फ़ एक जन्मदिन नहीं था, बल्कि दो दिलों के मिलन की शुरुआत थी। वीर के मन में एक बात आई जो उसने गौरी को निहारते हुई कही

"तेरी आँखों में फिर से वही ख़्वाब देखा,

बरसों के बाद तुझे बेहिसाब देखा।

तेरी मुस्कान में छुपा था मेरा सुकून,

तेरे आने से फिर से बेहिसाब देखा।

तेरे बालों की ख़ुशबू से महक उठी फ़िज़ा,

तेरे लबों पर प्यार का गुलाब देखा।

वक़्त भी शर्माया, थम गया पलकों पे,

जब तुझे अपनी बाहों के पास देखा।"

वीर और गौरी अपने दोस्तों के साथ रेस्टोरेंट में बैठे थे। पूरा माहौल खुशियों से भरपूर था, हंसी-मज़ाक की आवाज़ें गूंज रही थीं, और हर कोई उत्साहित था। सामने एक खूबसूरत सा केक रखा था, जो काजू

से सजा हुआ था। वीर ने गौरी की ओर देखा और उसकी आंखों में प्यार और चिंता दोनों थे।

"गौरी, तुम्हारा केक," वीर ने मुस्कुराते हुए कहा। गौरी ने थोड़ा हिचकते हुए केक की ओर देखा। वह काजू को बिलकुल भी नहीं पसंद करती थी, लेकिन वीर का प्यार और दया उसे हर बार अलग तरह से महसूस कराती थी।

वीर ने बड़े प्यार से केक का पहला टुकड़ा उठाया और गौरी के पास बढ़ाया। गौरी ने हल्के से मुस्कुराते हुए एक निगाह वीर की ओर डाली। उसने काजू को थोड़ा सा नज़रअंदाज़ करते हुए, धीरे-धीरे केक का टुकड़ा लिया और मुंह में डाल लिया। हर कौर के साथ उसकी आँखों में एक अजीब सा अहसास था, जैसे वीर के प्यार में सारा संसार समा गया हो।

गौरी को काजू नहीं पसंद थे। इस बात से अंजान वीर गौरी को और खिलाता जा रहा था। वीर की मुस्कान और गहरी हो गई, और उसने एक और चम्मच केक का टुकड़ा गौरी को दिया। "अब ये केक तुम्हारे बिना अधूरा है," वीर ने कहा, और गौरी ने बिना किसी हिचकिचाहट के एक और टुकड़ा लिया।

दोनों के बीच चुप्पी थी, लेकिन वह चुप्पी कुछ कह रही थी "एक ख़ामोशी", जो शब्दों से कहीं गहरी थी। गौरी ने वीर के साथ बिताए हर पल को अपनी धड़कनों में समेट लिया था, और वीर की आँखों में वह प्रेम था जो उसकी आत्मा को छू रहा था।

दोस्ती के बीच, एक जश्न की तरह केक काटते हुए, दोनों ने महसूस किया कि हर छोटी बात, हर छोटी खुशी, एक-दूसरे के साथ ही तो पूरी होती है।

शाम गहराने लगी थी। रेस्टोरेंट की रोशनी अब थोड़ी मद्धम हो चुकी थी, और बाहर हल्की ठंडी हवा चल रही थी। पार्टी खत्म हो चुकी थी, दोस्त एक-एक करके अलविदा कहने लगे। पर वीर और गौरी अब भी बाहर खड़े थे। उनके बीच एक ख़ामोशी थी, जो बोलती नहीं थी, मगर सब कुछ कह जाती थी।

गाड़ी स्टार्ट हो चुकी थी, दोस्त पीछे बैठे इंतज़ार कर रहे थे, पर वीर का मन अभी वहां से जाने को तैयार नहीं था। गौरी भी चुपचाप खड़ी थी, अपने दुपट्टे की किनारी मरोड़ते हुए।

"चलूं?" वीर ने धीमी आवाज़ में पूछा, जैसे हर शब्द उसे अपने दिल से तोड़कर कहना पड़ रहा हो।

वीर ने उसकी ओर देखा, कुछ पल बस उसे निहारता रहा। "थोड़ा और रुक सकती हो?" उसने पूछा।

गौरी मुस्कराई, वो मुस्कान जो आधे प्यार की थी और आधे विदाई की। "अगर रुकना मेरे बस में होता तो मैं यहीं ठहर जाती," उसने कहा।

वीर ने धीरे से उसका हाथ थामा, भीड़ के बीच, दोस्त पास ही थे, पर उस एक पल में जैसे सारी दुनिया सिर्फ उन दोनों की थी।

“अच्छा चलो,” वीर ने कहा, “एक आखिरी बार तुम्हें देखकर जाने दूं… ताकि अगली मुलाकात तक ये चेहरा याद रहे।”

गौरी ने उसकी आंखों में देखा, वो आंखें जो सब कह देती थीं, बिना कुछ कहे। फिर वह धीरे से मुस्कराई, और कहा, “संभालो अपने आप को... मैं हूँ ना, बस थोड़ी दूर।”

वीर ने सर हिलाया, और एक कदम पीछे हटते हुए उसकी तरफ फिर देखा, जैसे किसी अनमोल चीज़ को आंखों में समेट लेना चाहता हो।

गौरी मुड़ी, और धीरे-धीरे अपनी गाड़ी की ओर बढ़ने लगी। वीर वहीं खड़ा रहा, जब तक वो नजरों से ओझल नहीं हो गई।

फिर उसने गाड़ी का दरवाज़ा खोला, बैठा, और एक लंबी सांस लेते हुए कहा “कुछ लोग जाते नहीं... बस थोड़ी देर के लिए छुप जाते हैं दिल में।”

गाड़ी आगे बढ़ गई, लेकिन पीछे एक खामोश दुआ छोड़ गई… अगली मुलाकात की।

गौरी अपनी फेवरेट playlist के साथ बैठी वीर की प्रोफ़ाइल देख रही थी। हर स्टोरी, हर लाइक, हर फॉलोइंग को वो ध्यान से देखती है। बस ऐसे ही… बिना वजह। या शायद… वजह बहुत बड़ी है, उसका नाम “प्रिया सिंह”।

गौरी (मन में): “ये लड़की कौन है? कोई mutual नहीं, ना उसकी किसी पोस्ट पर वीर ने कभी react किया, फिर क्यों है ये उसकी फॉलोइंग में? और सबसे अजीब बात, वीर ने कभी उसका ज़िक्र भी नहीं किया।”

गौरी तुरंत वीर को मैसेज भेजती है:

गौरी: “आपकी following list में ‘Priya Singh’ कौन है?”

वीर कुछ देर तक reply नहीं करता। फिर एक सादा सा जवाब आता है:

वीर: “Ohh… बस एक जान-पहचान की है। क्यों?”

गौरी: “जान-पहचान मतलब? कभी बताया भी नहीं आपने।”

वीर: “अरे नहीं यार, कोई खास बात नहीं। तूने खाना खाया?”

गौरी की भौंहें सिकुड़ जाती हैं। उसे पता है कि वीर ने बात घुमा दी है।

गौरी (अपने आप से): “आप हमेशा ऐसे ही करते है वीर… जब मैं सीधा सवाल पूछती हूँ, तो आप हमेशा उलझा हुआ जवाब देते है, या फिर सवाल ही बदल देते है। क्या सच में बस जान-पहचान की है? तो फिर उसकी बात से आपको चुप्पी क्यों घेर लेती है?”

गौरी अब और चुप नहीं रह सकती।

गौरी: “वीर, मैं सीरियस हूँ। बस इतना जानना चाहती हूँ कि ये प्रिया कौन है, और आप उससे क्यों छुपकर जुड़े है? अगर कुछ नहीं है, तो साफ़ बताओ ना। बात घुमाने की क्या ज़रूरत?”

वीर typing करता है… फिर बंद हो जाता है। गौरी की आँखों में बेचैनी उतर आती है। फिर कॉल आता है

Veer Calling…

(कॉल पर)

वीर (थोड़ा हड़बड़ाया हुआ): “गौरी, प्लीज़ यार… तू बेकार में चीज़ों को सोच रही है। प्रिया कोई स्पेशल नहीं, बस एक पुरानी जान-पहचान थी। मैं भूला ही था कि वो फॉलोइंग में है।”

गौरी (थकी हुई आवाज़ में): “तो फिर जब मैंने पूछा, आपने बात क्यों टाल दी?”

वीर: “क्योंकि मैं जानता था तू react करेगी… और honestly, मैं नहीं चाहता था कि हमारे बीच इस तरह की चीज़ों से दरार आए।”

गौरी (गंभीर होकर): “दरार तब नहीं आती वीर, जब आप किसी को फॉलो करते हो… दरार तब आती है जब मुझसे छुपाते हो। जब मेरी बातों को हल्के में लेते हो। आप किसी को भी फॉलो करो, मुझसे साफ बात करो… पर मेरी आँखों में झूठ न दे।”

वीर (धीरे से): “मैंने तुझे कभी झूठ नहीं कहा, बस कुछ बातें अनकही रह गईं। अब से नहीं होंगी, वादा।”

गौरी (संवेदनशील होकर): “आप अगर मेरी नज़रों से देख पाते, तो समझते कि एक लड़की का डर क्या होता है, किसी और लड़की के नाम से उसकी पूरी रात कैसे उलझ जाती है।”

वीर: “मैं सीख रहा हूँ, गौरी… तुझसे, तेरे प्यार से।”

गौरी की आँखें भीगी हैं, लेकिन दिल में वीर की “स्वीकारोक्ति” ने थोड़ा सुकून डाला है। वो अब भी नहीं जानती कि प्रिया कौन है, पर कम से कम अब वीर का झूठ चुप नहीं बैठा है।

गौरी करवटें बदल रही है, नींद कोसों दूर। फोन उठाती है… वीर की प्रोफाइल फिर से खोलती है। “प्रिया” अब भी उसकी फॉलोइंग में है। दिल में एक टीस फिर से उठती है।

गौरी (मन में): “मैं उसके लिए सब कुछ हूँ… फिर ये ‘प्रिया’ क्यों अब भी वहाँ है? और जब मैं पूछती हूँ, तो साफ़ क्यों नहीं बताता? क्यों मेरी जलन को हल्के में लेता है? या शायद उसे मेरा यूँ जलना अच्छा लगता है…”

गौरी typing करती है: “वीर, आप आज फिर प्रिया का नाम टाल गया…”

वीर तुरंत typing करता है।

“अब तू फिर से शुरू ना हो जाए इसलिए टाल दिया। तू जब जलती है ना… तो बड़ी cute लगती है।”

गौरी की आँखें भीग जाती हैं… उसके लिए ये ‘cute’ नहीं था, ये उस प्यार का इम्तहान था जिसमें वो हर दिन घुल रही थी।

गौरी: “आपको मेरा जलना cute लगता है? मुझे लगता है आप मुझे खो दोगे… और आपको वो मज़ाक लगता है…”

वीर थोड़ी देर जवाब नहीं देता। फिर कॉल करता है।

(वीडियो कॉल पर)

वीर की आँखें थकी सी लगती हैं, लेकिन गौरी की आँखों में बेचैनी है।

वीर (धीरे से): “गौरी, सुन। प्रिया… बस एक स्कूल की पुरानी दोस्त है। ना उससे कोई बात होती है, ना कोई खास रिश्ता है। मैं उसे यूँ ही फॉलो करता रहा, जैसे कई और लोग होते हैं फॉलो लिस्ट में।”

गौरी (गंभीर होकर): “तो फिर मुझे क्यों नहीं बताया पहले दिन से? क्यों हर बार बात टाल दी? क्यों मेरी आँखों में झूठ बोला?”

वीर (थोड़ा मुस्कुराते हुए, पर धीमे स्वर में): “क्योंकि तुझे जलते देख कर… न जाने क्यों, मुझे अच्छा लगता था। तेरा चेहरा जब गुस्से से लाल हो जाता है, तेरी आँखों में डर छिपा होता है… कि कहीं मैं

तुझसे दूर ना हो जाऊँ… तो मुझे लगता है, तू मुझे सच में बहुत चाहती है।”

गौरी (आँखों में आँसू लेकर): “और आपने मेरी उस चाहत से खेल किया वीर। आप नहीं जानते, ये जलन मेरे लिए मज़ाक नहीं थी… ये मेरी रातों की नींद थी, मेरा टूटता भरोसा था…”

वीर (गंभीर होकर): “माफ़ कर गौरी… मैंने तुझे हँसी में लिया, जबकि तेरा दर्द असली था। अब तुझसे कुछ नहीं छुपाऊँगा। देख….”

(वीर स्क्रीन दिखाता है, इंस्टा खोलता है और वहीं गोरी के सामने ‘प्रिया’ को unfollow करता है)

वीर: “अब इस लिस्ट में सिर्फ वो होंगे जिनसे मुझे फर्क पड़ता है… और तू उनमें सबसे ऊपर है।”

गौरी (धीरे से): “तो अब मैं आपसे सिर्फ एक बात चाहती हूँ… अगर कभी कुछ ऐसा हो जो मुझमें insecurity पैदा करे, तो उसे मुझसे पहले share करना… ताकि मैं आपके पास अपने डर के साथ आ सकूँ, आपसे दूर नहीं।”

वीर: “वादा करता हूँ गौरी… अबसे तेरा दिल मेरी पहली priority है, और तेरे सवालों का जवाब मेरा फ़र्ज़।”

कॉल के दोनों छोर पर सुकून लौट आया है। गौरी मुस्कुरा रही है, वीर अब भी स्क्रीन पर उसे देख रहा है और दोनों को पहली बार महसूस होता है कि ईमानदारी सिर्फ रिश्ता नहीं बचाती, बल्कि प्यार को और गहराई देती है।

शाम का समय। गौरी चौके के पास बैठी है, आँखें लाल हैं, हाथ कांप रहे हैं। माँ और भाई राजन उसके सामने खड़े हैं। घर की दीवारों पर सन्नाटा पसरा है, लेकिन हवा भारी और तनावपूर्ण है।

राजन (तेज़ स्वर में, गुस्से से): "तू पागल हो गई है क्या? एक जाट से इश्क? ब्राह्मणों की बेटी होकर ऐसे नीच काम करेगी तू? वो लोग क्या समझते हैं अपने आपको?"

गौरी (धीरे, डरे हुए स्वर में): "भाई, वीर कोई ग़लत लड़का नहीं है... वो अच्छा है, पढ़ा-लिखा है, हमारी इज़्ज़त करता है..."

माँ (काटती हुई आवाज़ में): "इज़्ज़त? एक जाट से शादी कर के इज़्ज़त रहेगी हमारी? तू भूल गई है गौरी, तेरे पिताजी ने तुझे किस संस्कार से पाला है? ब्राह्मण कन्या की मर्यादा होती!"

राजन (मुठ्ठियाँ भींचते हुए): "जाट लड़के आज प्यार करेंगे, आज शादी करेंगें कल को मारेंगे पीटेंगे....। तुझे पता भी है जान से मार देते है। इतनी दूर कैसे भेजदें तुझे उनके पास, कल को तुझे मार दिया तो क्या करेंगे हम। तुझे क्या लगता है, तू उनके घर जाकर देवी बन जाएगी? उनकी औरतों की हालत देखी है कभी?"

गौरी रोते हुए: "मुझे सिर्फ वीर चाहिए। मैंने उसे मन से चुना है, जात से नहीं।"

माँ (आँखों में आग लिए): "तो अब बेटी माँ-बाप को सिखाएगी? हम तेरे लिए रिश्ता देख रहे हैं अच्छे ब्राह्मण घरों में। एक शब्द और वीर का लिया तो घर से बाहर कर देंगे तुझे!"

गौरी फूट-फूट कर रोने लगती है। उसका मन एकदम से टूटा नहीं है, लेकिन उसकी आत्मा पर जैसे किसी ने बोझ रख दिया हो।

वीर दफ्तर से लौट कर अभी-अभी आया है। चेहरा पसीने से भरा, पर दिल गौरी की बातों से भारी है। उसने सुना है कि गौरी के घरवालों को सब पता चल गया है।

वो घर के चौबारे में बैठा है, दीवार से सिर टिकाए।

वीर (धीरे-धीरे खुद से): "मैं जानता था कि ब्राह्मण घर में इश्क़ की बात करना पाप से कम नहीं। पर क्या हम पाप कर रहे हैं? बस जात अलग है हमारी... दिल तो एक है।"

वीर (संघर्ष करते हुए): "मैं जाट हूँ, लड़ना आता है मुझे... पर जब बात तेरे लिए हो, गौरी... तो लड़ाई भी तुझसे छोटी लगती है। तू कहे तो पूरी दुनिया से भिड़ जाऊँ, पर तेरे आँसू नहीं देख सकता।"

वो उठता है, आसमान की ओर देखता है। आँखे लाल हैं, पर इरादा पक्का।

"अगर तेरा घर तुझसे तेरा हक़ छीन रहा है... तो अब मेरा फर्ज़ है तुझे वो हक़ दिलाना।"

रात का समय। बैठक में माँ, दादा, और भाई राजन मौजूद हैं। गौरी कमरे के कोने में चुप बैठी है। माँ के चेहरे पर संतोष, दादा के चेहरे पर गंभीरता और भाई के चेहरे पर आत्मसंतुष्टि की झलक है।

दादा (धीमे लेकिन ठोस स्वर में): "हमने बहुत सोच-समझकर ये रिश्ता तय किया है। लड़का ब्राह्मण है। खानदान भी साफ़-सुथरा है, और सबसे बढ़कर... समाज में इज़्ज़तदार है।"

माँ (मुस्कराते हुए): "तू देखेगी गौरी, वही लड़का तेरे लिए सही रहेगा। नाम है अनुराग शास्त्री। कल उसका परिवार मिलने आ रहा है। बेटी, तू बस हाँ कर दे... फिर सब ठीक हो जाएगा।"

राजन (कंधे उचकाते हुए): "अब ज़िद छोड़। जितनी नाक कटवा ली, बहुत है। वीर जैसे जाट लड़के तेरे लिए नहीं बने। तू ब्राह्मण घर की इकलौती बेटी है, तेरी शादी पर हमारा मान जुड़ा है।"

गौरी सिर झुकाए बैठी है। दिल में तूफान है, पर ज़ुबान पर सन्नाटा।
गौरी (धीरे, टूटे स्वर में): "क्या मेरी मर्ज़ी की कोई कीमत नहीं है?"

दादा (थोड़ा तीखे स्वर में): "तेरी मर्ज़ी हमने तब तक सुनी, जब तक वो मर्यादा में थी। अब अगर तू सोच रही है कि किसी गांव में रहने वाले दूसरी जाति के लड़के से ब्याह कर लेंगे तो ये भूल है। हम समाज में मुँह दिखाने लायक नहीं बचेंगे।"

माँ (थोड़ा नरम स्वर में): "बिटिया, माँ-बाप कभी बुरा नहीं सोचते। वीर के साथ तुझे लड़ना ही पड़ेगा ज़िंदगी भर... समाज से, रिश्तेदारों से, अपनी ही पहचान से। और अनुराग जैसा लड़का तुझे वो सब देगा जो एक लड़की को चाहिए। सम्मान, सुरक्षा और चैन।"

गौरी की आँखें भर आती हैं। उसकी आत्मा में जैसे दो ध्रुव एक-दूसरे से टकरा रहे हों, एक ओर उसका प्रेम और दूसरी ओर परिवार की परंपरा, इज़्ज़त और दबाव।

गौरी (आँसू रोकते हुए): "कल वो आएँगे तो... क्या मैं कुछ कह सकूँगी?"

दादा (स्पष्टता से): "कहने की कोई ज़रूरत नहीं। देखना है, चुपचाप देख। हम जो करेंगे, तेरी भलाई के लिए करेंगे।"

वीर अपने घर की छत पर बैठा है, अंधेरे में एक लालटेन जल रही है। उसके पास गौरी का एहसास और प्रेम ही है। उसे इस आने वाले तूफान की भनक नहीं, पर मन अनजानी बेचैनी से घिरा हुआ है।

वीर (स्वगत): "उसके घर में सब शांत कैसे हो गया है अचानक? क्या वो... हार गई है?" (फिर खुद से ही) "नहीं गौरी... तू मेरी चुनी हुई हो। अगर तुझे आवाज़ ना दूँ, तो मेरा प्यार झूठा हो जाएगा।"

दोपहर का समय। बैठक में सफेद चादर बिछी है, मेहमानों के स्वागत की तैयारी है। गौरी की माँ रसोई में व्यस्त हैं, चेहरे पर उत्सुकता और संतोष है। उसके भाई राजन ने खुद दरवाज़े पर जाकर मेहमानों का स्वागत किया। सामने खड़ा है अनुराग, ब्राह्मण परिवार का पढ़ा-लिखा, लंबा, सांवला, आत्मविश्वास से भरा।

राजन (हँसते हुए): "आइए अनुराग जी, आपका ही इंतज़ार था।"

अनुराग (विनम्र मुस्कान के साथ): "आप सब से मिलकर अच्छा लगा। आंटी, आपके हाथों की चाय के तो चर्चे सुने हैं।"

माहौल में आदर, संस्कार और रिश्तेदारी की मिठास घुल चुकी है। अंदर गौरी अपने कमरे में बैठी है, दरवाज़े की आड़ से सब कुछ देख रही है। उसके चेहरे पर कोई खुशी नहीं, सिर्फ़ खालीपन है।

माँ (उत्साह से): "लड़का बहुत अच्छा है। जात-बिरादरी भी अपनी, खानदान भी बढ़िया। और फिर अमेरिका में है, क्या चाहिए और?"

राजन (गंभीर होकर): "गौरी को समझा देना माँ। ये कोई फ़िल्मी प्यार नहीं है। समाज में हमें देखना है, उसे नहीं।"

दूसरी ओर वीर का दोस्त विक्रम भागते हुए आता है।

विक्रम (घबराते हुए): "वीर! सुना तूने? गौरी के घर लड़का देखने आया है… अनुराग नाम है। रिश्ता पक्का कर रहे हैं आज!"

वीर जैसे सुन कर पत्थर का हो गया हो। उसने कुछ नहीं कहा। बस खड़ा रह गया, आँखें नीची, होंठ सूखे।

विक्रम (धीरे से): "भाई, कुछ कर। तूने तो कहा था कि तुमने मंदिर में कसमें खाई हैं। अब चुप रहेगा?"

वीर (धीरे से, टूटी आवाज़ में): "कसम तो खाई थी... पर वो भगवान शायद ब्राह्मणों का ही था। मेरे जैसे के लिए वहाँ कोई जगह नहीं थी।"

वो बैठ गया। हाथ से माथा पकड़ा। आँखों से आँसू टपकने लगे। बिना आवाज़, बिना चीख के। अंदर एक ज्वालामुखी फूट रहा था, पर बाहर सब शांत।

वीर (काँपती आवाज़ में): "गौरी को मुझ पर भरोसा था… लेकिन शायद खुद पर नहीं। और अब, सब ख़त्म हो गया विक्रम… सब।"
"जिसे मैं अपने भाग्य की डोर समझ रहा था… वो भी समाज ने काट दी।"

उधर गौरी और अनुराग का रिश्ता लगभग तय हो चुका है। सभी मुस्कुरा रहे हैं, मिठाइयाँ बँट रही हैं। लेकिन गौरी की आँखों में न कोई चमक है, न जीवन। वह खिड़की से बाहर दूर एक पेड़ को देख रही है, जैसे कोई बहुत दूर खड़ा हो, बहुत दूर चला गया हो...

सुबह की हल्की धूप, एक वीरान गली का नुक्कड़। गौरी वहाँ अकेली खड़ी थी। सादा सूती सलवार-कुर्ता पहने, सिर पर हल्का गुलाबी दुपट्टा। उसके चेहरे पर सुबह की थकी-सी रौशनी पड़ रही थी, लेकिन

उसकी आँखों में एक गहरी बेचैनी थी, जैसे कोई सपना टूटने से कुछ क्षण पहले कांप रहा हो। वो बार-बार सड़क की ओर देख रही थी। हर आती-जाती गाड़ी पर उसकी नज़र रुकती, दिल थोड़ी देर के लिए तेज़ धड़कता, फिर वापस उसी चुप्पी में डूब जाता। उसके हाथ में मोबाइल था। वीर को दो कॉल कर चुकी थी, पहली उम्मीद में, दूसरी हिम्मत से। अब तीसरी बार कॉल करने की हिम्मत नहीं बची थी।

गौरी (मन में): "कह दिया था आज आ जाऊँगा... पर हर 'आज' कल में बदलता जा रहा है। अगर आज भी नहीं आया, तो शायद मैं ही गलत थी, प्यार करने में भी और इंतज़ार करने में भी..."

वक़्त सरकता जा रहा था। सवा सात... साढ़े सात... फिर पौने आठ। गली की सुबह अब चहल-पहल में बदल रही थी, पर गौरी का इंतज़ार ठहर गया था जैसे उसका समय रुक गया हो।

फिर...

दूर से एक सफेद गाड़ी गली में मुड़ी, तेज़ रफ्तार, धूल उड़ाती हुई। गौरी की नज़र उस पर जा अटकी। कभी उम्मीद की लौ में, कभी खुद को धोखा देने के डर में। गाड़ी उसके पास आकर रुकी। वीर उतरा। उसके बाल बिखरे थे, आँखों में रात भर जागने की थकावट, और चेहरे पर सिर्फ एक एहसास, माफ़ी।

गौरी ने उसे देखा गुस्से से, इंतज़ार की पीड़ा से, और उस चुप मोहब्बत से जो सब कुछ बर्दाश्त कर लेती है।

वो कुछ नहीं बोली, बस देखा।

वीर ने एक पल के लिए कुछ कहने की कोशिश की, फिर बिना बोले आगे बढ़ा और उसे अपनी बाहों में खींच लिया। गौरी ने खुद को छुड़ाने की हल्की कोशिश की, लेकिन उसकी आँखें छलक चुकी थीं। वीर ने उसके माथे पर एक लंबा चुंबन रखा। वो चुंबन कोई माफी नहीं था, वो एक वादा था, एक भरोसा।

वीर (धीरे से): “तू गुस्से में बहुत खूबसूरत लगती है… पर मुझे माफ कर दे ना। लेट हो गया… पर देख, आया तो सही।”

गौरी की आँखों से दो आँसू गिरे, लेकिन होठों पर हल्की सी मुस्कान तैर गई।

गौरी (धीरे से): “इतना इंतज़ार मत करवाया करो वीर…

दिल डर जाता है कहीं आपसे ही ना हार जाए।”

वीर ने उसकी हथेलियाँ पकड़ीं और गाड़ी का दरवाज़ा खोला।

वीर: “चल… वहाँ चलें जहाँ से लोग मुरादें लेकर लौटते हैं।

मैं आज तुझसे तेरा नाम माँगूंगा, उसके सामने।”

गौरी ने एक बार फिर अपने पीछे देखा, वो गलियाँ, वो घर, वो समाज जो आज भी औरतों के फैसलों को गुनाह मानता है। फिर उसने लंबी साँस ली, और गाड़ी में बैठ गई।

गौरी (धीमे स्वर में): “आज से मेरी दुनिया बस आप है वीर… जो भी हो, अब आपसे पीछे नहीं जाऊँगी।”

वीर ने गाड़ी स्टार्ट की। खेतों की हरियाली के बीच वो गाड़ी चुलकाना धाम की ओर बढ़ने लगी। हवा चल रही थी, सूरज आसमान चढ़ रहा था, और दो दिल अब एक राह पर थे। जहाँ ना समाज की दीवारें थीं, ना मजबूरी की ज़ंजीरें। सिर्फ़ दो लोग और एक नाम “मोहब्बत”।

गाड़ी में हलका-सा गाना बज रहा है कोई पुराना भजन। वीर ने गौरी की ओर देखा, उसकी आँखों में नमी थी, पर चेहरा दृढ़ था।

वीर : "कभी सोचा था कि तू ऐसे साथ बैठेगी, इतने पास... और फिर भी इतना कुछ पीछे छोड़ कर?"

गौरी: "मैंने सब कुछ नहीं छोड़ा वीर... मैं अपना सब कुछ लेकर जा रही हूँ, आप।"

दोपहर का समय, मंदिर की घंटियाँ गूंज रही हैं, वातावरण में भक्ति की गहराई है।

गाड़ी मंदिर के सामने रुकती है। दोनों प्रेमी उतरते हैं, कुछ क्षण मंदिर के प्रांगण में खड़े रहते हैं। सामने श्याम जी की विशाल प्रतिमा, मूक साक्षी जैसे उनका इंतज़ार कर रही हो।

वीर ने गौरी की ओर देखा। आँखों में सवाल नहीं, भरोसा था। दोनों ने हाथ में फूल और दीपक लिए और मंदिर की सीढ़ियाँ चढ़े।

गौरी (प्रार्थना करते हुए): "हे श्याम सरकार... आज हम तेरे सामने आए हैं। बिना किसी छल के, बिना किसी डर के। हमारा रिश्ता जात से ऊपर है, धर्म से ऊपर है... ये एक सच्चा प्रेम है। इसे आशीर्वाद दो।"

वीर: "हम न तो समाज से लड़ना चाहते हैं, न खुद से। बस ये चाहते हैं कि तू हमारे साथ रहे, जैसे तूने सदा सीता-राम, राधा-कृष्ण, मीरा को थामा था।"

दोनों ने एक साथ दीपक जलाया। मौली बाँधी। और मंदिर की परिक्रमा की, हर कदम उनके संकल्प की तरह भारी था, पर पवित्र भी।

मंदिर के पीछे की छोटी सीढ़ियाँ, दोनों बैठते हैं चुपचाप।

गौरी: "अब डर नहीं लगता वीर। अब चाहे जो हो, मैं आपके साथ हूँ।"

वीर (उसका हाथ थामते हुए): "और अब जो भी होगा, हम साथ झेलेंगे। ये प्रेम अब किसी एक का नहीं रहा... ये ईश्वर का बन चुका है।"

शाम का वक्त। मंदिर के घंटे अब धीमे पड़ चुके हैं, श्रद्धालु लौट चुके हैं। वीर और गौरी धीरे-धीरे सीढ़ियाँ उतरते हैं। दोनों के हाथों में मंदिर की मौली बंधी है, और माथे पर सिंदूर की एक हल्की रेखा जो अनजाने ही एक रिश्ते की गवाही बन चुकी है।

गौरी (धीरे से): "आज पहली बार ऐसा लग रहा है जैसे भगवान ने सच में सुना हो… बस डर यही है कि लोग सुनें, तो क्या होगा।"

वीर (मुस्कुरा कर): "हमारा रिश्ता अब तेरे और मेरे बीच नहीं रहा… अब ये उस दरबार का है। और जिस दर पे झुकते हैं करोड़ों, वहाँ से लौट के हम अकेले नहीं होंगे।"

दोनों कार के पास पहुँचते हैं। वीर दरवाज़ा खोलता है, गौरी बैठती है। फिर वो खुद भी ड्राइविंग सीट पर आकर बैठता है।

इंजन बंद है, खिड़कियों से आती शाम की हल्की रोशनी। कार के अंदर गहरा मौन है, पर वो मौन बोझिल नहीं… वो प्रेम से भरा है।

गौरी चुपचाप बैठी है, उसकी हथेली अब भी काँप रही है। वीर धीरे से उसका हाथ थाम लेता है, बिना कुछ कहे। एक क्षण के लिए दोनों की आँखें मिलती हैं, न कोई सवाल, न कोई वादा… बस एक एहसास कि अब वो एक-दूसरे के हैं।

गौरी (धीरे से, लगभग फुसफुसाते हुए): "कभी-कभी डर लगता है वीर… कि ये पल बस एक सपना न हो।"

वीर: "अगर ये सपना है... तो मैं नहीं जागना चाहता।"

उसने उसका हाथ अपने सीने से लगाकर कहा

"देख... यहाँ धड़क रहा है तेरा नाम। और जब तक ये धड़कनें हैं, तब तक तुझे मुझसे कोई नहीं छीन सकता।"

गौरी की आँखों से एक आँसू बह निकला, लेकिन वो दुख का नहीं था, वो सुकून का था। वो पल किसी दुनिया से परे था, जहाँ कोई रिश्ता साबित करने की ज़रूरत नहीं थी। वीर ने इंजन स्टार्ट किया, पर गाड़ी अभी भी वहीं खड़ी रही कुछ देर... जैसे वक़्त खुद रुक गया हो, उन्हें महसूस करने के लिए। शब्द नहीं बोले गए, लेकिन उस शाम, उस मौन में, दो आत्माएँ एक हो गई थीं।

चुलकाना धाम से लौटते हुए दोनों की आँखों में एक अलग-सी शांति थी, पर दिल में हलचल। कार की खिड़की से बाहर गौरी अपने शहर की ओर जाती हर एक पहचान को देख रही थी, और हर पेड़, हर मोड़ जैसे कह रहा था "शायद ये आख़िरी बार है..."

कार अब धीरे-धीरे उस कॉलोनी की ओर बढ़ रही थी जहाँ गौरी रहती थी। दोनों के बीच खामोशी थी, पर वो खामोशी बोझ नहीं, एक आख़िरी एहसास थी, जैसे कोई अधूरी कविता... पूरी होने के इंतज़ार में।

गौरी (धीरे से): "इतना लंबा रास्ता कभी इतना छोटा क्यों लगने लगा वीर?"

वीर (हल्की मुस्कान के साथ): "शायद इसलिए, क्योंकि अब हर मोड़ बिछड़ने के क़रीब ले जा रहा है… और कोई भी वक़्त उस मोड़ तक पहुँचने की जल्दी में नहीं है।"

कार रुकती है। वो गली आ गई है जहाँ से गौरी को उतरना है। वीर ने चुपचाप ब्रेक दबाया… गाड़ी अब शांत है, पर दिलों में तूफ़ान।

गौरी ने दरवाज़े की ओर हाथ बढ़ाया, फिर ठिठक गई। उसका हाथ काँप रहा था। वीर ने गौरी की ओर देखा

गौरी (भरे गले से): "शायद… ये हमारी आख़िरी मुलाक़ात थी… है ना?"

वीर (गहरी सांस लेते हुए): "अगर तक़दीर का लिखा यही है… तो हाँ। लेकिन अगर तेरे और मेरे वक़्त के बीच थोड़ी भी मोहलत बची है… तो नहीं।"

एक लंबा मौन। गौरी का हाथ अब भी दरवाज़े पर है, पर दरवाज़ा नहीं खुल रहा। आँखों से आंसू निकलकर गालों पर ठहर गए हैं।

गौरी: "मैं जाना नहीं चाहती वीर… पर रह भी नहीं सकती। आप कहना चाओ तो रोक लो… पर रोकना मत… क्योंकि मैं टूट जाऊँगी।"

वीर ने उसका हाथ थाम लिया, धीरे से माथे को छुआ

"तेरा साथ मेरा इम्तिहान था, और तुझसे जुदा होना मेरी सज़ा। पर तू मेरी थी… है… और रहेगी। अगर हम मिलेंगे… तो इस दुनिया से लड़कर। और अगर नहीं… तो यादों में तू हमेशा मेरे साथ होगी।"

गौरी ने दरवाज़ा खोला, पैर बाहर रखा, पर फिर एक पल के लिए रुक गई। उसने वीर की ओर देखा, जैसे आँखों से कुछ कहना चाहती हो, शायद "मत जाने दो मुझे" या "बस एक बार रोक लो"… पर कुछ कहा नहीं।

वो उतर गई।

वो पल...

जब वक़्त ने धीरे से काँधे पर हाथ रखा,

और कहा "अब बस करो, चलो अपने-अपने रास्ते।"

तेरी आँखें छलक रही थीं,

मेरे होंठ काँप रहे थे, हम कुछ कह नहीं पाए…

क्योंकि कुछ अल्फ़ाज़ सिर्फ़ दिल में रोते हैं,

ज़ुबाँ पर नहीं आते।

तेरे सामने खड़ा था मैं बिलकुल ख़ामोश,

जैसे कोई मंदिर की सीढ़ियों पर बैठा

अपने भगवान को खो चुका हो।

तेरा दुपट्टा हवा में लहरा रहा था,

पर हाथ थामे नहीं,

जैसे किस्मत ने भी हमसे अपनी उँगलियाँ खींच ली थीं।

तेरी आँखों में एक सवाल था

"क्या तुम मुझे भूल जाओगे?"

और मेरी चुप्पी में था जवाब

"तुम कभी भूली ही नहीं जा सकती…"

तू चल दी…

धीरे-धीरे,

पर हर क़दम जैसे मेरे सीने पर गिर रहा था।

मैं खड़ा रहा…

बस देखता रहा,

जब तक तू आँखों से ओझल नहीं हो गई

और मेरी दुनिया उजड़ नहीं गई।

वो पल…

जब सारा जहाँ था आसपास,

पर मेरा कुछ भी नहीं बचा था।

क्योंकि तू नहीं थी।

वो पल…

जब एक मोहब्बत ज़िंदा थी,

मगर दो दिल बेजान हो गए थे।

वीर ने फिर भी गाड़ी वहीं खड़ी रखी… जब तक वो गली के कोने पर मुड़कर ओझल नहीं हो गई। फिर उसने इंजन स्टार्ट किया… और उसी चुप्पी में लौट पड़ा… जैसे एक पूरी दुनिया पीछे छोड़ आया हो।

आसमान पर आधा चाँद था… अधूरा सा, ठीक उनकी कहानी की तरह।

इतने सबके बाद भी घरवाले अपनी बात पर अड़िग।गौरी खिड़की के पास बैठी, आँखें झुकी हुईं, हाथों में झुमकें जो वीर ने कभी गौरी को दिए थे।

(गौरी के मन की आवाज़): "सब कुछ इतना तेज़ क्यों हो रहा है? अभी तो हमने मंदिर में प्रार्थना की थी, साथ जीने की कसमें खाई थीं... और अब कोई अजनबी मेरी किस्मत में बिठा दिया गया है।"

"क्या मैं इतनी कमजोर थी कि वीर का हाथ थाम कर खड़ी नहीं हो सकी? या मैं बस वही हूँ जो इस घर की चारदीवारी में गढ़ी गई। एक 'सम्माननीय बेटी' जो खुद का सपना देखने की हिम्मत नहीं रखती?"

"माँ कहती है, लड़का अच्छा है। भाई कहता है, जात-बिरादरी की इज्जत रखनी है। पर क्या कोई पूछेगा मुझसे... कि मेरे दिल में क्या है?"

(गौरी के आंसुओं के बीच बुदबुदाते शब्द): "वीर… आप आए थे ना मुझे लेने? मैंने ही आपको छोड़ दिया... या आप मुझे फिर से आकर पकड़ लोगे?"

"कभी आपने कहा था, "हम भागेंगे नहीं, लड़े बिना नहीं हारेंगे।" पर अब लड़ने की ताक़त मुझमें नहीं बची। सब थोप रहे हैं मुझ पर एक 'योग्य वर', एक सम्मानजनक रिश्ता… पर मेरा दिल किसी 'सामाजिक योग्यताएं' नहीं चाहता, वो बस आपको चाहता है, आपका साथ… आपका साया।"

वो झूमको को सीने से लगा लेती है, आँसू उसके गालों पर बहते हैं, और वो तकिये में मुँह छुपा कर रो पड़ती है। एक ऐसा रोना जो कोई सुन नहीं सकता, लेकिन वो प्रेम महसूस करता है जो टूटते हुए भी खुद को साबित करना चाहता है।

अंत में, गौरी का निर्णय अभी अधूरा है, लेकिन उसका प्रेम अब और भी स्पष्ट है। वो अब दबाया जा रहा है, कुचला जा रहा है, लेकिन

मिटाया नहीं जा सकता। यह वह क्षण है जब गौरी एक लड़की नहीं रह जाती, वह एक टूटती आत्मा बन जाती है। उसके बाहर एक शांत, सहमी हुई बेटी खड़ी है जो माँ-बाप की "इज़्ज़त" के लिए चुप है, लेकिन उसके भीतर एक प्रेमिका है जो हर साँस के साथ चीत्कार कर रही है। उसका दर्द न शोर करता है, न विद्रोह करता है, वो बस भीतर घुटता है।

धूप बाहर तेज है, पर कमरे में घना अंधेरा। एक खाट पर वो बैठा है, सिर झुका हुआ, आँखें लाल। पास में वही मौली पड़ी है जो चुलकाना धाम में गौरी ने हाथ में बाँधी थी।

(वीर के मन की आवाज़): "सुना है अनुराग नाम है उसका। वही, जिसे सब कहते हैं 'पर्फेक्ट वर'। जात से ब्राह्मण, घर से अमीर, बाहर से पढ़ा हुआ… और मैं?"

"मैं सिर्फ़ एक साधारण सा लड़का हूँ। जो हल जोतना जानता है, जो मिट्टी में पैदा हुआ है और उसी मिट्टी में खत्म हो जाएगा। मैं क्या दे सकता हूँ उसे…?"

उसने फ़ोन में छुपाई हुई गौरी की तस्वीर को देखा, जो उसने कभी खींची थी, अपने मोबाइल से। आँखों में अब आँसू नहीं हैं, क्योंकि शायद रोने की भी ताक़त अब बची नहीं।

वीर (धीरे से, खुद से): "उस दिन मंदिर में तूने कहा था ना ‘अब डर नहीं लगता।’ तो फिर आज क्यों अकेले छोड़ गई गौरी? क्या तेरे अंदर भी डर था… या भरोसा नहीं?"

"नहीं… ये प्रेम है, बदला नहीं। मैं तुझे पाने के लिए किसी को मिटाना नहीं चाहता, बस इतना चाहता हूँ कि एक बार तू कह दे, मैं तेरे साथ हूँ।"

वो छत की ओर देखता है, जैसे भगवान से शिकायत कर रहा हो, "चुलकाना सरकार… तूने भी धोखा दिया। तेरे मंदिर में जाकर हमने जो वादा किया था, क्या वो तुझे नहीं सुनाई दिया? या जात का भेद तुझमें भी है?"

पास में पड़ा मोबाइल बजता है, गौरी का नंबर नहीं है। वो हर बार स्क्रीन देखता है, हर बार दिल गिरता है। फिर भी वो फ़ोन को म्यूट नहीं करता… शायद कोई चमत्कार हो।

(वीर फुसफुसाते हुए): "गौरी… अगर तू मुझसे सच में प्यार करती है, तो एक बार… बस एक बार… लौट आ। मैं सब कुछ छोड़ दूँगा… पर तुझे नहीं।" वीर खिड़की से बाहर देखता है, जहाँ सन्नाटा है, खाली रास्ता है, और कहीं दूर एक उम्मीद की किरण। उसका प्रेम न हार मान रहा है, न विद्रोह कर रहा है, बस इंतज़ार कर रहा है। चुपचाप, टूटता हुआ… लेकिन सच्चा।

वीर की वो हालत हो गई जब एक प्रेमी सब कुछ हार रहा होता है, लेकिन फिर भी मन का एक कोना आख़िरी उम्मीद का दीप जलाए रखता है। जाति, समाज, और संस्कारों की दीवारों ने जिसे नकार दिया है, वो लड़का अब अपनी अस्मिता और प्रेम के बीच झूल रहा है।

धूप सिर पर तेज़ है, पर वीर की निगाहें ज़मीन में गड़ी हैं। उसके हाथ में गौरी के दिए हुए फूल है जो उसने एक बार वीर को दिए थे। आँखें सूखी हैं, पर दिल भीतर से नम है।

(मन की आवाज़): "हर रोज़ सूरज उगता है, पर मेरे दिन अब उजाले नहीं लाते। गौरी… तू वहाँ कैसे होगी? मुस्कुरा पाती होगी या मेरी तरह बस ज़िंदा हो रही होगी?"

उसका भाई पास से गुज़रता है, पूछता है, "खाना नहीं खाया?" वीर बस सिर हिला देता है। हाँ और ना के बीच लटका एक जवाब। कभी-कभी वो खुद से सवाल करता है "क्या सब छोड़कर भाग जाना चाहिए था?" लेकिन फिर चुलकाना धाम का वो वादा याद आता है… "हम लड़ेंगे… लेकिन डरेंगे नहीं।"

गौरी अब पहले जैसी नहीं रही। चेहरे पर वही मासूमियत है, पर आँखों में एक चुप सी वीरानी। उसकी माँ बार-बार कमरे में झाँकती है, लेकिन कुछ कह नहीं पाती। उसकी शादी की तैयारियाँ धीरे-धीरे बढ़ रही हैं… पर गौरी की दुनिया अब ठहरी हुई है।

(गौरी की डायरी के शब्द): "आज पाँचवा दिन है वीर… आपके बिना साँसें चल रही हैं, पर जैसे कोई भीतर नहीं है। सब कहते हैं “भूल जा”। पर कैसे भूल जाऊँ किसी को… जिसने मेरी आत्मा को छू लिया?"

"कल माँ ने कहा अनुराग बहुत अच्छा है… काश वो समझ पाते, अच्छा होना एक चीज़ है… और अपना होना दूसरी। आप मेरे ‘अपने’ थे वीर… हो… और रहोगे।"

वो तस्वीर को छाती से लगा लेती है, जैसे कोई बेजान चीज़ में जीवन तलाश रही हो।

दोनों की निगाहें आसमान की ओर, जैसे वहाँ एक-दूसरे को ढूंढ रहे हों। कोई आवाज़ नहीं, पर दिल कह रहे हैं

"अगर तू सच में मेरा था… तो ये दुनिया हार जाएगी… पर हमारा प्यार नहीं।"

बरामदे में हल्दी के फूलों से सजी झालरें लटक रही हैं। अंदर महिलाएं गीत गा रही हैं, रस्मों की तैयारी हो रही है। किचन से घी और बेसन की मिठाइयों की खुशबू आ रही है। माँ बार-बार निर्देश दे रही है "सूजी का हलवा बनवाओ, लड़के वालों को बहुत पसंद है।" पिताजी दूर खड़े मोबाइल पर किसी पंडित से मुहूर्त की बात कर रहे हैं।

लेकिन इन सब के बीच, गौरी अपने कमरे में बैठी है, चुपचाप, बिना कुछ कहे। उसके सामने एक खूबसूरत लाल लहंगा टँगा है, जिसे पहनने की सबको खुशी है… सिवाय उसके।

खिड़की से आती धूप, पास ही पलंग पर सजी शादी की चीज़ें। मेहंदी, चूड़ियाँ, कलीरे।

गौरी उस लहंगे को देखती है, फिर अलमारी के कोने से एक छोटी डायरी निकालती है। वो वही डायरी है जिसमें उसने वीर के लिए कविताएँ लिखी थीं।

गौरी (धीरे से, खुद से): "हर लड़की का सपना होता है शादी का जोड़ा पहनना… पर मेरा सपना तो वो था जो आपके साथ पूरा होना था वीर।"

बाहर से चाचियों की हँसी और शगुन के गीत की आवाज़ें आती हैं

"मेहंदी रचाई राधा ने, बनके दुलारी कान्हा की…"

गौरी की आँखों में आँसू भर आते हैं। वो जल्दी से उन्हें पोंछती है, कहीं कोई देख न ले।

माँ (दरवाज़े पर दस्तक देकर): "गौरी, जल्दी आ… मेहंदीवाले आए हैं। सब इंतज़ार कर रहे हैं।"

गौरी (बड़ी मुश्किल से मुस्कुराकर): "हाँ माँ… आई।"

वो एक आख़िरी बार उस लहंगे की ओर देखती है—फिर धीरे से डायरी को उसमें छुपाकर रख देती है, जैसे अपने सपने को वहीं समेट रही हो। गौरी कमरे से बाहर निकलती है, चेहरे पर नकली मुस्कान… पर उसकी चाल, उसकी आँखें… सब चीख-चीख कर कह रहे हैं "ये शादी नहीं, विदाई है… अपने असली 'मैं' से।"

वीर की कार हाईवे पर दौड़ती हुई और सामने बोर्ड आता है: "आप कर्ण की नगरी में प्रवेश कर रहे हैं" यह वही शहर है जहाँ गौरी रहती है। वही गलियाँ, वही मोड़, वही हवा… जहाँ कभी उसकी हर साँस अटकी रहती थी।

कभी ऐसा होता था कि अगर वीर को कहीं और भी जाना होता, तो वो कोई न कोई बहाना बनाकर गौरी के शहर से होकर गुज़रता था, शायद एक झलक मिल जाए, शायद वो बस स्टैंड पर दिख जाए, या मंदिर के बाहर… या यूँ ही किसी गली में हवा बनकर उसकी खुशबू महसूस हो जाए।

पर आज…

आज वो सीधे गाड़ी चला रहा है। बिना रुके, बिना देखे… जैसे उस शहर से कोई रिश्ता ही न हो।

गाड़ी की स्पीड तेज़ है, लेकिन दिल की धड़कनें धीमी हो चुकी हैं।

(मन की आवाज़ – वीर): "वो शहर जहाँ कभी दिल धड़कता था… अब उस शहर का नाम सुनते ही सीना भारी हो जाता है। कभी वहीं मेरी दुनिया थी, अब वहीं मेरी दुनिया उजड़ गई।" वो शहर अब नहीं बुलाता… और वीर अब वहाँ रुकना नहीं चाहता। सारे दृश्य सामने से गुज़रते हैं, पर वीर की आँखें सड़क पर जमी हैं जैसे अगर एक बार भी इधर-उधर देखा, तो दिल फिर उसी मोड़ पर लौट जाएगा जहाँ से सब छूट गया।

(मन की फुसफुसाहट): "उसका शहर अब सिर्फ़ एक रास्ता है… और मैं अब उस मोड़ पर नहीं रुक सकता जहाँ वक़्त ठहर गया था।"

गाड़ी समाना से बाहर निकलती है। शहर पीछे छूट जाता है… और वीर के चेहरे पर एक गहरी चुप्पी आ जाती है।

आसमान में बादल हैं, जैसे कुछ कह रहे हों… पर वीर अब कोई आवाज़ सुनना नहीं चाहता। पीछे छूटता हुआ शहर अब एक बिन देखी तस्वीर जैसा है जिसे वो देखना नहीं चाहता, पर भूल भी नहीं सकता।

कुछ बातें थीं जो कह न सके,

लबों तक आई पर बह न सके।

दिल की दीवारों पर लिखी रहीं,

वो बातें जो तेरे लिए ही रहीं।

बरसों की वो चुप्पी थी, कुछ खास,

हर साँस में था तेरा अहसास।

मगर हालातों की आँधी आई,

और बात अधूरी ही रह पाई।

तेरे जाने के बाद भी आज,

मन करता है तुझसे कहूँ कुछ राज।

पर अब वो पल लौटे कहाँ?

अब तो यादें ही हैं मेरी पनाह।

हर मौसम तेरी याद दिलाता है,

हर बादल कोई सवाल उठाता है।

क्यों न कह सके वो एक बात,

जो दिल में थी, पर बनी एक आघात।

शायद कुछ रिश्ते, अधूरे ही सही,

ज़िन्दगी की सबसे सुंदर कविताएँ वही।

घर में शहनाइयाँ बज रही हैं, चारों ओर रौशनी, पर भीतर एक लड़की की खामोशी की चीखें दब रही हैं।

संध्या का समय है। पूरा घर सजा हुआ है, फूलों की लड़ियाँ, झालरें, महकते इत्र की खुशबू और बारात का इंतज़ार करती हुई भीड़। हँसी-ठिठोली, रस्में, गीत, और मोबाइल से सेल्फियाँ… हर चेहरा खुश है, सिवाय दुल्हन के।

गौरी एक सजे हुए कमरे में बैठी है लाल जोड़े में, गहनों से लदी, लेकिन चेहरे पर कोई चमक नहीं। उसकी आँखें नीचे झुकी हुई हैं, और होठों पर कोई रंग नहीं। सब उसे "खूबसूरत दुल्हन" कह रहे हैं, पर उसे लग रहा है जैसे वो अपने लिए नहीं, समाज के लिए सजी है।

(मन की आवाज़ – गौरी): "हर लड़की यही सपना देखती है। लाल जोड़ा, सजी हुई डोली… पर मैंने तो सिर्फ़ आपके साथ सात फेरे लेने का सपना देखा था वीर। आज मेरी शादी है… और आप कहीं नहीं हो… सिर्फ़ मेरी यादों में है… और वो हर वादा भी जो अधूरा रह गया।"

अंदर महिलाएँ मेहंदी गा रही हैं:

"कली-कली बाजे बांसुरी, बन्ना ने आई बारात…"

गौरी की आँखों से अचानक एक आँसू गिरता है, जिसे वह जल्दी से पोंछ लेती है, कहीं कोई देख न ले। उसे शीशे में खुद का चेहरा देखना भारी लग रहा है… वो जिसे देखकर वीर मुस्कुराता था, आज खुद उस चेहरे से नज़रें नहीं मिला पा रही।

तभी दरवाज़ा खुलता है, माँ आती है। चेहरे पर बनावटी मुस्कान।

माँ: "गौरी, बारात बस पहुँचने वाली है… चलो तैयार हो जाओ।"

गौरी धीरे से सिर हिलाती है, लेकिन कुछ कहती नहीं। वो बस एक बार पलंग के नीचे झाँकती है जहाँ उसकी डायरी रखी है… वीर के नाम की, उनकी छुपी हुई दुनिया की।

बारात आ चुकी है। बाहर नाच-गाना, बैंड की आवाज़, फुलझड़ियाँ। अनुराग घोड़ी पर बैठा है, परिवार खुश है, मेहमान तालियाँ बजा रहे हैं। गौरी को मंडप तक लाया जा रहा है। धीरे-धीरे, हर कदम पर जैसे आत्मा और भारी होती जा रही हो।

मंडप में बैठे हुए, वो मंत्र सुन रही है लेकिन हर शब्द उसे किसी और आवाज़ में सुनाई देता है…

"मैं वीर का नाम लेती हूँ…"

वो आँखें बंद करती है, लेकिन सामने वही चेहरा उभरता है जिसे अब शायद वो ज़िंदगी भर सिर्फ यादों में देखेगी।

फेरों के समय। अग्नि के चारों ओर गौरी और अनुराग चल रही है, पर जैसे उसके पाँव भारी हैं… हर फेरा उसे वीर से एक कदम और दूर ले जा रहा है।

(मन की आवाज़ – गौरी): "मैं साथ चल तो रही हूँ… पर वीर… मेरी आत्मा अब भी आपके साथ खड़ी है। इस अग्नि की लपटों में आपको पुकार रही है… पर आप अब शायद कभी नहीं आओगे…" फेरे पूरे होते हैं। पंडित कहता है "अब से आप पति-पत्नी हैं।" तालियाँ बजती हैं।

पर गौरी की आँखों से फिर एक आँसू गिरता है। इस बार वो आँसू कोई नहीं देख पाता… सिवाय उस लाल जोड़े के… जो अब उसकी पहचान था।

आसमान में गहरा सन्नाटा, दूर कहीं शादी के पटाखों की आवाज़ गूँज रही है। वीर अकेला बैठा है। उसकी बाइक पास खड़ी है, और सामने वही पुरानी डायरी खुली है जिसमें गौरी की लिखी कुछ पंक्तियाँ हैं। चाँदनी में उन शब्दों की रोशनी फीकी लग रही है जैसे अब उनमें जान नहीं रही।

(फोन की स्क्रीन पर एक मैसेज): "गौरी की आज शादी हो गई। बहुत धूमधाम से शादी हुई।"

वीर कुछ देर तक स्क्रीन को देखता रहा जैसे शब्दों ने उसकी साँसें थाम दी हों। फिर धीरे से फोन बंद कर दिया… और ज़मीन पर निगाहें गड़ा दीं।

(मन की आवाज़ – वीर): "तो बस… सब ख़त्म हो गया… जिस लड़की के लिए मैं इस समाज से लड़ना चाहता था, वो अब किसी और की दुल्हन बन गई।"

वो सिर झुका लेता है… दोनों आँखों से आँसू गिरते हैं, पर आवाज़ नहीं आती। बस हवा चल रही है, और कहीं दूर शहनाइयाँ बज रही हैं… जो अब तीर की तरह चुभ रही हैं।

(धीरे से बुदबुदाता है): "गौरी… तुझे जाते हुए देख भी नहीं सका। तेरी शादी में शामिल नहीं हो सका… पर यकीन मान, मैंने तुझसे कभी कोई वादा नहीं तोड़ा… बस वक़्त ने हम दोनों को तोड़ दिया।"

वो उठकर आसमान की ओर देखता है जैसे किसी अनदेखी गौरी को देख रहा हो।

"जहाँ भी रहो… खुश रहना। अगर तेरी मुस्कान किसी और के नाम हो गई है, तो मैं तुझे याद करके मुस्कुराना भी छोड़ दूँगा। पर भूल नहीं पाऊँगा। कभी नहीं।"

उसने डायरी बंद की, बाइक स्टार्ट की… और धीरे-धीरे घर की तरफ़ चल दिया। हर गियर, हर ब्रेक… जैसे किसी याद को पीछे छोड़ रहा

हो। सड़क पर उसकी परछाई लंबी हो रही है... जैसे एक अधूरी मोहब्बत आज उससे भी आगे निकल गई।

तेरे बिना...

दिन तो चलते हैं

पर वक़्त ठहर जाता है।

खिड़कियाँ अब भी खुलती हैं

पर उनमें हवा नहीं तेरी यादें चलती हैं।

चाय में वो मिठास नहीं रही,

किताबें अब कहानियाँ नहीं सुनातीं,

रास्ते अब मंज़िल तक नहीं ले जाते

क्योंकि अब कोई इंतज़ार में नहीं होता।

तेरे बिना,

शब्द सिर्फ़ शब्द हैं भाव नहीं।

गीत अधूरे हैं तू सुर नहीं।

रातें लंबी हो गई हैं और नींदें...

वो बस तेरे ख़्वाबों से लड़ती रहती हैं।

तेरे बिना,

मैं अब भी "मैं" हूँ,

पर अधूरा…

जैसे कविता में कोई बिन लिखा शेर,

या चित्र में रंगों का सूनापन।

अब कोई नाम नहीं लिया जाता। अब जब कोई पूछता है “क्यों चुप हो?” तो जवाब नहीं आता क्योंकि जिसका नाम सबसे ज़्यादा चिल्लाना था, उसे कभी पुकारा ही नहीं गया। जो दिल में सबसे ज़्यादा बसी थी, उसका ज़िक्र कभी ज़ुबान तक लाया ही नहीं गया।

कभी कोई थी जो कुछ कहती नहीं थी, लेकिन सब समझा जाती थी। अब वही सबसे ज़्यादा रह गया, बिना किसी शब्द के, बिना किसी पहचान के। वो चली गई थी या शायद कभी आयी ही नहीं थी या शायद… वो अब भी है, कहीं साँसों के कोने में, किसी ख़ामोश दीवार की सीलन में, किसी पुराने गाने की धुन में।

वो कभी मेरी थी नहीं और मैं कभी उसका नहीं हुआ। पर फिर भी, आज जब कोई मुझसे मेरा नाम पूछता है, तो अंदर से वही गूंजती है जिसका नाम कभी किसी को नहीं बताया।

उसने कुछ नहीं कहा। कभी “पसंद हूँ क्या?” नहीं पूछा, कभी “रुक जाऊँ?” नहीं कहा, कभी “आप मेरे हो?” नहीं मांगा। और मैंने भी कुछ नहीं कहा क्योंकि शायद हम दोनों ही डरते थे कि अगर इस ख़ामोशी को आवाज़ दे दी, तो जो बिना नाम का रिश्ता है, वो टूट

जाएगा। तो हम चुप रह गए… और हमारी चुप्पी हमारे सबसे बड़े सच में बदल गई।

अब कुछ नहीं बदला बाहर से। वो गाना अब भी चलता है,

कॉफ़ी अब भी वही स्वाद देती है, बारिश अब भी उसी तरह भिगाती है… पर उसके बिना सब कुछ थोड़ा ठहरा-ठहरा सा लगता है। जैसे कुछ है जो खत्म नहीं हुआ, लेकिन चल भी नहीं पा रहा।

हर रात, जब सब सो जाते हैं। मैं अपने दिल से वो बात करता हूँ जो कभी उस तक नहीं पहुँची।

"तू गयी नहीं है… तू अब मेरे भीतर है।

इतनी गहरी कि अब खुद को भी नहीं समझा पाता।"

और उस रात…

जब मैं सबसे ज़्यादा टूटा था, तू फिर भी आई, कोई सपना बनकर, कोई खामोश स्मृति बनकर। मैंने तुझसे कुछ नहीं माँगा था कभी, लेकिन तू मुझे सब दे गई —

ख़ामोशी, गहराई, और एक जीवन भर का अधूरापन।

मैं अब हर रोज़ 'अगर' जीता हूँ। अगर उस दिन मैंने तुझे देख कर रोक लिया होता… अगर तू थोड़ी देर और ठहर गई होती… अगर मैं डरता नहीं… अगर तू एक बार "रुक जाओ" कह देती…

हर 'अगर' अब एक अधूरी ज़िंदगी है, जो जिया नहीं गया बस याद किया गया।

अब तू किसी किताब में नहीं है... अब तू दीवार पर टंगी घड़ी की टिक-टिक में है, तेरी मुस्कान मेरी खामोशी में है, तेरी आवाज़ अब मेरे लिखे शब्दों में है जहाँ हर कविता अधूरी रहती है। मैंने हर शेर अधूरा छोड़ना सीख लिया है क्योंकि जो तू पूरा नहीं कर सकी, उसे अब कोई और भी नहीं कर सकता।

तू अब एक नाम नहीं है... तू अब एक जीवन है। तू उस दुनिया का हिस्सा है, जहाँ कोई बोलता नहीं, बस गहराई से देखता है। जहाँ कोई रिश्ते नहीं पूछता, कोई वादा नहीं माँगता। बस... कोई किसी के भीतर ठहर जाता है, बिना दरवाज़ा खटखटाए।

"तू अब कहीं नहीं है, फिर भी हर जगह तू ही है।"

"तू कभी मेरी नहीं थी,

लेकिन तेरे जाने के बाद,

कुछ भी मेरा नहीं रहा।"

अब समाज क्या पूछेगा? वो पूछेगा —

"क्या रिश्ता था?"

"क्या कभी साथ थे?"

"क्या शादी हुई?"

“अब क्यों याद आती है?”

और मैं सिर्फ मुस्कुराऊँगा क्योंकि इन सवालों के जवाब किसी रिश्ते में नहीं होते, बस उस अधूरी साँस में होते हैं, जो तेरे बिछड़ने के बाद ली जाती है।

अब मेरी कहानी तुझसे नहीं है, अब मेरी ज़िंदगी तुझसे बनी है। तेरे नाम की दुनिया अब कोई दुनिया नहीं बल्कि वो अब मेरी रूह बन गई है।

मैं जी चुका हूँ तुझे

तेरे बिना,

तेरे साथ,

तेरे अंदर।

और अब,

तू कहीं भी नहीं है…

तू हर उस जगह है,

जहाँ मैं अब भी साँस लेता हूँ।